UNIVERSAL
LIBRARY

OU_178938

UNIVERSAL
LIBRARY

OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY
Call No. H83·1/M67H Accession No. GH·1583
Author मित्रा, एल० एस०
Title हमारा साथी रूस / १९४५
This book should be returned on or before the date last marked below.

हमारा साथी रूस

वर्तमान महायुद्ध में सोवियट-रूस के सैनिकों व नागरिकों के
अपूर्व बलिदान, शौर्य्य, साहस, वीरता
और त्याग की सच्ची कथाएँ

संपादक
एल० एस० मिश्र, बी० ए०

प्रकाशक
हिन्दुस्तानी बुकडिपो, लखनऊ

प्रथम संस्करण] १९४५ [मूल्य ३)

प्रकाशक
पं० विष्णुनारायण भार्गव
अध्यक्ष—हिन्दुस्तानी बुकडिपो,
लखनऊ

इस पुस्तक में प्रकाशित सारे चित्र हमें भारत-सरकार के 'सूचना व ब्राडकास्टिंग' विभाग के अधिकारियों की कृपा से प्राप्त हुए हैं जिनके लिए हम उक्त विभाग के प्रति कृतज्ञता-प्रकाशन करना अपना कर्तव्य समझते हैं।

—अध्यक्ष,
हिन्दुस्तानी बुकडिपो, लखनऊ

मुद्रक
पं० विष्णुनारायण भार्गव
हिन्दुस्तानी आर्ट कॉटेज,
लखनऊ

हमारा साथी—रूस

हिटलर और उसके नाज़ी दल का ख़ात्मा अब सिर्फ चंद दिनों की बात रह गई है। दुनिया के पर्दे से 'फ़ैसिज़्म' का नामोनिशान मिटा देने के लिये इत्तिहादी ताक़तें अपनी पूरी कोशिश से लगी हुई हैं और उन्होंने ज़बरदस्त कामयाबी हासिल की हैं। नाज़ियों की ज़ुल्माना हुकूमत से योरप को आज़ाद करने का बीड़ा उठाने के बाद से अब तक चंद सालों के अन्दर, इत्तिहादियों ने जिस दिलेरी के साथ जानोमाल की क़ुरबानी दी है उसकी मिसाल क़यामत तक तवारीख़ के पन्नों में मिलना दुश्वार रहेगी। फ्रांस, इटली, यूनान, बेल्जियम, ज़ेकोस्लोवाकिया वग़ैरह योरप के कितने ही छोटे-बड़े मुल्क ब्रिटेन, अमेरिका और रूस की शामिलाना कोशिश से आज़ाद हो चुके हैं।

जब जर्मनी ने रूस पर हमला किया, उस वक़्त रूस को लड़ाई का सामान, हवाई जहाज़, तोपें, टैंक वग़ैरा ज़्यादा से ज़्यादा तादाद में पहुँचाने की ज़रूरत हुई। दोस्ती का क़ौल देकर अमेरिका और ब्रिटेन ने हत्तुलइमकान रूस को मदद पहुँचाई। इतना ही नहीं, बल्कि अपनी फ़ौज के आला अफ़सरों को उन्होंने रूस भेजकर, रूसी फ़ौज को लड़ाई के नये से नये फ़न भी सिखलाने का माक़ूल इन्तज़ाम किया। इस इमदाद से फ़ायदा उठाकर रूसियों ने स्टालिनग्राड के घेरे में ज़बरदस्त बहादुरी दिखाकर जर्मनों को पीछे हटाने में कामयाबी हासिल की। यह मानना पड़ता है कि ब्रिटेन और अमेरिका की उस इमदाद से रूसियों का पाया मज़बूत होता गया और अपनी जानिब से वे दुश्मनों का मुक़ाबिला करने को तैयार होते गये।

रूस ने भी दोस्ती का हक़ अदा करने में कोई कोरकसर बाक़ी नहीं रखी। वहाँ के आला अफ़सरान कई दफ़ा ब्रिटेन और अमेरिका के अफ़सरान से सलाह मशविरे के लिए मिले और सबने शामिल कोशिश करने की तजवीज़ बनाई जिस पर अमल किया गया। एक दूसरे से कंधे से कंधा भिड़ाकर लड़नेवाले इत्तिहादी सिपाही लगातार फ़तहयाबी हासिल करते गये और उन्होंने नाज़ियों के पंजों से योरोप के कितने ही छोटे-मोटे मुल्कों को आज़ादी दिलाई।

हमारे साथी रूस ने मौजूदा जंग में नाज़ियों के किस क़दर ज़ुल्म बर्दास्त किए और हिम्मत न हारते हुए बराबर सामने डटकर उनका मुक़ाबिला किया, इसकी मिसालें हमारे सामने हैं। इत्तिहादी ताक़तों में रूस ने अपनी खास जगह बना ली है और यह आज के दिन योरोप से नाज़ियों का खात्मा करने पर उसी तौर से तुला हुआ है जिस तौर से ब्रिटेन और अमेरिका।

दुनिया की सभी छोटी-बड़ी ताकतें रूस की तरफ़ आँखें किये हुए मौजूदा लड़ाई की रफ़्तार देख रही हैं। सोवियट फौजें अपने मुल्क से जर्मनों को खदेड़ती हुई अब उनके ही इलाक़े में उनका खात्मा करने के लिए घुस पड़ी हैं। उनकी मंज़िल है—बर्लिन—जर्मनी की वह राजधानी जहाँ से हिटलर ने एक रोज़ दुनिया की सारी ताक़तों को मिटा देने की तजवीज़ का एलान किया था—एलान ही नहीं किया था बल्कि क़दम भी उठाया था। और बर्लिन के बाद क्या रूस का क़दम आगे नहीं बढ़ेगा? सोवियट सिपाहियों के दिलों में इन्तक़ाम की आग भड़क रही है जिसकी सारी ज़िम्मेदारी जर्मनों पर है। जर्मनों ने दुनिया की सभी ताक़तों का खात्मा करके अपनी हुकूमत फैलाने का सुनहला ख्वाब देखा था मगर वह ख्वाब मिट चुका है। हिटलर और उसके हिमायती सभी आज यह बात अच्छी तरह समझ चुके हैं कि रूस के क़दम रोकने की कोशिश कामयाब नहीं हो सकती। सोवियट का बच्चा-

बच्चा आज नाज़ी जर्मनों का नामोनिशान मिटा देने की क़सम खा चुका है। अब देर नहीं है। रूस जीतेगा और ज़रूर जीतेगा। इत्तिहादी ताक़तों का मुक़ाबला करनेवाले जर्मनों की तादाद दिनों दिन घटती जा रही है। उनके मुल्क के कोने-कोने में तबाही और बर्बादी के नज़्ज़ारे दिखाई दे रहे हैं। लड़ाई की मुसीबतें बढ़ते-बढ़ते अपनी आख़िरी हद तक पहुँच चुकी हैं। जर्मनी के बड़े-बड़े शहर नेस्तनाबूद हो गये हैं। वहाँ के बाशिन्दे, औरत, मर्द, बूढ़े-बच्चे लाखों की तादाद में बेघरबार होकर पनाह लेने की जगह तलाश करते फिरते हैं। क्या उन्हें पनाह मिल सकेगी? सोवियट-फ़ौजों से लोहा लेने की ताक़त आज जर्मनों में बाक़ी नहीं है। वे लड़ रहे हैं मगर टूटे हुए दिल से, पस्तहिम्मत होकर, वे जानते हैं कि यह लड़ाई उन्होंने ही ख़ुद बख़ुद मोल ली है—हिटलर और उसके नाज़ी दल की बातों पर एतक़ार लाकर उन्होने दूसरों को अपना ग़ुलाम बनाने की कोशिश की थी जिसका अंजाम आज उनकी आँखों के सामने है। उन्हें अब कोई रास्ता नहीं दिखाई देता—जैसी करनी वैसी भरनी!

सोवियट रूस की मौजूदा रफ़्तार इतनी ख़ौफ़नाक कैसे बन गई? जर्मनों के ख़िलाफ़ जिहाद का झंडा उठाकर सोवियट सिपाही क़यामत की आँधी के मानिन्द योरोप को रौंदते हुए बर्लिन की तरफ़ इस तेज़ी से क्यों बढ़े चले जा रहे हैं? नाज़ी जर्मनों की हस्ती रूए ज़मीं से मिटा देने का अहद उन्होंने क्यों कर लिया है? इन सवालों का जवाब पाने के लिये हमें मौजूदा जंगे-अज़ीम की शुरुआत का नक़्शा देखना पड़ेगा। अपनी ताक़त बढ़ाकर दूसरी क़ौमों को अपनी ग़ुलामी करने के लिए मजबूर करने के इरादे से जर्मनो ने योरोप के दीगर मुल्कों पर हमला किया और उनपर क़ब्ज़ा भी कर लिया। फ़तहयाबी से उनका दिल बढ़ा हुआ था मगर रूस की लड़ाई में शुरू की जीत उनको बड़ी मँहगी पड़ी। फिर भी वे बढ़ते हुये स्टैलिनग्राड और मास्को तक पहुँच

गए। रास्ते के सारे इलाकों को उन्होंने रौंद डाला, गाँव के गाँव जला डाले, औरतों की इज्जत लूटी, छोटे-छोटे बच्चों को संगीनों का निशाना बनाया! उन बेगुनाहों के खून से रूस की जमीन लाल हो उठी! जर्मन सिपाही हैवानों की तरह जुल्म करने लगे। मज़हब, ईमान, इंसानियत और तहजीब सब कुछ भूल कर जीत के नशे में चूर वे रूसियों पर मनमाना जुल्म करते गये। मगर जब वतन के शहीदों के खून से इन्तकाम की आवाज़ उठने लगी तब उसे रूस के बच्चे-बच्चे ने सुना। औरतें, मर्द, बूढ़े बच्चे सब इन्तक़ाम लेने के लिये निकल पड़े! 'जर्मनों की हस्ती मिटा दो!" यही स्टैलिन ने किया। उसकी आवाज़ पर सोवियट कौम मर मिटने के लिये तैयार होगई। रूसियों ने लुक-छिप कर जहाँ भी जर्मन मिले, उनको मारना शुरू कर दिया। उधर स्टैलिनग्राड का मोर्चा भी उखड़ गया। मास्को पहुँचने का हिटलर का ख्वाब हवा में उड़ गया। रूसी फौजें डटकर दुश्मनों का सामना करने लगीं। इत्तिहादी ताकतों ने उनको लड़ाई का सामान भेजना शुरू कर दिया। नतीजा यह हुआ कि जर्मनों के पैर उखड़ने लगे और वे पीछे हटने को मजबूर होगए। सोवियट फौजें एक के बाद एक, अपना इलाका जर्मनों के पंजों से आजाद कराती गईं और उनको पीछे खदेड़ती हुई सरहद तक ले गईं। रूस, इतने खूनखराबे के बाद फिर अपने खोये हुये इलाकों को हासिल कर सका। मगर स्टैलिन ने जो हुक्म दिया था पूरा करने के लिये सोवियट सूरमा सरहद पार करके आगे बढ़े। जर्मनों की हस्ती मिटा दो!" यही आवाज़ उनके वतन की जमीन के ज़र्रे-ज़र्रे से निकल रही थी। उनके दिलों में भी इन्तक़ाम की आग थी, वे जर्मनों से बदला लेना चाहते थे—उन जुल्मों का जो जर्मनों ने उन पर किये थे!

सोवियट फौजों की रफ़्तार के आगे योरप की ज़मीन थर्रा उठी! रूस की लाल फौज के नाम से जर्मनों के दिल काँप उठे। उनको पीछे

हटाते हुए रूसी सिपाही बढ़ते चले। उनके हर एक क़दम पर आज़ादी की गूँज थी, उनके झंडे के नीचे अमनोअमान का एलान था। नतीजा यह हुआ कि वह ताकतें जो जर्मनों का साथ दे रहीं थीं, उनसे नाता तोड़ने को मजबूर हो गईं। रूस की फतह का रास्ता खुल गया और आज दिन वह बर्लिन को फतेह करने को तुला हुआ है। हिटलर की नाज़ी हुकूमत का दबदबा अब क़ायम नहीं रह सकता। मशरिक में रूसी फौजें और मग़रिब व जनूब में इत्तिहादी फौजें जर्मनी की सरहदों को तोड़कर दाख़िल हो गई हैं। जर्मनों की क़िस्मत का फैसला अनकरीब है। बर्लिन आज चारों तरफ से घिर गया है।

दुनिया की तवारीख को उठाकर देखिये, यही पता चलता है कि ज़ालिम की हुकूमत ज़्यादा दिन नहीं टिकती। गुनाह का बदला गुनाह से ही मिलता है। ठीक यही मिसाल हिटलर और नाज़ियों की है। जिस मक़सद को पूरा करने के इरादे से उसने रूस पर हमला किया था, वही मक़सद आज उसको नेस्तनाबूद करने का बायस बन गया है। जुल्म को मज़हब का जामा पहिनाकर उसने नाज़ियों को दुनिया में इन्क़िलाब पैदा करने के लिये तैयार किया था लेकिन वह इन्क़िलाब आज दूसरी ही शक्ल में हिटलर के सामने आ रहा है। आज उसकी सबसे बड़ी बेचैनी है रूस! वही रूस जिसे उसने एक दिन समूचा निगल जाने की सोची थी मगर वह लुक़मा निहायत खौफ़नाक साबित हुआ जिसके पीछे अकेले हिटलर को ही नहीं बल्कि नाजी क़ौम को भी अपनी हस्ती मिट जाने का खतरा मालूम होने लगा है।

इसकी वजह क्या है? क्या आपने इस पर ग़ौर किया है? उन्नीसवीं सदी में नेपोलियन ने जब रूस पर हमला करने में मुँहकी खाई, तब उसने अपनी डायरी में लिखा था—

"यह एक बुरी कोशिश है, मैं हर दफ़ा रूसियों को हरा देता हूँ मगर उससे नतीजा कुछ नहीं निकलता।" —नेपोलियन बोनापार्ट

और पिछली सन् १९१४ की जंग-अज़ीम में जर्मनी के सबसे बड़े मुन्तज़िम व सिपहसालार जेनरल वान हिन्डेनवर्ग ने भी लिखा—

"मैं मास्को तक पहुँच सकता था, मुमकिन था कि और आगे भी बढ़ जाता .....मगर रूस इतना बड़ा है कि वह बड़ी से बड़ी फौज को निगल सकता है। रूस के कोई दिल ही नहीं है जिसे चूर किया जा सके।"

—जेनरल वान हिन्डेनवर्ग

दुनियाँ की इन दोनों बहुत बड़ी हस्तियों के जज़्बात रूस के बारे में हासिल किये गये तजुर्बात का इज़हार हैं। इनसे साफ ज़ाहिर होता है कि रूस की ताकत कितनी है और दुनिया के वार सहने की कूवत उसमें किस कदर है। हिटलर ने वाकई अपनी ज़िन्दगी में सबसे बड़ी ग़लती की जो रूस के खिलाफ़ जंग छेड़ी। उसी जंग का नतीजा आज उसे देखना पड़ रहा है।

रूस और जर्मनी की जंग छिड़ने के कुछ हफ़्ते पहले इंगलैन्ड और अमेरिका के कुछ अफसरान का कहना था कि "जर्मन फौजें रूस में इस तरह दाखिल हो जायेंगी जैसे कि मक्खन में छुरी!" लड़ाई की शुरुआत से लेकर स्टैलिनग्राड के मोर्चे तक उनका कहना सही उतरा मगर रूस को पाँसा पलटते देर न लगी। हारा हुआ रूस नई ताकत से जीतने लगा और जर्मनी को हारते हुए इस बुरी तरह पीछे हटना पड़ा कि आज दिन वह रूस से बचने की कोई सूरत नहीं देख पाता। रूस ने अपनी कामयाबी से जंग का नक्शा ही बदल दिया है। हालाँकि इस जंग में लाखों रूसियों की जानें गईं, उनके शहर, गाँव, कारखाने और फ़ैक्टरियाँ धूल में मिल गईं, उनके यहाँ के दरिया खून से लाल हो उठे जिनमें सड़ी हुई लाशें महीनों तैरती पाई गईं, क़हत और बीमारियों से इलाके के इलाके उजड़ गये और जर्मनों ने, जहाँ-जहाँ उनके कदम पड़े, ज़बर्दस्त तबाही और बर्बादी फैलाई मगर रूस को दुश्मन दबा न सका क्योंकि रूस के साथ ब्रिटेन और अमेरिका की ताकतों से भी उसे लोहा लेना पड़ा।

इस ज़ुल्म का नतीजा यही हुआ कि रूसियों में मुक़ाबिला करने का नया इरादा, नया जोश और नई ताक़त पैदा हो गई। अपने वतन की ज़मीन को बचाने के लिये वहाँ के बच्चे-बच्चे ने कमर कस ली। वहाँ के १७ करोड़ बाशिन्दे दुश्मनों से इन्तक़ाम लेने को तैयार हो गये।

आगे के सफ़ों में हम जागे हुए रूस का वह नक़्शा पेश करेंगे कि वहाँ के औरत, मर्द, बूढ़े और बच्चे किस तैयारी के साथ दुश्मन का सामना करते रहे और वह कौन सी ताकत है जिसने उन्हें इन्तक़ाम के लिए उकसाकर, दिलेरी, जवाँमर्दी, जाँफ़रोशी और क़ुर्बानी का सबक पढ़ाया। हमलावर जालिमों की हस्ती मिटा देने को तैयार रूसवाले कितने मजबूत हैं, उनके इन्तज़ामात—मुल्की व फ़ौजी—किस दर्जे को पहुँच चुके हैं, वे क्या चाहते हैं, इन्हीं सब बातों का तज़किरा आप आगे पढ़िये, और हमारे साथी रूस की बहादुरी के कारनामों पर ताज्जुब कीजिये।

विषय-सूची

रूस के छापामार लड़के—

गुलाम का बदला १
मातमी जलसा ७
मोर्चे की दीवाल ११
देश के लिए १५
प्राणों का प्यार २०
रहनुमाई २४
अपना-पराया ३१
नसीब की बात ३५
ज़िम्मेदारी ३६
सौंपा हुआ काम ४४

रूसी जनता के सिपाही—

वतनपरस्त शुरा ५४
बहादुर लड़की लिज़ा ६५
क़ौमी शहीद ज़ोया ८०
तीन दिन ८५
छापामार की डायरी से ९३
बुढ़ऊ काका ९६
छापामारों के जत्थे में ९९

आज़ादी की जंग में सोवियट स्त्रियाँ—

एक बुढ़िया १०७
कप्तान वेराक्राइलोवा १११



स्टैलिनग्राड का मोर्चा (१)

हवाई हमले के बाद शहर की औरतें पनाह की जगहों से निकलकर यह तबाही का नज़ारा देख रही हैं।



स्टैलिनग्राड का मोर्चा (२)

गलियों और सड़कों पर भी रूसी सिपाही जर्मनों के छक्के छुड़ा रहे हैं।

आज़ादी की लड़ाई में सोवियट रिआया और लाल-फ़ौज

[सोवियट रिआया ने आज़ादी की लड़ाई में शामिल होकर किस तौर से अपने देश के सिपाहियों को मदद पहुँचाई और दुश्मनों का सामना किया। इसकी कई मिसालें हम आगे पेश करेंगे। लाल-फ़ौज के सिपाहियों की बहादुरी का नतीजा कामयाबी की हद तक कभी न पहुँचता अगर रिआया के लोग उनका साथ न देते। अकेले और पूरी जमात में, सभी तरह से, रूस के गाँवों और शहरों के रहनेवाले, जर्मनों को मार भगाने में वतन के सिपाहियों का हाथ बँटाते रहे और इसी इरादे को पूरा करने में अपनी ज़िन्दगी की बाज़ी लगाते रहे। मर्द-औरत, बूढ़े-बच्चे, सभी के दिलों में जर्मनों की तरफ़ से नफ़रत और दग़ा घर कर चुकी थी। उनके ज़ुल्मों के शिकार बनकर उन बेगुनाह रूसियों ने बड़ी तकलीफ़ों और तबाही का सामना किया था मगर धीरज और हिम्मत की उनमें कमी न थी।

इन्तक़ाम—बदला, जर्मनों का नाश—यही पुकार सोवियट-जनता में उठने लगी। आज़ादी के लिए मर मिटने का पक्का इरादा करके गाँव-गाँव से, घर-घर से लोग निकल पड़े और उन्होंने दुश्मनों को जहाँ पाया, वहीं ख़त्म किया।

लाल-फ़ौज के काम को इस तरह उन्होंने आसान बना दिया। दुनिया की तवारीख़ में उन वतन-परस्तों के नाम सुनहले हरफ़ों में लिखे जायेंगे। इतना ही नहीं बल्कि दुनिया की सारी ताक़तें जिन्होंने सोवियट-रूस की आज़ादी की जंग में क़ुर्बानी दी है, कभी इस बात को क्या भूल सकेंगी कि योरप के कितने ही मुल्कों को नाज़ियों के पंजे से रिहा कराने में रूस ने कितना हिस्सा लिया है। और जर्मनी—वह जर्मनी जिसने हिटलर को बेशुमार अख़्तियारात सौंपकर उसे मग़रूर बना दिया था, आज हिटलर के ही हाथों तबाही को पहुँचा दिया गया है। जर्मनी की रियाया इत्तिहादी ताक़तों का अन्दाज़ा लगा चुकी है। उसकी आँखों पर हिटलर ने जो ख़ौफ़ का परदा डाल रक्खा था, वह आज हट चुका है। आज का जर्मनी लड़ाई से ऊब-कर—उसी लड़ाई से जिसके लिये वह कुछ साल पहले उतावला था—नजात और अमन चाहता है। यही सोचने की बात है कि ज़ुल्म की हद पर पहुँच कर नाज़ी-दल ने आज इत्तिहादी ताक़तों से लड़ाई बन्द करने की अपील की है मगर क्या ऐसा करने का ख़याल उनके मन में उस वक़्त भी आया था जब वे रूस की ज़मीन पर क़ब्ज़ा करते हुए स्टैलिनग्राड तक बढ़ गये थे और लाखों रूसियों को उन्होंने बेदर्दी से मौत के घाट उतार दिया था?

मगर हिम्मत न हारनेवाले रूस के वतनपरस्त बाशिन्दे, लाखों तकलीफ़ें और ज़ुल्म सहने के बावजूद भी, नया जोश लेकर नाज़ियों का मुक़ाबिला करते हुए उनकी राजधानी तक पहुँच गये। वही रूस जिसको बेख़बर समझकर हिटलर ने हमला कर दिया था और जिसे नेस्तनाबूद कर देने का वह मुकम्मिल इरादा कर चुका था, उसके लिये बेहद ख़तरनाक साबित हुआ। इत्तिहादी ताक़तों की इमदाद से रूस का हौसला दिनों दिन बढ़ता रहा है और नाज़ियों की हस्ती मिटा देने में वह ज़बरदस्त हिस्सा ले रहा है।]

गुलाम का बदला

ज़ेकोस्लोवाक के इलाक़े में एक गाँव था। जर्मन सेनायें उसमें घुस पड़ीं। उन्होंने गाँव पर क़ब्ज़ा कर लिया और पड़ाव डाल दिया, मानों वह उनके बाप की मिल्कियत थी। अफ़सर लोग, जो बड़े गंदे थे और जिनके कपड़ों में चीलर घुसे हुये थे, गाँव के अच्छे-अच्छे मकानों में जा डटे। उन्होंने नहाने की सोची और पानी गरम करवाने का इंतिज़ाम करने लगे। जर्मन-सिपाही गाँववालों के घरों में घुस जाते और पानी गरम करने के बर्तन जो भी मिलते, उठा ले जाते। मिहालोविच उस गाँव का भिश्ती था। जर्मनों ने उसकी मशक और पानी भरने की गाड़ी देखकर उसे पहिचान लिया था। उन्होंने उसे पानी लाने का काम सौंपा।

मिहालोविच चुपचाप अपनी गाड़ी लेकर तालाब की तरफ़ चला। वह गाँववालों से आँख मिलाने की हिम्मत न कर सका क्योंकि उसे शर्म आ रही थी कि वह दुश्मनों का काम करने को मज़बूर हो रहा है। अगर वह इनकार कर देता तो जर्मन उसे जान से मार डालते। दिन भर का काम ख़त्म करके रात को जब वह घर लौटा तो उसकी बीवी मुँह फुलाकर बैठ गई और उससे बात तक न की। थोड़ी देर बाद जब वह अपना गुस्सा बर्दाश्त न कर सकी तो उसने मिहालोविच से कहा—"इस घर से निकल जाओ! जर्मनों के गुलाम के लिये यहाँ जगह नहीं है। उठाओ अपना बोरिया बिस्तर और चलते-फिरते नज़र आओ। मैं तुम्हारी शक्ल देखना नहीं चाहती। इससे तुम मर गये होते तो अच्छा होता।"

ऐसी अपमान-जनक बातें सुनकर मिहालोविच सिर से पैर तक मारे

शर्म से पानी-पानी हो गया, मगर फिर अपने को सँभाल कर उसने जवाब दिया—"मैं क्या करूँ, बाल्टी और मशक को छोड़कर मेरे पास कोई हथियार भी तो नहीं है ? मेरा बस चलता तो उन बदमाशों को पानी के बजाय तेज़ाब से नहला देता।"

उसकी बीवी फिर भी न मानी। जर्मनों की गुलामी करनेवाले अपने पति को छोड़कर वह खुद ही घर से निकल गई और एक पड़ोसी के यहाँ जाकर पनाह ली। मिहालोविच अपना काम करता रहा। उसके साथी गाँववाले ऐसी नफ़रत की नज़र से उसे देखने लगे मानो वह गली का कुत्ता हो। उसके सलाम का जवाब तक कोई न देता। गाँव के छोकरे उसे मुँह चिढ़ाते और औरतें उसे थूकती थीं।

मिहालोविच तालाब की बरफ़ तोड़कर जब पानी भरने के लिये अपनी बालटी छेद में डालता तो उसका दिल दुखी हो जाता और बार-बार उसके मन में यही बात आती कि क्यों न वह पानी में कूदकर अपनी जान दे दे, जिसमें उसे ऐसी शर्मिंदगी से एकबारगी ही छुटकारा मिल जाये।

जर्मन-सिपाही गाँव के मुखिया फ़ैदेयेव को फाँसी देने की कोशिश कर रहे थे मगर तरकीब कारगर न होती थी। उधर से मिहालोविच अपनी गाड़ी लिये हुये आ निकला। जर्मनों ने उसे गाड़ी तार के खंभे से लगाकर खड़ी करने को कहा फिर उन्होंने मुखिया को गाड़ी के ऊपर चढ़ाया। जिस समय जर्मन-सिपाही फाँसी की रस्सी में फंदा डालने लगे, फ़ैदेयेव ने मिहालोविच की तरफ़ घूमकर कहा—

"बूढ़े कमबख्त ! अच्छी तरह देख ले कि किस तरीक़े से मैं अपनी जान दे रहा हूँ। बाद में लोगों को बतलाना ताकि वे जान देना सीख लें।" इतना कहकर उसने पास खड़े हुये जर्मन की आँख में ऐसी ठोकर मारी कि वह मुँह के बल बरफ़ पर गिर पड़ा जो वहाँ की पथरीली ज़मीन पर जमी हुई थी।

मुखिया के अंतिम शब्द मिहालोविच ने गाँववालों को सुनाये और उसकी मौत का सारा हाल बयान किया मगर औरों की कौन कहे, फ़ैदेयेव की माँ तक ने उससे बोलने से इनकार कर दिया। गुस्से में वह कहने लगी—"मेरे बहादुर बेटे ने किस तौर से अपनी क़ुर्बानी दी, इसका बयान, तेरी कमबख्त ज़ुबान से नहीं होना चाहिये। जा यहाँ से कलमुँहे !"

और तब दुखी मन से मिहालोविच अपनी सूनी झोपड़ी में लौट आया। वह अपनी ज़िन्दगी से ऊब उठा था। लोगों के ताने सुनते-सुनते उसका कलेजा पक गया था। उसने क में पड़ी हुई रस्सी उठाई और गले में फाँसो लगाने चला। यकायक उसके मन में आया—"खुदकुशी करने से मैं दुनिया के जंजाल से छुटकारा ज़रूर पा जाऊँगा मगर इससे फ़ायदा क्या निकलेगा ? छोड़ दूँ यह खयाल। जर्मनों के ही हाथों मरूँगा।"

उसने रस्सी फेंक दी और उसी वक्त से वह गाँव में घूम-फिरकर जर्मनों से रार बढ़ाने लगा। सिपाही लोग उसकी बातों का ख़याल न करते, उसे नशे में समझकर केवल हँस देते थे। सिर्फ़ एक दफ़ा उसके मुँह पर उन्होंने दो-चार चाँटे रसीद किये और मामला वहीं खत्म हो गया।

एक दिन मिहालोविच जब पानी लेकर लौटा तो उसने देखा कि जर्मनों ने अपने चीलर भरे गंदे कपड़े झोपड़ी के छप्पर पर सूखने को फैला रखे हैं। उसने इधर-उधर नज़र डाली कि कहीं कोई देख तो नहीं रहा है। फिर उसने कपड़ों पर बालटी भर-भर कर खूब पानी उँड़ेला और ज़ोर-ज़ोर से जूतों की खटपट करता हुआ वापस लौटा मगर किसी ने उसकी हरकत पर ध्यान नहीं दिया।

मिहालोविच पानी की गाड़ी पर बैठकर, उन खाइयों की तरफ़ जा निकला, जहाँ जर्मनों की तोपें लगी हुई थीं। उसने एक तरकीब सोची।

ठंड के मारे जर्मन फ़ौजी लबादों में लिपटे हुये खाइयों में चुपचाप पड़े थे। संतरी लोग भी हवा की तरफ पीठ किये सिकुड़े खड़े थे, भिश्ती को जाते देखकर उन्होंने ध्यान नहीं दिया क्योंकि वे उसे अकसर वक़्त-बे वक़्त पानी भर कर ले जाते देखा करते थे।

मिहालोविच अपनी गाड़ी पर खड़ा हो टंकी से पानी भरकर तोपों के मुँह में उँड़ेलने लगा। इस तरह उसने सारी तोपों में खूब पानी भर दिया।

लौटते वक़्त गाँव में उसे गोलियाँ चलने की आवाज़ सुनाई पड़ी, उसने अपने बूढ़े टट्टू को चाबुक लगाया और गाड़ी दौड़ाता हुआ उस मकान के पास पहुँचा, जिसमें बड़ा अफ़सर रहता था। जर्मन लोग, जो भी कपड़ा हाथ आया पहिनकर मकान से बाहर भागने लगे। उनकी वर्दियाँ छप्पर के ऊपर बरफ़ से ढकी हुई पड़ी थीं। मिहालोविच ने आव देखा न ताव, बालटी भर-भर कर भागते हुये जर्मनों पर पानी फेंकने लगा। दो आदमी तो सिर से पाँव तक भीग गये मगर तीसरा ज़मीन पर लेट गया और उसने मिहालोविच पर गोली चला दी। वह गिर पड़ा।

उसी वक़्त रूस के छापामार सिपाहियों ने हमला किया—जर्मन तोपें बेकार हो गई थीं क्योंकि उनकी नलियों में ठोस बरफ़ जम गई थी। रूसी फ़ौज़ें गाँव में घुस पड़ीं। जब सिपाहियों ने मिहालोविच को ज़मीन से उठाया तो वह धीमी आवाज़ में बोला—"मेरी चिंता न करो, मेरा खून गर्म है, पानी नहीं है जो जल्दी से ठंडा हो जाये।"

वे लोग उसे झोपड़ी में उठा ले गये। अस्पताल के आदमियों ने उसकी मरहम-पट्टी की। इतने में उसकी बूढ़ी बीवी भागती हुई आई क्योंकि उसे सारी घटना मालूम हो चुकी थी। वह रोने-पीटने लगी। अस्पताल के आदमी ने उसे दिलासा देते हुये कहा—"तुम्हारा भाग्यवान् पति बड़े जीवट का आदमी है। जर्मनों की एक मामूली

गोली से वह नहीं मर सकता। और अब, जो काम उसने कर दिखाया है उससे तो वह अमर हो चुका।"

थोड़ी देर बाद, फ़ैदेयेव की माँ भी वहाँ पहुँची और उसने बूढ़े मिहालोविच को कुछ मिठाइयाँ खाने को दीं। उसके सिरहाने बैठकर वह अपने पिछले कहे हुये लानत के अलफ़ाज़ों के लिये पछताने लगी।

मिहालोविच को साँस लेने में तकलीफ़ हो रही थी, वह ज़्यादा बोल न सका और तकिये के सहारे उसने एक ओर करवट लेने की कोशिश की। उसके जीवन की अंतिम घड़ी आ पहुँची थी। फ़ैदेयेव की माँ इस दृश्य को न देख सकी और रो पड़ी।

मातमी जलसा

मिन्स्क के इलाक़े में उस छोटे से क़स्बे पर जर्मनों ने सहसा अधिकार कर लिया था। कई दिन बाद, अचानक क़स्बे के उस मकान की खिड़की से जिसमें जर्मन कमांडेंट अफ़सर ठहरा हुआ था, भारी-मशीनगनें गरज-गरज कर दूर पर गोलियाँ बरसा रही थीं। पहली बाढ़ ने घोड़ों का सफ़ाया करके नीचे की सड़क पर आनेवालों को ठहर जाने को मजबूर किया। दूसरी बाढ़ दाहिनी तरफ़ घूम पड़ी और उसने काफ़ी दूर तक खबर ली।

अपनी 'स्ले' (बर्फ़ पर चलनेवाली बिना पहियों की गाड़ी) में दुबके हुए गोर्किन ने निशाना ताक कर एक हथगोला उस मकान की खिड़की की तरफ़ फेंका, 'स्ले' की तह में छुपे हुए निकोलोव ने अपने हाथ की छोटी मशीनगन से गोलियाँ बरसाना शुरू कर दिया। शिमोन ने बाएँ हाथ में अच्छी तरह रास लपेटकर दाहिने हाथ की तीन उँगलियाँ मुँह में डालकर सीटी बजाई। इतने में उनकी 'स्ले' एक लोहे के खम्भे से भिड़कर सहसा रुक गई और झटके से तीनों आदमी बाहर आ गिरे। गाड़ी के टुकड़ों को खींचते हुए घोड़े भाग खड़े हुए।

एक नाली में छुपा हुआ शिमोन जर्मनों की गोलियों से बचने की कोशिश कर रहा था। गोर्किन उछलकर सामने के एक मकान की तरफ़ दौड़ा मगर फ़ौरन लौटकर वह मुड़ा और उसने एक हथगोला उस मकान के अंदर फेंक दिया, जिसमें से मशीनगनें चल रही थीं। ज़ोर का धड़ाका हुआ, जिसके झोंके से मकान की खिड़कियों के काँच और चौखटे टुकड़े-टुकड़े होकर नीचे सड़क पर जा गिरे। ज़मीन से उठते हुए गोर्किन ज़ोर से चिल्लाया—

"उधर—उस तरफ़ साथियो !"

मौक़ा पाकर निकोलोव तेज़ी से दौड़कर उस धुएँ से भरे हुए मकान में घुस पड़ा। उसकी पीठ पर एक टामी-गन लदी हुई थी। हाथों में कारतूसों की दो पेटियाँ वह मज़बूती से पकड़े हुए था। पीछे-पीछे शिमोन भी मकान में दाखिल हो गया। निकोलोव ने जाते ही फ़ौरन् अपनी मशीनगन खिड़की पर जमा दी और छुपे हुए जर्मनों पर गोलियाँ चलाने लगा।

कमरे के अँधेरे कोने में एक जर्मन अफ़सर लड़खड़ाता हुआ उठने की कोशिश कर रहा था। शिमोन ने पास पड़ी हुई लकड़ी की एक संदूक़ उस पर दे मारी। जर्मन अफ़सर का सिर फट गया और वह जहाँ का तहाँ ढेर हो गया। संदूक़ के टूटने पर उसमें से तमाम गोलियाँ निकलकर फ़र्श पर बिखर गईं।

निकोलोव के चारों तरफ़ दुश्मनों की गोलियाँ आकर गिर रही थीं, गर्द-गुब्बार से उसका चेहरा ढक गया। उसने आस्तीन के छोर से मुँह पोंछ डाला और अपनी मशीनगन घुमा-घुमाकर दुश्मनों का सफ़ाया करने लगा। गोर्किन भी तब तक वहीं आ पहुँचा। उसने मेज़ घसीटकर दीवाल से लगा दी और उस पर एक स्टूल रख चढ़ गया। छत में लगे झरोखे से वह अपनी टामीगन चलाने लगा।

सामने की इमारत की छत पर जर्मनों ने एक भारी तोप ले जाकर लगा दी। उसके गोले बड़ी भीषणता के साथ उस छोटे से मकान को हानि पहुँचाने लगे। इतने में घबड़ाया हुआ एक जर्मन अफ़सर आ पहुँचा और उसने अपने आदमियों को तोप चलाने से रोक दिया।

मामला यह था कि इस क़स्बे में जर्मनों की जो फ़ौजी टुकड़ी पड़ी हुई थी वह मुख्य-सेना के पीछे लौटने के मार्ग की रक्षा के विचार से ही छोड़ दी गई थी। इधर जो लड़ाई छिड़ गई, उससे उनके उद्देश्य में बाधा पहुँचने की सम्भावना थी अतएव उनके लिए वह समय बहादुरी

दिखाने का न था बल्कि आत्म-रक्षा का था। तोप का चलना बंद हो जाने से सन्नाटा छा गया। गोर्किन ने घबराकर कहा—

"दोस्तो! मामला क्या है? हम लोग यहाँ मौजूद हैं, इतने पर भी जर्मनों के कानों पर जूँ रेंगनी बन्द है?"

निफ़ोलोव अपनी मशीनगन में कारतूस लगाते हुए कहने लगा—

"याद है? हमने कमांडर से क्या वायदा किया था? हमने विश्वास दिलाया था कि हम दुश्मनों के बीच में गड़बड़ी पैदा कर देंगे? कहाँ गई वह गड़बड़ी?" इतना कहकर वह फिर अपना मुँह पोंछने लगा।

शिमोन बोला—"अजी गड़बड़ी मचेगी और फिर मचेगी।"

इतना कहकर वह थैले में से सुरंगें बिछानेवाला सामान लेकर ज़ीने के ऊपर की कोठरी की तरफ़ चला।

ज़रा देर बाद, वह इमारत बार-बार हिलने लगी मानो भूचाल के झोंके लग रहे हों। बात यह थी कि शिमोन अपने कील-काँटे को ठीक जमाकर छत के छेद से निशाना लगा रहा था, जर्मनों की उन खाइयों की तरफ़ जो क़स्बे के चारों तरफ़ बनी हुई थीं। ऐसे मौक़े पर जर्मन भी चुपचाप न बैठ सके। उन्होंने इस मकान की तरफ़ ताक-ताककर गोलियाँ बरसाना शुरू कर दिया। दीवाल के सहारे दुबका हुआ गोर्किन खुशी से चिल्ला उठा—

"अब ठीक है, जर्मनों को खासा मज़ा मिल रहा है!"

ज़ीने के ऊपर वाली कोठरी से भूरे रँग का धुँआ उठ रहा था। उधर—लड़ाई के दृश्य से कुछ दूर पर—इटालियन के कमांडर ने घूमकर अपने सैनिकों से कहा—"सुन रहे हो यह गोलियों का शब्द? हमारे आदमी लड़ रहे हैं, इस समय जो हज़ारों गोलियाँ उन पर बरस रहीं हैं वही हम पर बरसती होतीं अगर हम इस युक्ति से काम न लेते। मगर, उनको मौत के मुँह में झोंक देने के बाद हम चुपचाप नहीं बैठ सकते। चलो, आगे बढ़ो!"

बटालियन कमांडर लड़ाई में डरना तो जानता ही न था। उसके आगे बढ़ते ही सैनिकों ने साथ दिया। उन्होंने हमला कर दिया। काले धुयें के गहरे बादल २४ नम्बर के मकान से उठ रहे थे। और उसकी छत से लाल-लाल लपटें निकलकर आसमान की ओर बढ़ रही थीं। शिमोन ने जलते हुये कपड़ों को झाड़ते हुये धुयें के ग़ुबार से निकलकर अपनी मशीनगन एक खिड़की पर जमा दी।

इतने में जर्मनों ने उस मकान पर एकदम धावा बोल दिया। एक हथगोले ने मकान के दरवाज़े को तोड़कर चकनाचूर कर डाला, जिसके पल्ले का एक टुकड़ा शिमोन के ऊपर आ गिरा। उसके झोंके से शिमोन नाक के बल ज़मीन पर गिर पड़ा। धुयें से भरे हुये कमरे में टटोलता हुआ वह अपनी टामीगन उठा लाया और उसका कुंदा पेट से लगाकर दरवाज़े की ओर ताबड़तोड़ गोलियाँ चलाने लगा। जर्मन लोगों ने लाचार होकर एक छोटी तोप से काम लेना शुरू किया। गोर्किन ने यह देखकर किंचित अभिमान से कहा—

"कहो भाई! अब तो गड़बड़ी फैल रही है न? तोप की नौबत आ पहुँची!"

निकोलोव बोला—"हाँ, हाँ, अब तो ऐसा जान पड़ता है कि हमने अपना वादा सवा सोलह आने पूरा कर दिया।"

शिमोन अपनी घायल टाँगों की ओर देखते हुये धीमी आवाज़ में कहने लगा—

"वाक़या है, काम तो इस खूबी के साथ पूरा हुआ कि मेरा यहाँ से जाने का जी ही नहीं करता।"

इतने में टूटी ईंटों के टुकड़े दीवारों से उचटकर, कमरे के अंदर गिरने लगे, क्योंकि तोप के गोले अपना काम कर रहे थे। रूसी बटालियन क़स्बे में घुस पड़ी और मामूली लड़ाई के बाद उसे जर्मनों से छीन लिया।

बटालियन कमान्डर अपने सैनिकों को २४ नम्बर के मकान के खँड़हरों के सामने खड़ा करके अपने उन तीन साथियों की मृत्यु पर मातमी तक़रीर कर रहा था, जिन्होंने बड़ी वीरता से जर्मनों का सामना करके देश के लिये अपना बलिदान दिया था।

यह मातमी-जल्सा ख़त्म होने के क़रीब था कि उसी वक़्त एक शक्ल धुयें से काले कपड़े पहिने हुये मकान के खँडहरों से पेट के बल रेंगती बाहर आती दिखाई पड़ी। उसके पीछे वैसी ही दूसरी शक्ल निकली। दोनों ने मिलकर एक तीसरी शक्ल को सहारा देकर खड़ा किया, और तीनों व्यक्ति पास आकर सैनिकों के साथ खड़े हो गये। उनमें से एक ने भर्राई हुई आवाज़ में पूछा—"माजरा क्या है ?"

एक सैनिक ने जब सारी घटना बयान की, तब शिमोन बोला—"जर्मन लोग हमें दफ़ना नहीं सके और आप फ़ातिहा पढ़ने भी आ पहुँचे ?" इतना कहकर वह रिपोर्ट देने के लिये कमान्डर के पास जाने लगा। गोर्किन ने उसे रोककर कहा—"रिपोर्ट बाद में देना, ज़रा अपना मज़ेदार फ़ातिहा तो सुन लो।" कमान्डर की तक़रीर जारी थी। बाद में जब कमान्डर ने तीनों बहादुरों को जीता जागता-सामने खड़ा पाया, तो बड़ी मज़ेदार दिल्लगी हुई। कई रोज़ तक फ़ातिहे का क़िस्सा कहते-सुनते क़हक़हे लगते रहे।

मोर्चे की दीवाल

रूसी सफ़रमैना पल्टन के कमांडर सिलोकिन ने अपनी मोटर-साइकिल रोक ली। उसकी पीठ पर कीचड़ और मिट्टी के बेशुमार धब्बे दिखाई दे रहे थे, ऐसा जान पड़ता था, मानो वह कहीं दूर से चला आ रहा है। उसके माथे पर पड़ी हुई परेशानी की लकीरें ज़ाहिर थीं। उसने मेजर के सामने पहुँचकर सूचना दी—

"मोर्चे की दीवालें खड़ी करने का काम पूरा नहीं हो सकता। जो हद आपने बताई थी, उस पर दुश्मनों का क़ब्ज़ा है।"

मेजर ने पूछा—"किसने क़ब्ज़ा किया ? कब किया ?"

पल-भर बाद, मेजर को अपनी मोटर-साइकिल के पीछे बिठाये हुये सिलोकिन तेज़ी के साथ उसी तरफ़ वापस जा रहा था जिधर से वह आया था।

ठिकाने पर दोनों पहुँच गये। मेजर ने सवाल किया—

"यहाँ पर किसकी तैनाती है ?"

"मेरी !"

सादे लिबास में एक लंबा चौड़ा मज़बूत आदमी मेजर के सामने आकर खड़ा हो गया। वह सिर पर फ़ेल्ट टोपी लगाये हुये था और बिना बाँह की रुईदार जाकेट पहिने था। उसकी कमर पेटी से एक कपड़े का झोला लटक रहा था जिसमें शायद भड़कनेवाले मसाले से भरी हुई दो बोतलें पड़ी थीं। मेजर ने पूछा—

"तुम कौन हो ?"

"सिमानषिच ! बटन के कारखाने का डाइरेक्टर।"

"मैं तुम्हारा ओहदा जानना चाहता हूँ ?"

मुस्कुराते हुये सेमानविच ने जवाब दिया—"मेरा यही ओहदा है, जब हमें पता चला कि जर्मन हमारी बस्ती के बिल्कुल पास आ गये हैं तो हमने यह तै किया कि कारखाने को बंद करना ठीक नहीं। हमारे नौकर-चाकर सब नौजवान और तंदुरुस्त हैं और दिल लगाकर काम करते हैं। हमने बिल्कुल ठीक जगह ढूँढ़ ली और पूरी तैयारी के साथ आ जमे। अब हम लोग दुश्मनों का इस्तक़बाल करने को तैयार हैं और उनकी राह देखते हैं। हमारे दल की कमेटी का सेक्रेटरी ही हमारा अफ़सर है।"

इतना कहकर सेमानविच आगे बढ़ा और मेजर से बोला—"मेहरबानी करके ज़रा चारों तरफ़ घूम फिरकर देख लीजिये। हमारे काम का मुआयना ही हो जाये। आप तजुर्बेकार हैं इसलिये आपका फ़ैसला हमारे लिये मुआफ़िक़ होगा।"

मेजर ने सेमानविच पर तीखी नज़र डाली और कुछ अनमना-सा, उसके साथ चल पड़ा। इधर-उधर जो नज़्ज़ारा उसे दिखाई पड़ा उससे मेजर के ख्यालात सेमानविच की तरफ़ से बिल्कुल बदल गये और वह मन ही मन उसकी होशियारी की तारीफ़ करने लगा।

मोर्चे की दीवाल खड़ी करने का काम फ़ौजी निगाह से पूरा और माक़ूल ही नहीं बल्कि उसमें इरादे व मक़सद कामयाबी का भी काफ़ी ख्याल रक्खा गया था। छिपने की खाइयों में धातु की बनी शहतीरें लगाई गई थीं। उस ओर इशारा करते हुये सेमानविच ने कहा—

"यह इमारती सामान कारखाने की एक नई दूकान के लिये तैयार हुआ था।"

सभी खाइयों में टेलीफोन के तार लगे हुये थे।

सेमानविच कुछ घमंड से कह उठा—

"कारख़ाने की पावर-स्टेशन की शाख़ लड़ाई की हालतों में बहुत अच्छा काम करती है।"

"तुम्हारी कितनी टोलियाँ हैं?" मेजर ने पूछा।

"देखिये गिनकर बताता हूँ। खराद की दूकान, एक हुई—बढ़ई-खाना, दो—बड़े इंजीनियर की टोली, तीन—दफ़्तर, चार—और—आमदरफ्त का मोहकमा।"

इसके बाद सेमानविच मेजर को जंगल के सिरे पर ले गया, यहाँ पर लोहे की बख्तरदार मोटर-गाड़ियाँ इस्तेमाल के लिये तैयार खड़ी थीं मगर उनको बड़ी होशियारी से छिपाकर रक्खा गया था। सेमानविच की खाई के पास लौटकर मेजर ने उसके काम और सूझ की बड़ी तारीफ़ की लेकिन आखिर में अफ़सोस ज़ाहिर करते हुये कहा—

"यह सब कुछ करने के बावजूद भी, तुम्हें अपनी यह जगह पूरे अख्त्यारात के साथ छोड़ देनी पड़ेगी। हमें अपने अफ़सरों का हुक्म है कि इसी जगह हम पड़ाव डालें।"

मेजर की बात सुनकर सेमानविच की मुस्कुराहट ग़ायब हो गई उसका मुँह लटक गया। बड़ी हिम्मत से वह बोला—"मेरी समझ में नहीं आता कि ऐसा क्यों? गुस्ताख़ी माफ़ हो, मैं तो यही कहूँगा कि यह जब्र है, हम अपनी जगह किसी को कभी न देंगे।"

मेजर यह बात सुनकर ख़ामोश हो गया।

सेमानविच उठकर टहलने लगा। शायद कुछ सोच रहा था। थोड़ी देर बाद वह मेजर के पास आकर बोला—"मेजर! क्या हम लोग किसी सूरत से मिल-जुलकर साथ नहीं रह सकते? मेरी तजवीज़ है कि हम लोग पड़ोसी बन जायें। हम आपकी मदद करते रहेंगे और दुश्मन के टैंकों को रोकने के लिये सीमेंट के खंभे तैयार करके देंगे, मेरा खयाल है, इस सौदे में हम दोनों का फ़ायदा है।"

मेजर ख़ामोश रहा मगर उसकी नज़र वहाँ बनी हुई मज़बूत

खाइयों और क़िले-बंदी की दीवालों पर बराबर लगी रही, जिनको इस छोटे से बटन के कारख़ाने के लोगों ने बड़ी मेहनत से तैयार किया था। वह बिना एक लफ़्ज़ भी कहे उठ खड़ा हुआ और सेमानविच की ओर अपना हाथ बढ़ाते हुये बोला—

"मिलाओ हाथ, हम लोग पड़ोसी ही बनेंगे और कंधे से कंधा भिड़ाकर दुश्मन का सामना करेंगे।"

वहाँ से कुछ दूर चलकर मेजर ने सिलोकिन को हुक्म दिया, मोर्चे के बाजुओं को और मज़बूत कर दिया जाये ताकि तोपें लगाने के ठिकाने मुक़र्रर हो जायें। फिर उसने घूमकर सेमानविच से कहा—

"अपनी टोलियों के कमांडरों को ठीक चार बजे शाम को तैयार होने का हुक्म दो!"

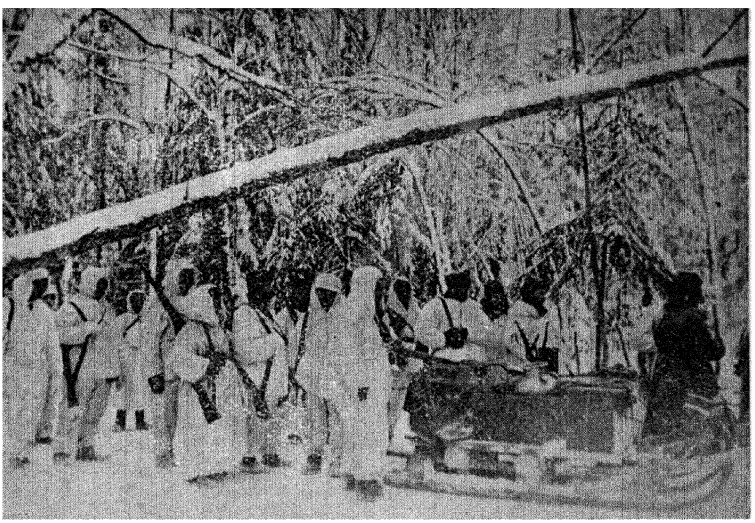
ख़ुश होकर सेमानविच ने जवाब दिया—

"बहुत अच्छा, कारख़ाने के अफ़सर लोग ठीक चार बजे शाम को तैयार मिलेंगे आपको!"

और अगले ही दिन सैकड़ों लोगों ने मिलकर ईसपात से भी मज़बूत दीवाल खड़ी करके जर्मनों के इरादे पर पानी फेर दिया।



रूस के छापामार उड़ाकों के एक जत्थे का कमाण्डर अपने आदमियों को दुश्मन की पुश्त पर हमला करने का तरीका बतला रहा है।



छापामारों की टोली दुश्मन के पड़ाव के पीछे जंगल में डटी हुई मौका देख रही है।



नाज़ियों के ज़ुल्म का एक और नमूना

कर्च के इलाके में कैमिलोव ख़ान्दान के कुछ लोग अपने एक भाई की लाश देख रहे हैं, जिसे औरों के साथ जर्मनों ने गोली मार दी !



गुस्तारोव (बीच में) के मातहत वे सोवियट उड़ाके, जिन्होंने एक हफ्ते के अन्दर जर्मनों के १५ हवाई जहाज़ बरबाद कर दिये।

देश के लिए

पश्चिमी रूस के एक सूबे में, एक छोटा-सा क़स्बा—अँधेरी रात—बर्फ़ीली आँधियाँ तेज़ी से चल रही थीं! जर्मन-सिपाही क़स्बे के बाशिंदों को उनके घरों से बाहर खदेड़ रहे थे। आँधियों के झोंकों के साथ उड़-उड़कर आते हुए बर्फ़ के टुकड़ों से बाहर की ज़मीन सफ़ेद होती जा रही थी। जाड़े की उस भयानक अँधेरी रात में एक दूसरे को पहिचानना दुश्वार हो रहा था।

अभागे रूसी शहरियों की वह क़तार सड़क पर मवेशियों की तरह जर्मनों से हाँकी जा रही थी, उनके हाथ एक दूसरे से मिलाकर एक ही रस्सी से बँधे हुए थे। अगर कोई अभागा रूसी ठोकर खाकर गिरता तो पूरी क़तार को रस्सी का झटका सहना पड़ता था।

कराहती हुई उस इन्सानों की जमात की पीठों पर जर्मन सिपाहियों की राइफ़लों के कुन्दे बीच-बीच बरस जाते थे। लड़खड़ाते, गिरते, मार खाते, सम्हल-सम्हलकर उठते और पाँव घसीटते हुए वे फिर चलने लग जाते। कलाइयों में कसकर बँधी हुई रस्सी मांस में घुसती चली जा रही थी जिसकी तकलीफ़ और दर्द से कितनों को मूर्छा आ रही थी। क़िस्मत की गर्दिश और ज़ुल्म से रौंदे हुए उन इंसानों की तकलीफ़ों का ठिकाना न था।

रास्ते के दोनों ओर जर्मन-सिपाहियों से भरी हुई मोटरें और फ़ौजी लारियाँ चल रही थीं। जर्मन अफ़सरों के हुक्म देने की कर्कश आवाज़ें और गालियाँ आँधी की आवाज़ में मिलकर खो जाती थीं और उन्हें कोई न सुन पाता था।

चक्के के दाँतों में बर्फ़ जम जाने से एक टैंक चलता-चलता रुक गया। सिपाही नीचे उतरकर बर्फ़ काटने लगा। इतने में ही एक गोला पास आकर गिरा। टैंक के ड्राइवर ने लापरवाही से मोटर स्टार्ट कर दी, सिपाही उसी के नीचे कुचलकर ढेर ह गया। उसकी लाश को पीछे छोड़ता हुआ टैंक पुनः सड़क पर भागने लगा।

सर्दी से परेशान, बर्फ़ से ठिठुरते, मौत के डर से घबराये हुए जर्मन सिर पर पैर रखे पश्चिम के इलाक़े में भागे चले जा रहे थे। हर एक को अपनी-अपनी जान की फ़िक्र हो रही थी। तोपों की ख़ौफ़नाक गरज पास आती जाती थी। आसमान की स्याही में एकायक उनके गोलों के फटने की लाल रोशनी दिखाई दे जाती थी। विस्फोट से चारो दिशाएँ काँप रही थीं।

क़यामत जैसी दिखाई पड़नेवाली वह काली-रात जर्मनों के दिलों को ख़ौफ़ज़ादा कर रही थी। बर्फ़ से ढकी सफ़ेद सड़क पर पिछड़ते हुए जर्मन सैनिकों की वे लंबी क़तारें एक काले-काले सोते जैसी जान पड़ती थीं। सबेरा होने लगा—ठहर जाने की कमान सुनाई पड़ी।

ऐसे ख़ौफनाक सफ़र के राहगीर वे इन्सान, जिन्हें सिपाही कहा जा सकता है, जगह-जगह अलाव जलाकर तापने लगे, हालाँकि उन्हें ऐसा करने की सख्त मनादी थी। उस वक्त उन्होंने अपने अफ़सरों का हुक्म मानना ही ठीक समझा और सर्दी से पथराए हुए हाथों की उँगलियाँ आँच के आगे करके बैठ गए। कपड़ों में अड्डा जमाए हुए बेशुमार चीलरों के मारे उठना-बैठना दूभर था। कुछ लोग अपनी गीली वर्दियाँ उतारकर आँच के पास लटकाने लगे। सबके सब उचक्कों जैसे लगते थे। आग के धुँए से उनकी आँखों से आँसू निकल रहे थे। हाथ-पैरों की उँगलियाँ ठंढ से सूज गई थीं और आँच की गरमी उन पर असर नहीं कर रही थी, फिर भी सिपाहियों को आग के पास से उठाने की ताक़त किसी में न थी। वे तापते ही रहे। हालाँकि रूसी फ़ौजें उनका पीछा

कर रही थीं और अपने बचाव की तरकीब सोचना उनको कठिन हो रहा था फिर भी वे तापने का लालच छोड़ न सकते थे। अपने बचाव के ख़याल से ही उन्होंने रास्ते के गाँववालों को क़ैद करके साथ ले लिया था।

औरतें, बच्चे, बूढ़े, जो क़ैदी थे, सभी उस बर्फ़ीली कड़ी ज़मीन को खोदने में जुटे थे। अलाव की ओर पीठ करके बैठा हुआ एक फ़ौजी अफ़सर घुटनों के बीच में 'टामी-गन' दबाए, उनको ग़ौर से देख रहा था। काम में पिछड़नेवाले को मार देने के लिए यह ज़रूरी था कि उस बर्फ़ीली आँधियों के होते हुए भी कोई न कोई बाहर बैठकर उनकी निगरानी करे। वह अफ़सर आँच के पास बैठा गरमा रहा था। उसकी पहली गोली का मतलब था—चेतावनी और दूसरी का—सज़ा!

अभागे रूसी क़ैदी उस वक्त क्या सोच रहे थे? उन पर कैसी बीत रही थी? शायद ग़ुस्से और झुंझलाहट में वे इस बात का पछतावा कर रहे थे कि जर्मनों के आने के पहले अपने-अपने घरों में आग लगा वे मर क्यों न गये! उन हैवानों के हाथों इतनी तक़लीफ़ें झेलने से छुटकारा ही मिल गया होता! या लम्बे सफ़र से थककर उनकी अक़्ल जाती रही होगी और वे जल्द से जल्द मरने की ख्वाहिश करते होंगे! जैसी तकलीफ़ें बर्दाश्त कर रहे थे, क्या उनकी भी कोई हद हो सकती थी? क्या कोई और भी अलफ़ाज़ हो सकते थे जिनका मुक़ाबला उन अलफ़ाज़ों से होता जो उन अभागों के पीले सूखे होठों से निकल रहे थे? या, वे क़ैदी, सोवियट-फ़ौज के रुतबे का ख्याल भूलकर किसी की क़ीमत पर अपनी-अपनी जान की सलामती ख़रीदने के लिए फ़िक्रमंद हो रहे थे? क्या इसके अलावा और किसी तरह का ख़याल उन कमज़ोर औरतों, बच्चों और बूढ़ों में पैदा होना मुमकिन हो सकता था?

खाइयों से काफ़ी दूर पर, जर्मन-सफ़रमैना के सिपाही सुरंगें

बिछाकर बर्फ़ से छेदों को ढँकते जा रहे थे। पेड़ों की टहनियों से झाड़ू का काम लेकर सुरंगों की मौजूदगी को छिपाने की वे कोशिश कर रहे थे। मैदान की ज़मीन में छिपी हुई खौफ़नाक फटनेवाली सुरंगों को छिपा रखनेवाली सफ़ेद बर्फ़ की चादर उदासी से सूर्य्य की ओर ताक रही थी। अचानक हमले से बचने का पूरा इन्तज़ाम करके जर्मनों ने इस भाँति कुछ तसल्ली हासिल की।

शाम होने पर, कँटीले तारों से घिरे एक अहाते में, क़ैदी लोग मवेशियों की तरह हाँक दिए गए। चन्द्रमा अभी भूरे बादलों से अच्छी तरह निकल भी न पाया था कि जंगल के उस पार से मशीनगनें गरज उठीं। साथ ही, मुस्तैदी से छिपती हुई रूसी सैनिकों की एक क़तार जर्मनों के पड़ाव की ओर बढ़ती दिखाई दी। एक के बाद एक, लगातार तोपों के गोले आ-आकर जर्मन-क़तारों में गिरने लगे। क़ैदियों की निगरानी करनेवाले जर्मन-सैनिक, पेट के बल लेटकर खाइयों की ओर खिसकने लगे।

रूसी-क़ैदियों को ज़ाहिर हो गया कि रिहाई का वक़्त दूर नहीं और वे हिम्मत करके अगर भागें तो जंगल में छिपकर जान बचा सकते हैं। जब तक लड़ाई का शोरग़ुल जारी है। फिर, ऐसा ही हुआ, वे भाग चले। अचानक, रूसी-सैनिकों का फ़तह का नारा बुलंद हुआ।

हालाँकि, किसी ने रोका नहीं मगर रूसी-क़ैदियों के पाँव आप ही आप रुक गए। वे बर्फ़ से ढके मैदान की ओर देखने लगे, जिसके नीचे फटनेवाली सुरंगों का जाल जर्मनों ने बिछा रखा था। बिना कुछ सलाह किए वे सबके सब उसी मैदान से होकर भागने लगे। जर्मनों की राइफ़लें गरज उठीं। एक गिरा, दो गिरे, कई गिरे मगर वे भागते ही चले गए। घायल, तड़पते, कराहते, घसिटते वे उस पार जा पहुँचे।

मैदान में छिपी सुरंगें एक-एक करके फटने लगीं। रूसी सैनिक भूखे भेड़ियों की तरह उन्हीं के बीच से कूदते-फाँदते अत्याचारी जर्मनों पर टूट पड़े। संगीनों ने सैकड़ों जर्मनों का काम तमाम कर डाला। आधी रात होने तक सब काम खत्म हो गया।

रूसी सेना के कमांडर ने अपने आदमियों को इकट्ठा किया और उनके साथ, मैदान की ओर मुँह कर अपने सिर की टोपी उतारी। फिर उसने कहा—"साथियो! तुमने अच्छी तरह देख लिया कि हमारे देश के लोग किस तरह अपनी क़ुर्बानी देते हैं? तुम जानते हो कि हमारी माताओं, बहिनों और बुजुर्गों में वतन के लिए कितनी मुहब्बत भरी है? वे दुश्मन को दम-भर की चैन से न बैठने देंगे। मेरे साथियो! मैं जानता हूँ कि बरदाश्त की भी एक हद होती है और बिना दम भर ठहरे लगातार दुश्मन का पीछा करना ग़ैरमुमकिन है मगर मैं ऐसा इसरार तुमसे नहीं करता—उधर देखो—तुम्हारे देश के वे अमर-शहीद ही तुमसे ऐसा इसरार कर रहे हैं! बोलो? हम उन्हें क्या जवाब दें?"

रूसी सैनिकों के सिर इज़्ज़त से झुक गए। उन्होंने वतन के उन शहीदों की पाक रूहों को सिजदा किया और दुश्मनों से बदला लेने का क़ौल याद करते हुए वहाँ से चल पड़े।

प्राणों का प्यार

दुश्मन के एक हवाई अड्डे पर गोला-बारी करते वक्त लेफ़्टीनेंट ज़िमोखिन के दोनों हाथों में ज़बरदस्त चोट आई और उसका चेहरा लोहू लुहान हो गया। बात यह थी कि दुश्मन के हवाई-जहाजों से जंग करते वक्त उनकी गोलियों से उसके हवाई-जहाज़ की खिड़की का काँच टूट गया और उसके टुकड़े ज़िमोखिन पर आ पड़े।

काफ़ी लहू निकल जाने पर सिर्फ़ पैरों के पैडिलों से काम लेता हुआ ज़िमोखिन अपने हवाई-जहाज़ को किसी तरह अड्डे पर वापस लाने में कामयाब हो सका। स्पताल पहुँचते ही उसने डाक्टर से पूछा—

"डाक्टर साहब! बतलाइये, क्या मैं जल्द ही फिर ज़हाज़ पर उड़ने लायक़ हो सकूँगा?"

डाक्टर ने गंभीरता से जवाब दिया—

"मेरी समझ से तुम अब जहाज़ पर उड़ने लायक़ कभी न हो सकोगे, तुम्हारी हालत ही ऐसी नहीं।"

"खैर, देखा जायगा।" ज़िमोखिन ने एक ठंढी साँस लेकर उत्तर दिया। वह सोच में पड़ गया था।

उसी रात को, जब स्पताल के सारे मरीज़ और डाक्टर लोग गहरी नींद में सो रहे थे, ज़िमोखिन ने अपना पट्टियों से बँधा सिर तकिए के नीचे छिपा लिया और सिसक-सिसककर रोने लगा। सबेरे उसको बुखार आ गया। डाक्टर ने थर्मामीटर हिलाते हुए उसे आगाह किया—

"अगर इसी तरह तुम फ़िक्र करते रहे तो मेरी पेशीनगोई सच साबित होगी!"

बाहर, सफ़ेद बर्फ़ की फुहारें पड़ रही थीं। हवा में कुहासा छा रहा था। सचमुच, उस वक्त का मौसम हवाई-जहाज़ लेकर उड़ने का न था।.....हम लोग, एक खाई में अलाव जलाकर तापते हुए बैठे ज़िमोखिन के बारे में बात-चीत कर रहे थे।

बैदानोव, पास ही बैठा हुआ जहाज़ का एक पुर्ज़ा ठीक कर रहा था। आँच की लपटों की ओर झुककर उसने अफ़सोस से कहा—"ज़िमोखिन ने मुझसे पढ़ने के लिए कोई किताब माँगी थी। पर कहाँ से लाऊँ ऐसी किताब जिसे पढ़कर उसे खुशी हो, बेचारा बड़ा दुःखी रहता है।"

हवाई-अड्डे के कुतुबखाने में थोड़ी-सी किताबें रहती थीं। मैं उन्हीं में टटोलने लगा मगर ज़रूरत की चीज़ न मिली। इसी वक्त हमारा कम्मीसर, ऐंड्रोविच खाई में दाखिल हुआ। पयाल बिछी एक बेंच पर बैठते हुए उसने मुझसे सवाल किया—"क्या ढूँढ़ रहे हो?" मेरा जवाब सुनकर उसने कहा—"ज़िन्दगी की हर एक ज़रूरत के मुआफ़िक मुख्तलिफ़ किताबें तैयार नहीं हो सकी हैं। मगर मैंने एक दफ़ा एक मज़मून पढ़ा था कि लेनिन जिस वक़्त बीमार थे और उनके बदन में बेहद दर्द हो रहा था, उस वक्त. उन्होंने भी पढ़ने के लिए कोई किताब माँगी थी। लोगों ने उनको अमेरिकन लेखक, जैक लन्डन की लिखी किताबें लाकर दी थीं। लेनिन महोदय ने उनमें से एक कहानी खास तौर से पसंद की जिसकी सुर्खी है—"प्राणों का प्यार", कहीं से वही किताब ढूँढ़ निकालो!"

"मगर इन पथरीले पठारों में वह पुस्तक कहाँ से मिल सकती है?"

"ज़रूरत के वक्त ज़रूरी चीज़ को हासिल करना मुमकिन होता है?"

ऐंड्रोविच ने सिगरेट बुझा दी, लोहे की टोपी सिर पर रखी और चल पड़ा। उस वक्त. भी बर्फ़ की सफ़ेद आँधियाँ पूरी तेजी से

हहराती हुई बाहर चल रही थीं, कड़ाके का जाड़ा पड़ रहा था। मशीन के पुर्ज़े को उलटता-पलटता हुआ बैदानोव बोला—"ज़िमोखिन बड़ा दिलेर और मुस्तैद है मगर बेचारे को घायल होने के बाद ही छुट्टी लेनी पड़ रही है!" फिर उसने घूमकर मेरी ओर देखा और पूछा—"ऐंड्रोविच का कहना है कि जिसे मरने की ख्वाहिश न हो वह दुश्मन को मारकर मौत पर फ़तह पा सकता है!"

अचानक टेलीफ़ोन की घंटी बज उठी। बैदानोव ने रिसीवर उठाकर कान से लगाया—बात-चीत होने लगी

"अरे, ऐंड्रोविच हवाई-जहाज़ लेकर उड़ गया—ऐसे मौसम में? बर्फ़ के तूफ़ान में? नहीं, वह अभी तक वापस नहीं लौटा। ज्योंही वापस आया त्योंही आपको ख़बर दूँगा कमांडर साहब!"

रिसीवर को फिर टेलीफ़ोन पर रखकर बैदानोव ने कहा—"ऐंड्रोविच! उफ़—कितना बहादुर है! ऐसे मौसम में उड़ने की क्या सूझी उसे? उसे दिखाई क्या देता होगा?"

अलाव में जलती हुई लकड़ियाँ चटख रही थीं। बैदानोव ने पुर्ज़े की मरम्मत का काम ख़त्म कर दिया था। खाई में चारों ओर सन्नाटा और उदासी छा रही थी। कई बार कमांडर ने टेलीफ़ोन करके ऐंड्रोविच की वापसी की ख़बर जाननी चाही।

आख़िरकार, हवाई-जहाज़ के मोटर की भनभनाहट कुछ फ़ासले पर सुनाई पड़ी। बैदानोव ने भेड़ के रोएँदार चमड़े की जाकेट उठाई और उसे कंधे पर डालकर बाहर निकलते हुए जोर से चिल्लाकर मुझसे बोला—"ऐंड्रोविच वापस आ गया है! उसे हवाई-अड्डा दिखाई नहीं देता, वह तलाश कर रहा है! अरे—ज़रा सुनो तो? कैसी बेवकूफ़ी का काम किया है तुमने!" वह हवाई-अड्डे के मैदान की ओर भाग चला।

लगभग बीस मिनट बाद—बैदानोव और ऐंड्रोविच साथ-साथ

वापस लौटे। अपनी जाकेट पर से बर्फ़ के टुकड़े झाड़ते हुए कुछ घबराहट से ऐंड्रोविच की ओर नज़र डालते हुए बैदानोव ने उससे पूछा—

"किस झंझट में फँस गये थे जनाब ?"

"कुछ नहीं जी, तेल की टंकी फट गई। सारा तेल चारों तरफ़ फैल गया—टूटे हुए बाँध की तरह !"

लापरवाही से इतना कहकर जेबों में हाथ डाले ऐंड्रोविच टहलने लगा। ज़रा देर बाद, उसने जेब से तेल में भीगा हुआ छपे काग़जों का एक मूठा बरामद किया। उसे देखकर उसका चेहरा उतर गया, आवाज़ काँपने लगी और वह बोला—"लाइब्रेरियन गहरी नींद में सो रहा था। मैंने जाकर उसे जगाया। वह चिढ़कर मुझे गालियाँ देता रहा। बड़ी मुश्किल से उसे खींच-खींचकर बाहर लाया। तब किताब मिली मगर इस हादसे ने तो सब चौपट कर दिया। मेहनत बेकार गई !"

ऐंड्रोविच ने किताब के पन्नों पर लगा हुआ तेल पोंछने की कोशिश की मगर काग़ज़ फटकर उसके हाथ में आ गया। जब उसने देखा कि उसकी कोशिश बेकार गई तो वह टेलीफ़ोन पर जाकर मौसम बतानेवाले क्लर्क से बोला—"बैदानोव ! मुझे एक घंटे बाद जगा देना !" इतना कहकर वह बेंच पर लम्बा हो गया और झपकी लेने लगा। बैदानोव ने पूछा—

"क्या तुम्हारा इरादा फिर जहाज़ लेकर उड़ने का है ?"

"क्यों ? उड़ने में क्या हर्ज है ? तुमने फ़िक्र क्यों की ? क्या तुम समझते हो सारे क़स्बे में इस किताब की एक ही जिल्द है ?" ऐंड्रोविच ने कुछ झुँझलाकर जवाब दिया और कम्बल तानकर सो गया !

खाँई में फिर सन्नाटा छा गया। अलाव की आग धीरे-धीरे ठंढी हो चली थी।

रहनुमाई

टोवोरस्क के इलाक़े को सरहद पर, दुश्मन का पता लगानेवाले सैनिक-दल का कमांडर उसे साथ लिए हुए झोपड़ी में दाखिल हुआ जहाँ सब लोग सो रहे थे। कमांडर बड़ी नर्मी से उससे बोला—"यहीं बैठो और इंतज़ार करो। हमारे काम की ख़ासियत ऐसी है कि हम दिन में सोते हैं और रात में गश्त लगाते हैं।" उसे सलाम करके वह बाहर चला गया।

शायद, एक लेफ़्टीनेंट का उस मामूली लड़की को सलाम करना ज़रूरी था क्योंकि उस बेचारी की पोशाक पर किसी बड़े ओहदे के तमग़े या फ़ीते नहीं लगे थे, मगर उस मौक़े ख़ास पर लेफ़्टीनेंट को अपने ओहदे की बनिस्बत इन्सानियत के ओहदे का ज़्यादा ख़याल था।

लड़की बेंच पर बैठकर खिड़की से बाहर देखने लगी। पाला पड़ने की वजह से खिड़की में लगे काँच पर फूल-पत्तियों की अजीब शक्लें बन गई थीं। फ़र्श पर लेटे हुए कई आदमी नींद में ख़र्राटे ले रहे थे। उन्होंने अपने मोटे लबादे ओढ़ रखे थे क्योंकि ठंढ काफ़ी पड़ रही थी।

एक घंटा बीत गया, दो, फिर तीन! वह अभी तक बेंच पर बैठी हुई थी। बीच-बीच मे उसे ज़ोर की खाँसी उठती थी, जिससे उसका सारा बदन काँप उठता था। वह नीचे झुककर, मुँह पर हाथ रखकर, खाँसी के रोकने की कोशिश करती रहती थी। उसकी साँस जब ज़ोर से चलती तो वह दीवाल के सहारे पीठ लगा देती, उसके फूले हुए होठ

काँप जाते और तकलीफ़ के आँसू उसकी खुली हुई बड़ी-बड़ी आँखों से निकल पड़ते जिनको वह अपनी कुर्ती के आस्तीन से पोंछ डालती। बिल्कुल अँधेरा हो गया था, उसी वक्त लेफ़्टीनेंट ने फिर झोपड़ी में क़दम रखे। अँधेरे में टटोलते हुए उसने पूछा—"तुम यहीं हो न ?"

"जी हाँ, लेफ़्टीनेंट साहब ?" लड़की ने धीरे से जवाब दिया।

लेफ़्टीनेंट नीचे झुककर सोते हुए आदमियों को उठाने लगा। इसके बाद वह अपने मातहत अफ़सर शेरीकोव को अलग ले गया और धीरे-धीरे उसे कुछ हिदायतें देता रहा, फिर ज़ोर से बोला—"अफ़सरों का हुक्म है कि इस हमले की ज़िम्मेदारी तुम्हें सौंपी जाय और काम का ब्योरा इस लड़की को !" इतना कहकर उसने बेंच पर बैठी हुई लड़की की ओर इशारा किया।

शेरीकोव बोला—"समझ गया, ठीक है।"

फिर वह लोग अँधेरे में ही खाना खाने बैठ गए। लड़की ने धीरे-धीरे थोड़ा-सा खाना खाया। एक-एक लुक़मा निगलने में उसे बड़ी तकलीफ़ हो रही थी। उसके आगे बचा हुआ खाना देखकर शेरीकोव ने कहा—"फ़िक्र न करो, शिकारियों का पहला उसूल है कि डटकर भोजन कर लो तब बाहर निकलो।"

लड़की ने धीरे से जवाब दिया—"मैं फ़िक्रमंद नहीं हूँ !"

सब लोगों ने चुपचाप जल्दी से तैयारी की। लड़की को गले में सावधानी से ऊनी मफ़लर लपेटते देखकर शेरीकोव बोला—

"सरदी से डर लगता है तुम्हें ? क्यों ?"

लड़की ने जवाब न दिया। सब लोग झोपड़ी से बाहर निकले। आसमान में चाँद मुस्करा रहा था। बर्फ़ चाँदी की तरह झलक रही थी। चाँद को दो-चार गालियाँ सुनाकर शेरीकोव ने घूमकर उस लड़की से कहा—"मैं सामने की क़तार तक रहनुमाई करूँगा, उसके आगे तुम्हें रास्ता दिखाना होगा। क्या तुम इतना कर सकोगी ?"

लड़की चुपचाप उस दल के दो सैनिकों के बीच में चली जा रही थी जिनके नाम वैसिली और इवानविच थे। यकायक राह के एक पत्थर से उसने ठोकर खाई। इवानविच ने आगे बढ़कर उसे सहारा दिया और बोला—"मेरा हाथ पकड़ लो।"

लड़की ठहर गई और डरकर बोली—"किसलिए?" इवानविच डर गया। वैसिली ने कहा—"इसमें नुक़सान ही क्या है? जहाँ काकेशस के इलाक़े में मैं रहता हूँ, वहाँ औरतें आम-तौर पर मर्दों का हाथ पकड़कर चलती हैं।"

लड़की ने कुछ गम्भीर होकर जवाब दिया—

"लेकिन लड़ाई के मोर्चे पर मर्दों को सोच-समझकर बर्ताव करना चाहिए। मौक़े और जगह का ख़्याल रखना ज़रूरी होता है।"

वैसिली बात-चीत बढ़ाना ही चाहता था कि इतने में शेरीकोव ने डाँटकर कहा—"बदमाशो! पीछे लौटो, भूल गये कि किस काम पर जा रहे हो?"

आधी-रात के क़रीब वे लोग एक जंगल में घुसे, इसके बाद वह लड़की रास्ता बतलाती हुई आगे-आगे चली। अपने कोट की जेबों में हाथ डाले वह धीरे-धीरे आगे बढ़ रही थी। चलते-चलते सब लोग एक गहरे पहाड़ी खड्ड के किनारे पहुँचे। उसे आगे बढ़कर एक ढालू रास्ते से पार किया फिर उनको एक गाँव दिखाई पड़ा। सामने के मैदान से होकर होशियारी से पैर रखते हुए वे उधर ही चले, रास्ते के किनारे बर्फ़ के ढेर लग रहे थे। बड़ी फिसलन थी। रास्ते-भर लड़की को खाँसी आती रही, ठिकाने पर पहुँचकर, शेरीकोव ने लड़की से कहा—

"उधर, छप्पर के नीचे तुम छिप जाओ और हमारा इंतज़ार करो, अब हम अपना काम बख़ूबी कर लेंगे।"

"अच्छी बात है।" धीमी आवाज़ में लड़की ने जवाब दिया।

वे लोग अलग-अलग चल पड़े, वापसी पर एक जगह मिलने का वक़्त उन्होंने मुक़र्रर कर लिया था। काफ़ी वक़्त बीत गया। सबसे पहले वापस आनेवाला शख़्स इवानविच था, उसी के पीछे-पीछे वैसिली भी लौटा। वैसिली कुछ ग़ुस्से में जान पड़ता था। उसने आते ही कहा--

"इवान ! इस लड़की की लाई हुई ख़बर तो बड़े काम की साबित हुई ! इसने सचमुच कमाल कर दिया।"

इसी वक़्त शेरीकोव भी आ पहुँचा। उसने भी लड़की के काम की तारीफ़ की। इसके बाद वे सब एक दूसरे ही रास्ते से चल पड़े। लड़की आगे-आगे चलती हुई उनकी रहनुमाई कर रही थी। उसे बराबर खाँसी आती रही जिसे रोकने के लिए वह मुँह पर रूमाल लगा लेती थी।

आगे चलकर, ज़िमोवो नामक गाँव के क़रीब रास्ते में उन्हें कुछ रूसी-गाँववाले दिखाई दिये जो जर्मनों के एक फ़ौजी-दस्ते की निगरानी में, सड़क पर से बर्फ़ हटाने का काम कर रहे थे। कम्मलों और मोटे लबादों में लिपटे हुए जर्मन-अफ़सरान उन बेचारों से बेगार कराते वक़्त उनकी सख़्ती से निगरानी कर रहे थे। सड़क के किनारे, एक गढ़े में, एक औरत अपने घुटने पेट से लगाए पड़ी हुई थी। उसके चेहरे पर ख़ून जम रहा था।

वैसिली यह देखकर दाँत पीसने लगा और कमर में बँधे हथगोले खोलने लगा। इवानविच ने कंधे पर लटकती हुई टामी-गन उतारकर हाथ में ले ली। शेरीकोव की भारी आवाज़ अचानक गूँज उठी—

"ख़बरदार ! जब तक इशारा न मिले, गोली मत चलाना !"

अचानक लड़की ने ज़ोर से कहा—

"इशारा मिलने की उम्मीद मत रखिये !"

"ऐसा क्यों ? क्या कोई इशारा न मिलेगा ?"

"ऐसा ही समझ लीजिए। क्या जान-बूझकर गले में फाँसी लगाना है ?"

शेरोकोव ने ताज्जुब से लड़की की तरफ़ देखा—फिर उसने सवाल किया—

"तुम्हारा मतलब है कि इसमें ख़तरा है ? ये गिनती के १२ जर्मन ! अरे हम तो यकायक हमला करके होश ठिकाने लगा देंगे !"

"मेरा कहना यह है कि आप लोग ऐसी कोई भी हरकत नहीं करने पायेंगे !"

"बस, रहने दो—"

इतना कहकर शेरीकोव ने घूमकर अपनी टोली को तैयार होने का हुक्म दिया। सबने हथियार सम्हाल लिए, लड़की खाँसती हुई बोली—

"मैं आपकी इस हरकत पर एतराज़ करती हूँ। ऐसा करने से हम अपने इरादे में कामयाबी न पा सकेंगे, यह भी सोचा है आपने ?"

"अलग हट जाओ, हम अपना अच्छा-बुरा ख़ूब समझते हैं !"

शेरीकोव ने अपने आदमियों को आगे बढ़ने का हुक्म दिया। यकायक वह लड़की उनके आगे रास्ता रोककर खड़ी हो गई और बोली

"ख़बरदार ! मैं चिल्ला दूँगी अगर तुमने क़दम आगे बढ़ाए !"

मजबूरी थी। लड़की अगर चिल्ला पड़ती तो दुश्मन सावधान हो जाते। लाचार होकर लड़की को गालियाँ देते हुए वह टोली घूम पड़ी और दूसरे रास्ते से जाने लगी। रास्ता बड़ा ऊबड़-खाबड़ और ख़राब था। चलते-चलते लड़की ने ठोकर खाई और गिर पड़ी मगर किसी ने उसे न उठाया। सबके सब उसकी पिछली हरकत से नाराज़ थे।

दोपहर हो चुकी थी जब वे लोग अपने पड़ाव पर वापस आए। शेरीकोव ने उस लड़की से कहा—"तुम बहुत कमज़ोर हो गई हो,

जाओ, कुछ देर लेट रहो, आराम करना ज़रूरी है तुम्हारे लिए। हम अपनी कार्रवाई की रिपोर्ट तैयार कर लेंगे। रही तुम्हारे काम का शुक्रिया अदा करने की बात, उसे तो हमारा अफ़सर जाने। वही तुमसे निपटेगा।"

लड़की चुपचाप एक कोने में जा लेटी। शेरीकोव ने अपने बड़े अफ़सर के पास सारी रिपोर्ट लिखकर पेश की। बटालियन कमांडर ने उस पर ग़ौर करते हुए सवाल किया—

"ओल्गा कहाँ है ? उसकी तबियत कैसी है ?"

"आपका मतलब उस लड़की से है जिसने हमारे साथ-साथ चलकर रहनुमाई की है ?"

"हाँ वही।"

"अरे वह तो आराम से पड़ी सो रही है। आज तो उसने सारा काम चौपट कर दिया। ऐन मौक़े पर उसका बर्ताव ही बदल गया।"

एक नफ़रत की हँसी-हँसते हुए शेरीकोव ने सारा वाक़या अफ़सर के आगे बयान किया। ताज्जुब की बात तो यह थी कि शेरीकोव जितनी ही नमक-मिर्च लगाकर लड़की की शिकायत करता था उतना ही गुस्सा अफ़सर के चेहरे पर ज़ाहिर होता जाता था ! शेरीकोव का बयान ख़त्म होने पर अफ़सर कुछ न बोला बल्कि चुपचाप उठकर झोपड़े में टहलने लगा। फिर उसने घूमकर कहना शुरू किया—

"जानते हो ओल्गा कौन है ? इसी गाँव में, दो दिन पहले, जर्मनों ने इसे पकड़कर फाँसी पर लटका दिया था। कुछ छापा मार, लड़ाकों ने ऐन मौक़े पर पहुँचकर इसकी जान बचाई। उसके गले पर तुमने रस्सियों के निशान नहीं देखे ? उसे कैसी ज़बरदस्त खाँसी आती है और मुँह से थूक के साथ ख़ून निकलता है, इस बात पर भी तुमने ग़ौर नहीं किया ? और इसी लड़की ने, ऐसी तकलीफ़ और दर्द की हालत में भी तुम्हारी रहनुमाई की। उसका बर्ताव मौक़े के

मुताबिक़ ही था, जिसकी तुम झूठी शिकायत लेकर आए हो। मुमकिन है कि सड़क पर काम करनेवाले रूसियों में उसने अपने किसी सगे-सम्बन्धी या जानकार को पहिचान लिया हो इसीलिए उसने सोचा कि गश्त लगानेवाली टोली का उनसे मिलकर जर्मनों की हरकतों का पता लेना ज़्यादा ज़रूरी है न कि उन थोड़े से जर्मनों की जान लेना। वह बड़ी समझदार लड़की है। उसने जो कुछ किया, ठीक किया। ख़बरदार! अगर आयन्दा किसी ने उसके ख़िलाफ़ ज़ुबान खोली! चले जाओ यहाँ से!"

सब लोग बाहर निकल आए। शेरीकोव का चेहरा पीला पड़ गया। इवानविच के होंठ काँप रहे थे। वैसिली कह रहा था—"चलो, हम उस लड़की से भाँफ़ी माँगें!" इवानविच ने कहा—

"यह ग़लती माफ़ी माँगने से सुधारी नहीं जा सकती।" इवानविच की बात सुनकर शेरीकोव ने एक ठंढी साँस ली और बोला—

"कुछ भी हो, माफ़ी तो माँगनी ही चाहिए। थोड़ी देर बाद हमारी टोली फिर रवाना होगी तब रास्ते में उन जर्मनों से समझेंगे हम।"

इसके बाद वे लोग उधर ही चल पड़े जिधर वह लड़की छोटी-सी झोपड़ी में आराम कर रही थी। उसे सोता पाकर उन लोगों ने सलाह की और जंगल की ओर घूम पड़े। हर एक ने अपने हथियार सम्हाल-कर हाथ में ले लिए थे। यह तय था कि वे उन जर्मनों का ख़ात्मा करने जा रहे हैं जिनको सबेरे रास्ते में उन्होंने देखा था!

अपना-पराया

रात के वक्त चौकोर काले पैराशूट लेकर वे हवाईजहाजों से कूद पड़े थे। उनकी रूयेंदार चमड़े की बनी उड़ाकों की पोशाक के ऊपर सफ़ेद किर्मिच के लम्बे कोट और कनटोप अजीब से दिखाई देते थे। वे सुफ़ेद दस्ताने और सुफेद नमदे के बूट पहिने हुये थे।

अपने पैराशूटों को बर्फ में दफनाकर किसाकोव ने थैलों की तरफ जिनमें सामान रक्खा था, इशारा करते हुये एक साथी से कहा-

"सूरिन आओ कुछ खा पी लें। यह बोझा ही कुछ हल्का हो जाय।" सूरिन ने जवाब दिया—

"किसा! तुम तो मोटे ताजे हो, फिक्र क्यों करते हो? अपने थैले के साथ मेरा थैला भी लादकर ले चलना, तुम्हें भारी न पड़ेगा।"

किसाकोव ने अफसोस की एक साँस ली और सामान के थैलों को कंधे पर लादकर सूरिन के पीछे-पीछे चल पड़ा। बर्फीली आँधियाँ तेज़ी से चल रही थीं।

सूरिन को, जिस रास्ते से जर्मन फौजें पीछे हट रही थीं, उसमें फटनेवाली सुरंगें बिछाने का काम सौंपा गया था और किसाकोव के ज़िम्मे यह काम था कि दुश्मन को तेल और कोयला लादकर पहुँचाने वाली गाड़ियों का सफ़ाया कर दे। बड़े तड़के वे दोनों एक ऐसी जगह पहुँचे जहाँ से सड़क की दो शाखें हो गई थीं। सड़क पर दो लट्ठे गाड़ कर एक साइनबोर्ड टाँग दिया गया था जिस पर जर्मन में लिखा था—"फटनेवाली सुरंगों से होशियार।" सूरिन ने साइनबोर्ड पढ़ा, कुछ देर सोचता रहा, फिर किसाकोव की तरफ़ मुड़कर बोला—

"किसा ! जल्दी से लट्ठों को उखाड़ डालो।"

किसा लट्ठे उखाड़ने लगा। बात की बात में उसने लट्ठों को गिरा दिया। सूरिन ने उन लट्ठों को उस जगह पर लगवा दिया जहाँ सड़क की दो शाखें हो गई थीं। साइनबोर्ड टाँग दिया गया। कसा ने पूछा—"इससे क्या फ़ायदा ? यह क्या दिल्लगी है।" सूरिन ने जवाब दिया—

"किसा ! तुम किसी बात पर बारीक़ी से ग़ौर करना नहीं जानते। इसमें भी मसलहत है।"

"ठीक है, दुनिया में सभी तरह के लोग होते हैं।"

"देखो, इस साइनबोर्ड का मतलब हुआ कि आम सड़क पर सुरंगें बिछी हुई हैं।"

"सो तो है ही।"

"और अगल-बग़ल के दोनों रास्ते ?"

"वे साफ़ हैं।"

"सिर्फ साइनबोर्ड की जगह बदल देने से ही यह तबदीली कैसे आ गई ?"

किसाकोव थोड़ी देर तक सोचता रहा, फिर उसने कहा—"बस समझ गया ! इससे ज़्यादा कुछ पूछने की ज़रूरत नहीं, सलाम !" किसा पच्छिम की तरफ़ चला और सूरिन किनारे की झाड़ियों में घुसकर ग़ायब होगया।

उस रात को आम सड़क पर ज़ोरों के धड़ाके सुनाई पड़े और आग की लम्बी-लम्बी लपटें आसमान की तरफ़ उठती हुई दिखाई दीं। झाड़ियों से काफी दूर पर एक गढ़े में छिपा हुआ सूरिन सारा वाक़या देखता रहा, अगले दिन शाम को किसाकोव वापस आया। सूरिन ने उसके लोहू लुहान चेहरे पर एक नज़र डाली और घबराकर सवाल किया—"ज़्यादा चोट तो नहीं आई ?"

"नहीं, लाओ कुछ खाने को दो, बड़ी भूख लग रही है!" खाते खाते किसाकोव अपनी कहानी सुनाने लगा।

"हाँ, मैं बराबर आगे बढ़ता गया। सामने से एक मोटर साइकिल आती दिखाई दी। मैंने हाथ दिखाकर उसे रोका. रुकते ही उस जर्मन को मैंने नीचे ढकेल दिया और उसकी मोटर साइकिल पर बैठकर तेज़ी से आगे भागा। तब मुझे पेट्रोल की टंकीवाली आठ लारियाँ दिखाई दीं। बस, मेरे पास मशीनगन दाहिनी तरफ थी और हथगोले पेटी में लगे हुये थे। मैंने रफ़्तार तेज़ क और बग़ैर रुके हुये लारियों की उस क़तार पर मशीनगन से खूब गोलियाँ बरसाईं। एक हथगोला भी मैंने लारियों के नीचे फेंक दिया और सपाटे से भाग निकला।"

"फिर तुम घायल कैसे हुये?"

"कहाँ? अपनी ही करतूत का यह तमाशा है। बीच रास्ते में मुझे तीन जर्मन आते दिखाई दिये। मैंने उन्हें मोटर साइकिल के नीचे रौंद डाला। उसी का यह सर्टीफिकेट मेरे चेहरे पर देख रहे हो।"

दोनों वहाँ से साथ-साथ चल पड़े। उन्होंने जंगल का रास्ता लिया। सूरिन बोला—"किसा! तुम इतने गावदी और बेवकूफ क्यों पैदा हुये? हमेशा आफत मोल लेते रहते हो।"

किसाकोव का मुँह लटक गया। उसने धीरे से कहा—"इस इलाके में, जिसमें जर्मनों ने क़ब्ज़ा जमा रक्खा है, कोना-कोना मेरा जाना हुआ है।"

"तो इससे क्या हुआ?"

"यही कि मैं ज़्यादा सोच-विचार का माद्दा नहीं पैदा कर सका हूँ। कमान्डर भी मेरी इस आदत को अच्छी तरह जानता है।"

वे चुपचाप चलते रहे। रास्ते के सुफेद दरख्तों की नीली छाया बर्फ पर पड़ रही थी। उनकी पैरों की चाप कोहासे से भरी हुई हवा में गूँज उठती थी। रास्ते में जब उन्होंने सिगरेटें सुलगाईं तो किसाकोव कहने लगा—

"पिछले हफ़्ते की बात है, मैं दुश्मनों की टोह लेने के लिये इसी ठिकाने पैराशूट से उतरा था। मैंने कुछ बड़े काम की बातें मालूम कीं और पेट के बल रेंगता हुआ वापस लौट रहा था। इतने में मैंने देखा कि जहाँ छिपा था उसी के पास कब्रिस्तान में जर्मन लोग एक रूसी को घसीट लाये। उन्होंने उसे गोली नहीं मारी बल्कि बंदूकों के कुंदों से मार-मार कर उसके हाथ पाँव तोड़ डाले। मैं दरख्तों के झुरमुट में छिपा हुआ यह दर्दनाक नज़ारा देखता रहा। मुझे अपने को ज़ाहिर करने या उन ज़ालिमों को मज़ा चखाने की इज़ाज़त न थी। जो खबरें हासिल करके मैं अपने पड़ाव पर ले जा रहा था उनकी क़ीमत मेरी और मेरे बाप की जानों से कहीं ज़्यादा थी।"

"तो वह आदमी तुम्हारा बाप था?" घबराकर सूरिन ने पूछा। किसाकोव ने अपनी सिगरेट नीचे फेंककर जूते से कुचल डाली और अपने पैरों की तरफ़ देखते हुये धीमी आवाज़ में बोला—"पिताजी बड़े हिम्मती थे। जितनी देर तक जर्मन उनपर जुल्म करते रहे, उन्होंने ज़बान से उफ़ न की बल्कि बराबर उन्हें गालियाँ सुनाते रहे। आखिर पुराना खून था।

अब सूरिन की बारी आई। उसकी आँखों में आँसू उबल पड़े, गला भर आया और उसने अपने साथी का हाथ पकड़ कर कहा—"भाई मुझे माफ करना, जो कुछ मैंने कहा·····लेकिन तुम समझते हो····· !"

किसा ने गंभीरता से जवाब दिया—"मैं समझता हूँ, भेदिये को जल्द से जल्द सभी बातों की बारीकी समझना ज़रूरी है। मैं मानता हूँ मुझमें अभी वह माद्दा पैदा नहीं हो सका।"

इतना कहकर उसने अपनी टामीगन का तस्मा ठीक किया और मुस्कराने की कोशिश करता हुआ बोला—"क्या आगे ही चले जाओगे? अभी तो बहुत काम करना है।"

दोनों साथी हाथ में हाथ डाले बग़ल के रास्ते पर जाने लगे।

नसीब की बात

उनकी जान-पहिचान लड़ाई के मोर्चे पर खाइयों के बाहर एक ठिकाने हुई। उस वक़्त वे एक पोशीदा सुरंग के अंदर थे। पहिला तो नं० १ कम्पनी का सैनिक था जिसका नाम था कुप्रिन और दूसरा तीन नं० कम्पनी का सिपाही स्तेमीनोव था। कुप्रिन ने सवाल किया—

"तुम यहाँ कैसे आये ? तुम्हारी तैनाती तो दाहिने बाज़ू पर है ?"

"और जनाब यहाँ कैसे तशरीफ़ रखते हैं ? जनाब के साथी तो पीछे के मोर्चे पर हैं।"

कुप्रिन ने करवट बदली। स्तेमीनोव ने जवाब दिया—

"मैं सैनिकों की सूझ के क़ायदे पर अमल करता हुआ आ पहुँचा। अब समझे ?"

"अच्छा, सामने के उस छोटे मकान से कुछ दिलचस्पी होगी ?"

"बहुत बड़ी दिलचस्पी है ! चार भारी मशीनगनें वहाँ से बराबर गोलियाँ बरसा रही हैं। मैं तो परेशान हो गया।"

"कोई तरकीब सोचकर आये हो या महज़ नसीब आज़माने का इरादा है तुम्हारा ?"

इस वक़्त तो नसीब आज़माना ही सोचा है। होता क्या है, यही देखना है।"

"तुम्हारा मतलब है, दौड़कर साँड़ की सींग पकड़ लेना फिर आगे की भगवान जाने ? चाहे फिर मुँह के बल आही गिरो, क्यों न ?"

"तुम्हारे दिमाग़ में गोबर भरा है शायद ! नुक़्ताचीं बनने के बजाय मदद करो तो ज़्यादा काम बने।"

स्तेमीनोव अपनी कमर-पेटी में लगे हुए टेंक-तोड़ हथगोले ठीक करने लगा, इसके बाद धीमी आवाज़ में कुप्रिन से बोला—

"मेरा इरादा पेट के बल रेंगकर उधर खाँई के उस पार निकल जाने का है फिर किसी तरह काँटों की बाढ़ तक पहुँच जाऊँगा। उसे फाँदने के बाद वह मकान तो ज़रा दूर रह जाता है, बस दो हथगोले फेंकते ही फ़ैसला ?"

"इस ख़याल में न रहना, कहीं जर्मनों की नज़र पड़ गई तो दम भर में खुदागंज की सैर करने लगोगे !"

"क्या कहने हैं ! नज़र पड़ गई, नज़र पड़ जाना कोई हँसी-ठट्ठा है ? अजी, उन बदमाशों के होश उड़ा दूँगा।"

"शाबाश ! उनकी दूरबीनी आँखें भी झपक जाएँगी। शायद तुम्हें देखकर, क्यों न ?"

"तुम्हारी नानी क्यों मरी जाती है जो ? आख़िर बात क्या है ? तुम्हारे दिमाग़ में यही फ़ितूर घुसा है कि जर्मन मुझे देख लेंगे मगर दिल में यही मनाते होगे कि ऐसा मौक़ा तुम्हारे ही हाथ आ जाता ?"

"वाहरी अक़्ल तुम्हारी ! मैं तो हर काम का आगा-पीछा सोच लेने में बुराई नहीं समझता। देखो, जो मैं बताऊँ, वही करना, दो मिनट बाद हम दोनों अलग अलग चल देंगे, तुम रेंगते हुए खाँई की तरफ़ जाना और मैं यहाँ से कुछ आगे किनारे की तरफ़ एक गढ़े में जा छिपूँगा जिसे मैं देख आया हूँ। जैसे ही तुम काँटों की बाढ़ के क़रीब पहुँचोगे वैसे ही मैं अपनी टामी-गन से जर्मनों को थोड़ा-सा जुलाब देना शुरू कर दूँगा।"

"मगर सुनो तो, तुमतो उनके इतने नजदीक पहुँच जाओगे कि गोलियों की पहिली ही बाढ़ में तुम्हारा सफ़ाया करते उन्हें देर न लगेगी। यह बात भी समझ के बीच में आ रही है या नहीं ?"

कुप्रिन ने कुछ शक की नज़र से स्तेमीनोव की तरफ़ देखा—फिर प्रत्येक लफ़्ज़ पर ज़ोर देता हुआ कहने लगा—

"उन्होंने अभी तक एक भी गोली ऐसी नहीं तैयार की जो मुझे छू भी सके। आओ, चलें, देर न करो वरना मैं यही समझूँगा कि तुम्हें कोरी बातें बनाने के अलावा और कुछ नहीं आता।"

यह सुनकर स्तेमीनोव कुछ ग़ुस्सा हो गया। उसने कुछ जवाब न दिया और फ़ौरन् अपनी जगह से बाहर निकल आया। पेट के बल रेंगता हुआ जब वह कँटीले तारों की बाढ़ के पास पहुँचा तो उसे कुछ कुप्रिन की टामीगन की कड़क और जर्मन मशीनगनों की जवाबी गरज सुनाई पड़ने लगी। चुपचाप चलता हुआ वह स्थानीय सोवियट की ईंटों की इमारत के पास पहुँच गया, जिसमें जर्मन लोग मशीनगनें लगाकर इत्मीनान से अपनी हिफ़ाज़त कर रहे थे। फिर वह उतरकर तेज़ी से दौड़ा और दो हथगोले खिड़की से उसने मकान के अन्दर फेंक दिए।

इतने ज़ोर का धड़ाका हुआ कि उसकी धमक से स्तेमीनोव खुदभी ज़मीन पर गिर पड़ा। और उड़ता हुआ चूने मिट्टी का छोटा सा ढेर उसके चेहरे पर आ गिरा। जब वह होश में आया तो गाँव की सड़कों पर संगीनों से रूसी सैनिक जर्मनों से लड़ते दिखाई दिये। जर्मनों की मशीनगनें बदस्तूर गोलियाँ बरसा रही थीं।

स्तेमीनोव उठ खड़ा हुआ और पास ही जमी हुई बर्फ लेकर उसने अपना मुँह पोंछा तो खून से तरबतर हो रहा था। फिर वह लँगड़ाता हुआ कुप्रिन की तलाश में चल दिया, जिसे वह मौक़े पर मदद देने के लिए शुक्रिया अदा करना चाहता था। स्तेमीनोव ने उसे हस्बमामूल गढ़े के अन्दर पेट के बल लम्बा लेटा हुआ पाया। मानो वह मर चुका हो, उसने घबराकर पुकारा—"कुप्रिन! क्या बात है?"

कुप्रिन ने मुँह घुमाकर उत्तर दिया—

"ज़रा, आराम कर रहा हूँ, अपनी सूरत तो देखो, मुँह से मानो मिट्टी खोदते रहे हो! भले आदमी! जाकर हुलिया दुरुस्त करो, यहाँ वक़्त क्यों ख़राब कर रहे हो। तुम्हारी कम्पनी कहाँ है?"

स्तेमीनोव ने सुनकर टामीगन उठाकर कंधे पर लटकाई और जवाब दिया—"बड़े ज़िद्दी हो दोस्त ! ऐंठ अभी तक न गई तुम्हारी ?"

अपने हाथों से उसने कुप्रिन को उठाकर पीठ पर लादा और उसे मोर्चे के अस्पताल में ले गया। रास्ते भर कुप्रिन हाथ-पैर झटकता और अपने को छुड़ाने की कोशिश करता रहा, मगर स्तेमीनोव ने उसे ऐसी मज़बूती से पकड़ रखा था कि वह छूट न सका और लाचारी से ख़ामोश रहा।

अपने घायल साथी को डाक्टरों के हाथों में सौंपकर स्तेमीनोव एक नम्बर कम्पनी के कमांडर के पास पहुँचा और अपनी रिपोर्ट दी—

"आपकी कम्पनी के सिपाही कुप्रिन ने बड़ी बहादुरी का काम किया। उसने गाँव की सरहद पर दुश्मनों की चौकी को बर्बाद कर दिया बिल्कुल अकेले ही। ऐसा होने पर हमारी तीन नम्बर कम्पनी को जर्मनों के बाजू से पहुँच कर उनका सफ़ाया करने से कामयाबी मिली।"

चलते-चलते उसने कमांडर को फिर याद दिलाई—

"भूलिएगा नहीं जो कुछ मैंने आपसे कहा है। कुप्रिन ही उस बहादुर सिपाही का नाम है !"

फिर घूमकर वह लँगड़ाता हुआ गाँव के पश्चिम की ओर चल दिया जहाँ उसकी कम्पनी के सैनिकों ने जर्मनों को घेर रखा था और तेज़ी से उनका सफ़ाया कर रहे थे।

ज़िम्मेदारी

रूस के दक्षिणी इलाक़े की एक हवाई छावनी में—कप्तान ज़ुकरोव को कर्नल ने बुला भेजा और साथ ही "नैवीगेटर" (वायुयानों को रास्ता बतलानेवाला अफ़सर) को भी, जिसका नाम लेफ़्टीनेन्ट वाल्दीमीर था। उनके आने पर जिस तीखी नज़र से कर्नल ने उनक देखा उससे दोनो ही उड़ाके समझ गए कि आज डाँट-फटकार जरूर मिलेगी। उनको बैठने का इशारा किए बिना ही कर्नल ने फौरन सवाल किया—"तुम्हीं ने रिपोर्ट की थी कि 'सी' नदी के ऊपर का पुल उड़ा दिया गया है ?"

कप्तान ज़ुकरोव ने उत्तर दिया—"जी हाँ हुज़ूर !"

"हूँ, तो इसका क्या मतलब है ?" इतना कहकर कर्नल ने एक हवाई फोटोग्राफ मेज पर फैला दिया। दोनों उड़ाके झुककर ग़ौर से उसे देखने लगे। उनके दिल धड़क रहे थे। वे ज़रा देर बाद सीधे खड़े हुए— उनके चेहरे से परेशानी टपक रही थी। नैवीगेटर वाल्दीमीर ने घबराकर कहा—

"रास्ता तो सही था। बात कुछ समझ में नहीं आती ?"

"खूब ! मामला बिल्कुल साफ है। तुमको जो हमले का काम सौंपा गया था उसे तुम पूरा न कर सके। तुम जा सकते हो !" कर्नल ने कुछ नाराजी से उनको चले जाने को कहा।

दोनो उड़ाकों ने अफसर को सलाम किया और कमरे से बाहर निकल गए।

सड़क पर आकर दोनों ठहर गए। वाल्दीमीर उस हवाई फोटो को हाथ में लिए फिर ग़ौर से देखने लगा। जुकरोव ने कहा—

"देखते क्या हो, इसे बत्ती बनाकर चुरुट में रख लो और पी जाओ! कैसे ताज्जुब की बात है, मैंने अपनी आँखों देखा। अब, साबित करने का सवाल उठ खड़ा हुआ। हवाई फोटो तो ग़लत नहीं हो सकता?"

वाल्दीमीर ने कप्तान के कंधे पर हाथ रखते हुए कहा—"जरा खयाल करो, यह सारा झगड़ा तुमसे ताल्लुक नहीं रखता। बममारों को रास्ता बतलाने का काम तो मेरा है न? हवाई-जहाज को मन चाहे रास्ते पर चलानेवाला तो मैं ही हूँ। आज तक ऐसी ग़लती मुझसे तो कभी हुई नहीं, लेकिन यह शर्मिन्दगी तो बरदाश्त नहीं होती? मैं जाता हूँ, इसकी जाँच करने की इजाजत कर्नल से जरूर लूँगा!"

"काहे की इजाजत? जरा ठहरो, इतनी जल्दबाजी न करो!" मगर—तब तक—वाल्दीमीर दफ़्तर का दर्वाजा खोलकर कर्नल के कमरे में दाखिल हो चुका था।

दफ्तर के बाहर पड़े हुए लकड़ी के कुन्दे पर कप्तान जुक्रोव बैठ गया और उसने सिगरेट सुलगाई। फिर वह दरवाजे की तरफ नजर लगाकर अपने साथी के वापस आने की राह देखने लगा। कुछ ही मिनट गुजरे थे कि वाल्दीमीर वापस लौटा। उसका चेहरा ख़ुशी से चमक रह था। उसने आते ही कहा—"इजाजत मिल गई! उसने मुझे मौके पर खुद जाकर जाँच करने की इजाजत दे दी। मैं अपनी जान की क़सम खाकर कह सकता हूँ कि जो रास्ता मैंने तय किया था, वही सही था। यह मुमकिन ही नहीं कि पुल किसी प्रकार साबित बचा हो—बच नहीं सकता बगैर टूटे!"

❀ ❀ ❀ ❀

उसी दिन शाम को—वाल्दीमीर जब हवाई-अड्डे पर आया तब

उसकी पीठ पर एक किरमिच का वैसा ही थैला बँधा हुआ था जैसा कि सफर-मैना पल्टन के सिपाही फटनेवाले गोले रखने के लिए साथ लिए रहते हैं। एक बड़ा-सा बम-मार हवाई-जहाज, दुश्मन की छावनी के आगे तक उड़ने के लिए तैयार किया जा रहा था।

वाल्दीमीर ने कर्नल का दस्तखती हुक्म-नामा दिखलाया और पैराशूट पहनकर वह जहाज के अन्दर मिस्त्री के डब्बे में जा बैठा। थोड़ी देर बाद हवाई-जहाज धीरे-धीरे चला और ऊपर उठकर आसमान में गायब हो गया।

वाल्दीमीर हवाई-जहाज़ में बैठा हुआ कुछ देर सोचता रहा फिर अपनी जगह से उठकर नैवीगेटर के केबिन में गया, जिसमें वह रास्ते का पता ले सके। कई दफा उसने यही हरकत की। लगभग दो घंटे बाद, वह मिस्त्री की तरफ मुखातिब हुआ और इशारे से जहाज का वह छेद खोलने को कहा जिससे बम गिराये जाते थे। छेद खोल दिये जाने पर वाल्दीमीर झुककर उसी छेद से नीचे जमीन की ओर देखने लगा। बड़ी देर तक वह देखा किया। अचानक वह उसी छेद के रास्ते नीचे कूद पड़ा और बादलों में ग़ायब हो गया।

मिस्त्री बेचारा इस नज़्ज़ारे को देखकर अवाक् रह गया और उसकी समझ में न आया कि वह क्या करे? सचमुच वाल्दीमीर ने कूदने में इतनी फुर्ती दिखलाई थी।

भूरे बादलों के बीच में वह बम-मार जहाज उड़ा चला जा रहा था!

इस वाकये को कई दिन बीत चुके थे। वाल्दीमीर की जगह पर नये नैविगेटर की तैनाती हो गई थी। कप्तान जुकरोव अपने साथी की जुदाई से इतना दुखी था कि वह नये शख्स से जरूरत के अलावा और कभी बात-चीत न करता था। वह हवाई-जहाज लेकर जब-जब उड़ता तभी उसे अपने दोस्त की याद आ जाती जिसकी इतने दिनों से कोई ख़बर न मिली थी।

एक रोज, साथ के एक उड़ाके ने आकर जुकरोव को खबर दी—"वाल्दीमीर वापस आ गया !"

"सचमुच, कहाँ है ?"

"गुसलखाने में है शायद—"

कपड़े पहने बगैर ही जुकरोव भाग कर गुसलखाने में पहुँचा और अपने साथी को पाकर छाती से लगा लिया। दोनों दोस्त एक अरसे बाद दिल खोलकर मिले।

शाम होने पर जब वे चाय पीने बैठे तब वाल्दीमीर ने आप बीती कह सुनाई। वह कहने लगा—

"मैं हवाई-जहाज पर से कूद पड़ा और पैराशूट के सहारे नीचे ज़मीन पर आया। फिर, मैंने पैदल चलना शुरू किया। मेरे थैले में गोले भरे हुए थे। चूँकि फोटो से यही जान पड़ता था कि पुल जहाँ था वहाँ मौजूद है और उसे हवाई-जहाज पर से बम फेंककर उड़ाने में पिछली दफा हमें कामयाबी हासिल न हो सकी थी, इसलिए, खुद जाकर इस दफा उसे जमीन पर से उड़ाने का इरादा मैं कर आया था। मैं आगे ही बढ़ता गया। यह कहने की जरूरत नहीं कि दो जगह मुझसे और दुश्मनों से बड़ी मजेदार मुठभेड़ भी हुई। खैर, मारा-मारी के बाद मैं भाग निकला और उस जगह पहुँचा जहाँ पर वह नदी का पुल था। मगर पुल का नामो-निशान भी मुझे दिखाई न पड़ा। मेरे कहने का मतलब यह कि असली पुल जिसे कहा जाता, उसका पता न था, मगर नकली पुल उसकी जगह पर मौजूद था। जर्मनों ने टूटे हुए खम्भों पर काले रँगे हुए लकड़ी के तख्ते पुल की शक्ल में आड़े तिरछे रख छोड़े थे। लोहे के शहतीरों को, जो चारों तरफ टूटकर बिखरे पड़े थे, उन लोगों ने सुफेद रँग दिया था। यही वजह थी जो फोटो में सही-सलामत पुल दिखाई दे रहा था और उसे ही देखकर कर्नल साहब हम लोगों पर लाल-पीले हुए थे। जर्मनों ने एक दूसरे ठिकाने पर नदी

पार करने का ढंग लगा लिया था जिसे मैंने बाद में देख पाया। थैले में भूरे गोलों का बोझ वापसी में भी लादकर ले चलना मैंने हिमाकत समझा। और उनको मैंने उसी जगह इस्तेमाल कर डाला। इसके बाद मैं पाँव-पैदल लौट पड़ा और बराबर मुझे चलते रहना पड़ा। हवाई-जहाज पर उड़ने में फासले का अन्दाजा नहीं मिलता मगर पैदल चलने में हवास ढीले हो जाते हैं। मेरे पैर देखो, कैसे सूज गये हैं! अब तो मैं केवल हवाई-जहाज पर उड़ने लायक रह गया हूँ, पैदल चलने की ताब नहीं।"

"तुमने कर्नल को रिपोर्ट भेज दी?"

"हाँ, भेज दी। सारा हाल जुबानी बतला आया हूँ। उसने कहा कि वह मुझे तुम्हारे साथ दूसरी मंजिल पर रवाना करनेवाला है!"

"अच्छी बात है—तुम्हारे साथ तो मैं कहीं भी चल सकता हूँ!"

"अजी रहने भी दो—चलने का नाम न लेना—उड़ने की बात कहो तो मैं सुन सकता हूँ। पैरों में अब ताब नहीं!"

"मेरे कंधे पर बैठ लेना?"

दोनों हँस पड़े! बिगुल की आवाज सुनाई दी। परेड का वक्त आ गया था।

सौंपा हुआ काम

उस दिन कड़ाके का जाड़ा पड़ रहा था। ठण्ढ से हाथ-पैर ठिठुरे जाते थे। आसमान पर कुहासा छा रहा था, काँच जैसी पतली और साफ़ सफेद बर्फ चारों तरफ़ ज़ोरों से गिर रही थी, जंगल के पेड़ बर्फ की चादर ओढ़े चुपचाप खड़े थे। उनकी पत्तियों में हरकत भी न थी। एक कौआ पेड़ की डाल पर बैठा हुआ ग़ौर से अपने शिकार को नीचे देख रहा था मगर वह भी चुपचाप था, उसका शिकार, रात के वक्त आसमान से गिरा था और ज़मीन पर चुपचाप पड़ा हुआ था। उसमें से एक अजीब तरह के धुएँ की बदबू निकल रही थी। कुछ देर बाद, ऐसा जान पड़ा मानों कौए को ठण्ढ लग रही हो। उसने एक दफ़ा अपने पंख फड़फड़ाए। इसके बाद वह उड़कर नीचे शिकार के पास उतर आया, जहाँ खून का एक सोता बर्फ में जम गया था। चोंच डुबोकर उसने खून पिया और चौकन्ना होकर इधर-उधर देखने लगा। उसने अपनी गर्दन दो-तीन बार इधर-उधर झटकी।

बर्फ में पड़ा हुआ आदमी जो अभी मरा न था, धीरे-धीरे करवट लेने लगा। उसकी फटी हुई उड़ाके की पोशाक जो आधी जल चुकी थी, ओस से भीगकर उसके बदन के साथ बिलकुल चिपक गई थी। आदमी ने एक बार कौए पर नज़र डाली। उसे ताज्जुब हुआ, लेकिन थकावट की वजह से वह कुछ कर न सका। कौआ एक पल भर जहाँ-का-तहाँ ठिठका फिर काँव-काँव करके उड़ा और पेड़ की डाल पर जा बैठा। उसकी नज़र लेकिन शिकार पर से न हटी। वह उसे पहले की तरह ग़ौर से देखता रहा।

सैदिकोव—क्योंकि यही उस घायल उड़ाके का नाम था— अपने हवाई जहाज़ पर मिस्त्री के डब्बे में बैठा हुआ था, जिस वक्त हवामार तोप का एक गोला पाइलट के पास आकर फटा। गोले की सफेद किरचें उचटकर सैदिकोव की कमरपेटी में बँधे हथगोलों में लगीं और बात की बात में उनमें आग लग गई। सैदिकोब चारों तरफ़ आग की लपटों से घिर गया। मिस्त्री ने आग बुझानेवाली कल के मसाले से उनको बुझाने की कोशिश की, ममर सैदिकोव ने बम फेकनेवाले फ़र्श के छेद से छलांग मारी और मशाल की तरह जलता हुआ हवाई जहाज़ से नीचे कूद पड़ा। वह बराबर नीचे गिरता गया और जब तक आग की लपटें न बुझीं, उसने अपना पैराशूट नहीं खोला। ज़मीन पर आते वक्त वह कुछ दरख्तों की चोटियों से उलझ गया और फटे हुए पैराशूट को साथ खींचता हुआ धमाके से ज़मीन पर आ गिरा।

इस हादसे के काफी देर बाद, अब जिस वक्त सैदिकोव को होश आया, उसने पास ही से मुट्ठी भर बर्फ उठाकर मुँह में भर ली और उसे चबा गया। बर्फ में खून का स्वाद था अतएव वह ताज्जुब से चारों तरफ़ देखने लगा। इतने में कौए पर उसकी निगाह पड़ी! धीरे धीरे दर्द महसूस करने के साथ ही साथ उसके होशहवाश वापस लौटे।

सैदिकोव उठ बैठा। छुरी से उसने अपने जूते काटकर उन्हें पैरों से उतार फेंका। फिर वह अपने घायल पैर को ध्यान से देखने लगा। उसका पैर ज़मीन पर गिरने से उखड़ गया था। पैराशूट के कपड़े की धज्जियाँ लेकर सैदिकोव ने अपना पैर खूब कसकर बाँधा। बदन के बाक़ी घाव उसे उतनी तकलीफ़ नहीं पहुँचा रहे थे जितनी कि पैर! अब सवाल यह था कि उसे ठिकाने पर पहुँचना था लेकिन जाने के लिए सिर्फ उसे पैरों का सहारा ही हासिल था। वह अपने जहाज़ से जिस वक्त कूदने को मजबूर हुआ था उस वक्त वह दुश्मन के इलाक़े के ऊपर उड़ रहा था और वह जगह उसकी मंज़िल से ३० मील पीछे

थी जहाँ उसे कूदने का हुक्म मिला हुआ था। पेड़ को एक टूटी डाल को उठाकर छड़ी की तरह उसका सहारा लिये हुए सैदिकोव नीचे झुका जिसमें उसके टूटे पैर को कुछ आराम मिले। फिर वह उठा और लँगड़ाता हुआ बर्फ के ऊपर चलने लगा।

ठंडी हवा चल रही थी। एक मचान पर हवा की तरफ़ पीठ किये जर्मन संतरी खड़ा हुआ पहरा दे रहा था। ठंड से बचने के लिए उसने अपने लबादे का अस्तर उलट लिया था। पास ही एक शराब की भट्ठी थी जिसकी इमारत को जर्मनों ने गोला-बारूद का गोदाम बना लिया था। इमारत के चारों तरफ काठ के खम्भों की चहार दीवारी खड़ी थी। हर तरफ बर्फ से ढके हुए मैदान के अलावा और कुछ भी न था। इसी मैदान के छोर पर सफेद रंग की कोई चीज रेंगती नजर आ रही थी। जब संतरी ने चारों तरफ नजर डाली तो उसने उस चीज को देखा। वह कुत्ते जैसी शक्ल जान पड़ी। संतरी ने सोचा कि कोई भुख-मरा कुत्ता है जो धीरे-धीरे चल रहा है। उसने बहुतेरे उजाड़ रूसी गाँवों में वैसे ही कुत्ते कई बार देखे थे, इसलिए उसे किसी तरह का शुबहा न हुआ। उसने फिर पीठ फेर ली और घुटनों के बीच में राइफल दबाकर कोट की जेबों में दोनों हाथ डाल लिए।

दूसरी रात आई—सैदिकोव के बदन में अब आगे बढ़ने की ताकत न रह गई थी। उसका ज़ख्मी पैर सूजकर एक बड़े तकिए के बराबर हो गया था। वह रेंग रहा था और उसके चेहरे पर बड़ा दर्द था। मालूम नहीं कि आग में झुलसने से या बर्फ़ की ठंढक से ऐसा दर्द पैदा हो गया था। वह सोच रहा था कि कहीं पर उसे खाँई या गढ़ा मिले जिसमें छिपकर वह आराम कर सके और वहीं अपने थैले के सामान से भूख-प्यास मिटा सके। उसके थैले में केतली, वग़ैरा मौजूद थे। वह अच्छी तरह सो भी न पाया। घुटने में आग की जलन से फफोले पड़ आए थे जिनमें टीस उठती थी। अपने ऊनी मफलर से

उसने छातों पर पट्टी बाँधी। उसे बेहद तकलीफ़ थी जिसे महसूस करके बार-बार वह तिलमिला उठता था। बर्फ़ पर रेंगते-रेंगते उसकी पोशाक, जो पहले ही आग में आधी झुलस गई थी, चीथड़े हो गई थी। उसका हुलिया कैसा बन गया था, इसका वह कयास भी न कर पाता था। दूर से देखने पर वह एक ख़ौफनाक जंगली जानवर जैसा दिखाई दे रहा था। इन सब तकलीफ़ों को भूलकर वह सिर्फ़ एक ही बात याद कर रहा था—उसी तैशुदा मंजिल पर किसी तरह उसे पहुँचना चाहिए जिसकी ताकीद उसके दल के कमांडर ने उसे की थी! अपनी हालत और मजबूरी को याद करके सैदिकोव का कलेजा काँप उठता था। फिर भी, उसने कस्द कर लिया था कि चाहे जान भले ही चली जाय मगर वह सौंपे हुए काम को पूरा करने की कोशिश ज़रूर करेगा।

जब सैदिकोव भूरे रंग की चहारदीवारी के पास पहुँचा तो वह उकड़ू बैठ गया और अपना सिर ऊपर उठाकर देखा। चहारदीवारी को लाँघना उसके बस की बात न थी। कुछ देर वह सोचता रहा फिर अपना चाकू निकालकर उससे काठ के खम्भों को छील-छीलकर घुसने लायक जगह बनाने लगा।

जर्मनों के कार्पोरल कर्ट-हैंस की ड्यूटी थी कि वह छत पर खड़े पहरा देनेवाले संतरियों का मुआयना करता रहे परन्तु जाड़े में इस बला से बचकर वह आराम कर रहा था। उसे मालूम था कि संतरी लोग ज़रूर सोते होंगे मगर उसने कुछ परवाह न की। कार्पोरल अपने आराम का ख़याल रखता हुआ अपने मातहतों को भी आराम करने देने का आदी हो गया था। वह बड़े इत्मीनान से एक कोठरी में अँगीठी जलाए झपकी ले रहा था।

सैदिकोव चहारदीवारी पार करके इमारत के अन्दर घुसा और खिड़की के रास्ते उसी कोठरी में दाखिल हुआ जिसमें जर्मन कार्पोरल इत्मीनान से लेटा हुआ था। सैदिकोव ने उछलकर उसे धर दबाया

और दोनों हाथों से उसका गला घोटने लगा। कार्पोरल के बेहोश हो जाने पर उसने उसकी जेबों की तलाशी ली। जेब में शराब की एक बोतल मिली। सैदिकोव बोतल मुँह से लगाकर सारी शराब गट-गट करके एक ही साँस में पी गया, जिससे उसके थके माँदे बदन में कुछ गर्मी और ताकत आ गई। कुछ देर वहीं सुस्ताकर वह लोहे के जीने की तरफ चला और ऊपर चढ़कर कमरे में पहुँचा जहाँ अल्मारियों में हवाई-बम काफी तादाद में करीने से चुने हुए रखे थे। बारूद की कई पेटियाँ भी सैदिकोव ने पास की कोठरी में देखीं, जिनमें से एक पेटी घसीटकर वह कमरे में ले आया जहाँ बम रखे हुए थे। फिर उसने 'फ़्यूज' लगाकर उसमें दियासलाई दिखा दी। 'फ़्यूज' चट-चट करता हुआ धीरे-धीरे सुलगने लगा। सैदिकोव उसे ग़ौर से देखता रहा और अपने बचाव की उसने कोई फ़िक्र न की। वापस लौटना उसके लिए बड़ी मेहनत का काम था। बदन के जरा भी हिलाने-डुलाने में उसे बड़ी तकलीफ होती थी। उसके पाँव दर्द से जकड़े जा रहे थे। उसने सिगरेट सुलगाई और बैठकर पीने लगा। काम पूरा होने की खुशी के आगे उसे अपनी मौत की फ़िक्र नहीं सता रही थी।

थोड़ी देर बाद—जब जर्मन संतरी ने फिर मैदान की ओर देखा तो उसे बर्फ पर चलती हुई वही भुख-भरे कुत्ते की शक्ल दिखाई पड़ी मगर इस बार उसकी रफ़्तार धीमी थी—बहुत धीमी थी!

संतरी ने सोचा—कुत्ता शायद बर्फ को खोदकर खाने की कोई चीज़ तलाश करता होगा! कितना बेवकूफ है कुत्ता! बर्फ में भला क्या धरा है! उसने अपनी बंदूक उठाई कि एक ही गोली में कुत्ते का सफाया कर दे फिर उसे खयाल आया कि उसकी ड्यूटी तो पहरा देने की है। उसने पीठ फेर ली और बंदूक घुटनों के बीच में रख जेब में हाथ डालकर बैठ गया। ठंढी हवा तेजी पकड़ रही थी। उसने अपना लबादा कसकर समेट लिया।

सबेरे सात बजे—यही इमारत जिसमें जर्मनों ने गोला-बारूद जमा कर रखा था, एक धड़ाके के साथ उड़ गई। ऐसे जोर की आवाज़ हुई कि उससे चारों दिशाएँ काँप उठीं और जमीन हिल गई। धक्का इतने जोर का था कि पिछली रात में चालीस मोटर-लारियाँ जो सामान लेने के लिए आई थीं और इमारत के बाहर आँगन में खड़ी थीं, उनके टुकड़े उड़ गए मानों वे दियासलाई की डिबिया रही हों! चारों ओर खँडहर और ईंट चूने व शहतीरों के ढेर के अलावा और कुछ भी न बचा। सैदिकोव ने अपना काम पूरा कर डाला था!

इस वाकए के ठीक ६ हफ्ते बाद—सैदिकोव अपनी छावनी में वापस लौट आया। अगर वह चाहता तो बतला देता कि किस तरह कुछ छापामारों ने उसे जंगल में पाया, किस तरह उन्होंने उसकी मरहम-पट्टी और दवा दारू की, कैसे वह एक जगह आग के ढेर में गिर पड़ा था, जिससे छापामारों ने उसकी जान बचाई, वगैरा—वगैरा—मगर.....

अपने कमांडर के आगे रिपोर्ट देते वक़्त सैदिकोव ने कहा—"मैं मानता हूँ कि बिना मुनासिब इन्तजाम के मंजिल पर यकायक पहुँचने में मैंने जल्दबाजी से काम लिया। यह ज़रूर था कि मुझे अपने टूटे पैर की वजह से बड़ी परेशानी थी। फिर भी, हवाई-जहाज में आग लगने पर मेरा कूद पड़ना और किसी तरह अपने सौंपे हुए काम को पूरा करना क्या मुनासिब नहीं समझा जायगा?"

कमांडर ने पूछा—

"अब तुम्हारी तबियत कैसी है?"

सैदिकोव ने अपनी ठुड्ढी पर हाथ फेरते हुए गंभीरता से जवाब दिया—

"जैसी हमेशा रहती थी!"

इसके बाद वह दफ़्तर से निकलकर सड़क पर आया। अब वह

बिलकुल भला चंगा था। उसका लम्बा क़द भरा हुआ सुंदर चेहरा और तन्दुरुस्त बदन देखकर कोई नहीं कह सकता था कि उसने ऐसी मुसीबतें झेली हैं, जिनके आगे मामूली इंसान तो मर जाना ही बेहतर समझता।

यकायक, करीब से जाते हुए एक उड़ाके को रोककर सैदिकोव ने पूछा

"दोस्त! अब किस दिन हम लोग उड़ेंगे?"

उड़ाके ने उस पर एक नज़र डाली और बोला—

"उड़ने लायक मौसम तो आज ही है!"

रूसी जनता के सिपाही

["मैं, बहादुर रूसी क़ौम की सच्ची औलाद और महान सोवियट-संघ का एक नागरिक, आज यह क़सम खाता हूँ कि जब तक हमारे मुल्क की ज़मीन पर आख़िरी फ़ैसिस्ट दुश्मन की लाश न गिर जायगी, तब तक मैं अपने हथियार न डालूँगा। मैं क़सम खाता हूँ कि बग़ैर किसी हिचक या पसोपेश के, मैं अपने नेता या सरग़ना का हुक्म बजाया करूँगा और फ़ौजी क़ायदों की सख़्त पाबन्दी करता रहूँगा। मैं कसम खाता हूँ कि मैं, अपने गाँवों और वतन की बस्तियों को तबाह करनेवाले, छोटे-छोटे बच्चों को क़त्ल करनेवाले और अपने भाइयों को जिस्मानी तकलीफ़ें देकर ख़ौफ़ज़दा करनेवाले दुश्मनों से बेरहमी और सख़्ती से बराबर बदला चुकाता रहूँगा, मैं ख़ून का बदला ख़ून से ही लूँगा, मैं क़सम खाता हूँ कि मैं आख़िरी दम तक लड़ते हुए मर जाना बेहतर समझूँगा। बजाय इसके कि मैं, मेरे ख़ानदानी या सोवियट लोग फ़ैसिस्टों की ग़ुलामी करें। अगर अपनी कमज़ोरी या बुज़दिली या बदनसीबी से मैं इस क़सम को तोड़ूँ और क़ौम के साथ दग़ा करूँ तो मुझे अपने साथियों के हाथों बाग़ी की मौत मरना पड़े।"]

—सोवियट छापामार फ़ौज के सिपाही की क़सम

जर्मनी के तानाशाह, हिटलर ने, अपनी किताब "मीन कैम्फ़" में लिखा है—"याद रखो कि इस दुनिया में सबसे बड़ा मज़हबी हक़ ज़मीन का मालिक बनना है और सबसे बड़ी मज़हबी क़ुर्बानी,

वह ख़ून है जो ज़मीन के हासिल करने में बहाया जाता है।" यह लिखते वक्त हिटलर शायद भूल गया था कि दुनिया में ऐसी क़ौमें भी मौजूद हैं जो अपने वतन की ज़मीन पर अपना हक़ कायम रखने के लिये अपने बच्चे-बच्चे की कुर्बानी दे सकती हैं। सोवियट के किसानों में, भले ही वे पोल, ज़ेक, यूक्रेनियन, सर्ब या रूसी क्यों न हों, ज़मीनपरस्ती का ख़याल कूट-कूट कर भरा हुआ है। अपनी आज़ादी की कीमत अपने ख़ून से चुकाने में रूसियों ने वह मिसाल पेश की है, जिसका दुनिया की तवारीख में जवाब मिलना मुश्किल है। लड़ाई में दुश्मन का मुक़ाबिला करते हुये शहीद होनेवाले उन लाखों रूसी सिपाहियों की बात जाने दीजिये, रूस की रियाया और किसानों ने भी अपने वतन पर हमला करनेवाले जर्मनों को हज़ारों की तादाद में, छोटी-छोटी छापामार फ़ौज़ी टुकड़ियों के ज़रिये जहन्नुम पहुँचाने और तबाह करने में बहुत बड़ा हिस्सा लिया है।

रूस की छापामार फ़ौज़ की शुरुआत उन्नीसवीं सदी में नेपोलिन बोनापार्ट के हमले से हुई थी और उस फ़ौज ने फ्रान्सीसियों के दाँत खट्टे कर दिये थे। लुकाछिपी की लड़ाई में दुश्मन की हमलावर फ़ौज़ को उसने बुरी तरह नीचा दिखलाया था। उस ज़माने की रूसी सरकार और फौज़ी महकमे के अफसरों ने उन छापामार बहादुरों को कोई मदद नहीं पहुँचाई थी। वतन के जोश ने ही उन बेचारों को खुद बखुद हथियार उठाने को मजबूर किया था और अपने इरादे में वे कामयाब हुए। आज इस लड़ाई में बात बिलकुल दूसरी है। लड़ाई के फन में होशियार और तजुर्बेकार सोवियट फौजी अफसरों ने रियाया के लाखों नौजवान मर्द औरतों को इस लुकाछिपी की लड़ाई की बरसों पहले तालीम दे दी थी। ट्रेनिंग के बाद तैयार, छापामार फौज ने मौक़ा आने पर जर्मनों को ऐसा छकाया और वह बहादुरी दिखलाई जिसकी वजह से उनको मजबूर होकर पीछे

कदम हटाने पड़े। रूस की इस छापामार फौज के नौजवानों ने जिस होशियारी और चालाकी से जर्मनों की समूची बटालियन को नेस्तनाबूद कर दिया, उनके गोला बारूद के सैकड़ों गोदामों को उड़ा दिया, उनकी रसद के रास्ते बंद किये और हर तरह से उनको पामाल किया, वह तारीफ के काबिल है। अपने वतन और अपनी कौम के लिये लड़ने वाले इन बहादुरों के कारनामे सोने के हुरूफों में रूस की तवारीख में लिखे जायँगे।

मगर इन वतनपरस्तों ने दुश्मनों के खिलाफ जंग में जो फतह हासिल की, उसकी बहुत बड़ी कीमत इनको देनी पड़ी। इनके सैकड़ों साथी जर्मनों के हाथोंपड़कर निहायत बेदर्दी से, जिस्मानी तकलीफें बरदाश्त करने के बाद, कत्ल किये गये। उनको तड़पा-तड़पाकर बेरहम दुश्मनों ने मारा। उनकी बेइज़्ज़ती और आबरूरेज़ी की गई। हैवानों से भी बदतर बनाकर हमलावर जर्मन सिपाहियों ने उन सूरमाओं को मौत के घाट उतार दिया। फिर भी उनकी ताकत कम न हुई, उनकी हिम्मत और मर्दानगी में जर्रे बराबर कमी न आई और वे दूने हौसले से दुश्मनों का सामना करते रहे, जबतक उनके तन में जान रही। सोवियट छापामार लड़ाकों में से शहीद होनेवाले सैकड़ों बल्कि हजारों बहादुरों के कारनामे आज दुनिया में रूस का नाम रोशन कर रहे हैं और रूस भी उ को नहीं भूला है। वहाँ का बच्चा-बच्चा उनके गीत गाता है। उनकी यादगारें कायम होगई हैं। मकबरे बन गये हैं और जिस जगह उन्होंने अपना खून बहाया था, वह जगह जियारत की जगह बन गई है।

उनमें दो चार बहादुरों की सच्ची कहानियाँ हम आपके आगे पेश करते हैं। जिनसे आप उनकी हिम्मत, जवाँमर्दी और वतनपरस्ती का अन्दाजा लगा सकेंगे।

वतनपरस्त शुरा

हम आपको सोवियट रूस के एक छोटे से गाँव में ले चलते हैं। इस गाँव का नाम लड़ाई से पहले "पेस्कोवोदस्कोय" था जो बदलकर "शुरा-चेकालिन" हो गया है। इसी गाँव के एक कोने में एक छोटी सी बिलकुल सादी कब्र बनी हुई है। आप जानते हैं यह कब्र किसकी है? यह कब्र उस वतनपरस्त शहीद की है, जो एक दिन 'शुरा' के नाम से पुकारा जाता था और जिसकी तस्वीर आप सोवियट के नये डाक के टिकटों पर छपी हुई देख सकते हैं।

मरने के बाद, अपने मुल्क की सरकार से "सोवियट-यूनियन का सूरमा" का खिताब पानेवाला यह सोलह साल का नौजवान आज अपनी कौम में देवताओं की तरह पूजा जाता है। रूस के सभी बड़े-बड़े शहरों के पार्कों, स्कूलों और अजायबघरों में जाकर देखिये—कौमी बहादुर शुरा-चेकालिन की तस्वीरें हर जगह आपको दीवारों पर लगी हुई नज़र आयेंगी। सोवियट के बड़े-बड़े लीडरों और फौजी अफसरों की स्पीचें सुनिये—आप इसी नौजवान की बहादुरी का तसकिरा उनकी जबान पर पायेंगे।

तूला के सूबे में नेस्कोवोदस्कोय गाँव का रहनेवाला यह नौजवान जिसने अपने वतन की आजादी के लिये हँसते-हँसते अपनी जान दे दी, सचमुच अपनी कौम का नाम दुनिया में रोशन कर गया है। शुरा, अपने गाँव के एक हाईस्कूल का तालिबइल्म था। वह खूब लम्बा-चौड़ा, तन्दुरुस्त और खूबसूरत लड़का था। १७ मार्च सन् १९२५ ई० को वह पैदा हुआ था। उसके गाँव के चारो तरफ घना जंगल है जिसमें

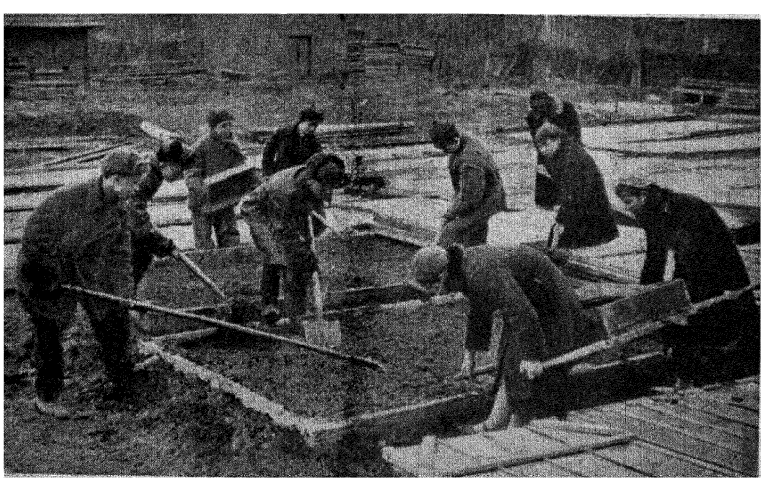
सोवियट-रूस की नई पौध

यह मिशा सालनिकोव नाम का लड़का, किसान-परिवार का होते हुए भी स्कूल में तालीम पाता है और छुट्टी के वक्त पालतू घोड़ों और मवेशियों की देखभाल करता है।



⁂

स्कूलों की ऊँची जमातों में तालीम पानेवाले लड़के रोस्टोव के इलाक़े में काश्तकारी के काम में मदद कर रहे हैं। दरिया डान के किनारे एक खेत में ये लोग साग सब्ज़ी बो रहे हैं।





यह शख़्श आग बुझानेवाली टोली में काम करता है। कंधे से लटकती हुई आग बुझानेवाली 'मसाले' की बोतल पर ग़ौर कीजिए।

⁂

रूस के कल-कारख़ानों का मोर्चा

यूराल की पहाड़ियों में मोर्चे के पीछे, गोला-बारूद तैयार करनेवाली जंगी-फ़ैक्टरी के कुछ मुलाज़िमान व कारीगर अख़बार में जंग की ख़बरें पढ़ रहे हैं।



बनैले जानवर दिन-दहाड़े फिरा करते हैं। अपने बाप की तरह शुरा को भी जंगल की जिन्दगी बचपन से पसन्द थी और वह अक्सर बाप के साथ वहाँ घूमने-फिरने जाया करता था। धीरे-धीरे उसने बन्दूक से निशाना लगाना भी सीख लिया और थोड़े ही दिनों में अच्छा निशाने-बाज बन गया। घोड़े की सवारी का भी उसे बड़ा शौक था और घोड़े की नंगी पीठ पर सवार होकर सरपट भगाने में जरा भी न डरता था। मशीन और औजारों के काम में भी उसने दिलचस्पी ली और एक अच्छा मिस्त्री बन गया। कैमरे से फोटो उतारना भी उसने सीख लिया। वह एक जहीन तालिबइल्म तो था ही, साथ ही उसे अपने मुल्क की तवारीख पढ़ने का बड़ा शौक था। वतन के जांनिसार बहादुरों, सिपहसालारों और दुश्मनों से अपने मुल्क की हिफाजत में जान देनेवाले वतनपरस्तों के नाम उसे अच्छी तरह याद हो गये थे।

शुरा बड़ा मेहनती और फुर्तीला था। जिस काम में वह लग जाता उसे खूबी के साथ पूरा करके ही दम लेता। माँ बाप कभी जब किसी काम से शहर को जाते तो शुरा की मौजूदगी से उन्हें घर की जरा भी फिक्र न रहती, उनकी गैरमौजूदगी में शुरा अपने छोटे भाई की देख-भाल करता और घर का सारा इन्तजाम अकेले ही सम्हालता। अपना खाना खुद पका लेता और जूठे बर्तन भी साफ करता। घर को साफ सुथरा रखना, मवेशियों को चारा देना, दूध दुहना, बाजार से सौदा लाना—हर काम में शुरा होशियार था, वह बड़ा हँसोड़ और मिलनसार था इसी से उसके दोस्त व गाँववाले उसे प्यार करते थे। वह घुमक्कड़ भी परले सिरे का था और दोस्तों के साथ गाने-बजाने में भी काफी हिस्सा लेता था, उसकी माँ कहा करती—"शुरा तो मेरी जिन्दगी का चिराग है!" वह शुरा को बहुत चाहती थी और हर काम में उसकी हिम्मत बढ़ाया करती थी। उसे यकीन था कि एक न एक दिन

शुरा नाम पैदा करेगा—शायद बड़ा होने पर इंजीनियर या मशहूर साइंसदाँ बने।

इतने में रूस और जर्मनी में जंग छिड़ गई।

शुरा बोला—"माँ इस दफा बड़े जोर की लड़ाई होगी, मैं भी पिताजी के साथ जाकर दुश्मनों से लड़ूँगा।

उसकी माँ उदास हो गई, शुरा अभी कमसिन था। माँ यह चाहती थी कि शुरा पढ़े-लिखे और उसकी आँखों के सामने ही रहे, मगर शुरा का यह इरादा देखकर वह घबरा उठी, पिछले ६ साल से शुरा की माँ, गाँव की म्यूनिसिपैल्टी की मेयर थी। उसका फर्ज था कि ज़्यादा से ज़्यादा तादाद में गाँव के नौजवानों को सोवियट फौज में भरती कराये और गाँववालों को दुश्मन का मुकाबिला करने के लिए हिम्मत दिलाती रहे, मेयर की हैसियत से उसको ऐसा करना ज़रूरी था। उसने अपना फर्ज़ खूबी से निभाया। इतना ही नहीं बल्कि जो लोग फौजी महकमे से नहीं बुलाये जाते थे उन्हें भी वह खुद-बखुद जाने को रज़ामन्द करती थी। औरतों को भी लड़ाई के कामों में हिस्सा लेने के लिए उसने तैयार किया था। उनसे तिगुनी-चौगुनी मेहनत लेती थी और उनमें वतन-परस्ती का जोश पैदा करती थी। फिर भी—वह माँ थी! शुरा तो सिर्फ सोलह साल का था। उसके मुँह से लड़ाई पर जाने की बात सुनकर माँ का दिल भर आया, ममता उमड़ पड़ी, वह बेकरार हो उठी मगर उसका फर्ज आड़े आया। वह जानती थी, शुरा को रोकने या समझाने की कोशिश बेकार होगी, वह आदत से ही इरादे का पक्का था। इसलिए उसने शुरा से कुछ भी न कहा, पूरी खामोशी अख्तियार कर ली।

फौज में शुरा भरती नहीं किया गया क्योंकि वह कमसिन था। बाद में, जब जर्मन फौजें एक आँधी की तरह रूस के इलाकों को जीतती हुई पूरब की तरफ बढ़ते-बढ़ते करीब आ पहुँचीं तब इस गाँव

में भी वालंटियरों का एक जत्था बनाया गया और शुरा भी उसमें शामिल कर लिया गया। जत्थे के सरदार ने शुरा को डील-डौल, फुर्ती और निशाने-बाजी में सबसे बढ़ा-चढ़ा समझकर उसे एक छापामार लड़ाकों की टुकड़ी में भरती कर लिया जिसमें शुरा का बाप भी काम करता था। इन लोगों को यह काम सौंपा गया कि जंगलों, नदियों की घाटियों और उजाड़ सूने इलाकों में, जहाँ भी जर्मन के पैराशूटवाले सिपाही, जासूस, भेदिये और फौजी दिखाई दें, वहीं लुक-छिपकर उनका सफाया कर दें। यह काम खतरे से खाली न था मगर वतन की खिदमत के आगे वे लोग जान की परवाह करना जानते ही न थे। घर में अपनी माँ और छोटे भाई को छोड़कर शुरा अपने बाप के साथ चला गया। माँ को उनके ठिकाने का कुछ भी पता न था और न वे उसको कोई इत्तिला देकर ही गये थे। उस बेचारी को यह भी अन्दाज़ा न था कि वे कितने दिनों के लिये गये हैं या कब वापस आयेंगे? बाप-बेटे दोनों ने अपनी रवानगी की खबर गाँव में किसी को न दी थी।

जब कुछ रोज बाद, वे शिकार खेलते, मार्च करते और देश के बहादुरों के गीत-गाते गाँव में वापस लौटे तो पति और बेटे को देखकर शुरा की माँ की खुशी का ठिकाना न रहा। दो-चार दिन बाद—वे दोनों फिर यकायक गायब हो गए। उस वक्त—जर्मन लोग तेजी और खूँखारी के साथ आगे बढ़ते चले आ रहे थे और उस गाँव के बिल्कुल करीब पहुँच गये थे। गाँववालों में घबराहट फैल रही थी। इसी बीच में शुरा वापस आया और आते ही उसने अपनी माँ से गर्म कपड़े माँगे। कपड़े लेकर वह फिर चला गया। माँ समझ गई कि शुरा छापामार फौज के जवानों के साथ जा रहा है मगर उसने अपनी ममता को वतन-परस्ती के जोश से दबा दिया।

पाँच दिन बाद—गाँववालों को सरकारी तौर पर इत्तिला मिली कि वे गाँव खाली कर दें क्योंकि दुश्मन नज़दीक आ गये थे। लोग

भागने लगे और बात की बात में सारा गाँव खाली हो गया। मगर शुरा की माँ ने जाने से इनकार कर दिया। उसने सरकारी अफसर से कहा—"जब तक मैं अपने बेटे शुरा को एक दफा देख न लूँगी तब तक यहाँ से हर्गिज न टलूँगी।" लाचार होकर उस सरकारी अफसर ने शुरा को बुलवा भेजा और माँ बेटे एक दूसरे से मिले। माँ की आँखों में आँसू देखकर शुरा बोला—"माँ! तुमतो एक बहादुर और समझदार मां हो, तुम्हें खुश होना चाहिए! रोना तो बुजदिली की निशानी है?" माँ के आँसू फिर भी न रुके। वह अच्छी तरह जानती थी कि छापामार फौज के लड़ाकों की ज़िन्दगी, एक दफा जर्मनों के हाथों पकड़े जाने पर, हर्गिज नहीं बचती। इसी खयाल से वह अपने बेटे के लिये फिक्रमन्द थी। मगर शुरा ने देर तक उसे समझाया, उसके आँसू पोछे और उसे गले लगाया। माँ ने शुरा को जी भर प्यार किया—वह उसे छोड़ती ही न थी मगर शुरा कब ठहरनेवाला था! वह माँ को दूसरे गाँव में चले जाने की हिदायत करके फौरन अपने ठिकाने पर आ गया।

छापामार लड़ाकों की जिस टुकड़ी में शुरा काम करता था, उसमें एक भी नौजवान ऐसा न था जो निशाने बाजी, घुड़सवारी, दौड़-भाग, और फुर्ती में उसका मुकाबिला कर सकता हो, वह बेखौफ घने से घने जंगल में घुस जाता, दलदलों में फाँद पड़ता और पहाड़ी नदियों को तैरकर पारकर जाता। कई दफा वह जर्मनों के कब्जे में गई हुई बस्तियों में चुपचाप दाखिल होकर दुश्मनों की तादाद, उनके तोपखाने और रिश्रा.या के साथ उनके बर्ताव की पूरी-पूरी खबरें लेकर सही-सलामत वापस आया। उसके साथी उसे बहुत चाहते थे क्योंकि उनके साथ उसका बर्ताव सगे भाई जैसा था। शुरा और उसके साथी दिन के वक्त जमीन में खोदी हुई सुरंगों और खाइयों में छिपे पड़े रहते हालाँकि इस तरह की रहन-सहन उन्हें तकलीफ-देह होती थी। इधर-उधर से

कल-पुर्जे जुटाकर शुरा ने एक रेडियो भी तैयार कर लिया था जिसके जरिये वह जर्मनों की डींगें और लड़ाई का ताजा हाल सुना करता था। खतरे से घबराना तो वह जानता ही न था। इसीलिए उसकी टुकड़ी का सर्दार ज़्यादातर उसे ही खास-खास मुश्किल काम सौंपा करता था। कभी-कभी वह जर्मनों की फौजी पोशाक पहनकर और उन्हीं के हथियार लेकर उनके दरम्यान बेखौफ आता-जाता रहता था। ये सब चीजें उसने जर्मनों से ही छीनी और चुराई थीं। शुरा को यह बात अच्छी तरह मालूम थी कि जर्मन-सिपाही किसी से नहीं डरते मगर रूस के छापामार लड़ाकों से बहुत घबराते हैं और हमेशा उन्हें पकड़ने का मौका ढूँढ़ते रहते हैं। उन्हीं के डर के मारे जर्मन-सिपाही कभी जंगलों के करीब से नहीं गुजरते थे और न उन घुमावदार टेढ़े मेढ़े रास्तों पर ही चलते थे जिनके आस-पास दरख्त हों। शुरा हर वक्त जर्मन-सिपाहियों, संतरियों और जासूसों से भिड़ने को तैयार रहता था और मौके पर खूब छकाता था। उनको ज़्यादा से ज़्यादा नुकसान पहुँचाने में वह कोई बात उठा न रखता था।

कई दफा शुरा जर्मनों के हाथ पड़ते-पड़ते बचा। एक बार वह अपने कई साथियों से बिछुड़कर अकेला ही दुश्मनों की बस्ती में जा फँसा। बहुत से जर्मनों ने उसे घेर लिया। ज़िन्दगी और मौत का सवाल पेश हो गया। जरा-सी गलती होती और सारा किस्सा खत्म था। एक अकेली राइफल, बहुतों के मुकाबिले में क्या हस्ती रखती थी। शुरा ने सोचा कि सिर्फ हथ-गोले ही उसे बचा सकते हैं। ज्यों ही उसे यह खयाल आया त्योंही अगर उसके दुश्मन भी यही बात सोच लेते तो शायद शुरा के तन की धज्जियाँ उड़ गई होतीं। मगर जर्मन तो उसे जिन्दा ही गिरफ्तार करने पर तुले हुए थे जिसमें उनको रूसियों के छापामार जत्थों के ठिकाने का पता मिल सके। उन्होंने गोलियाँ नहीं चलाईं। शुरा ने उनके इस पसोपेश से फायदा उठाया। ताबड़-

तोड़ हथगोले फेंकता हुआ वह भाग निकला और अपने साथियों से आ मिला। जब वह सारा हाल सुना रहा था। तब उसके चेहरे पर घबराहट के निशानात न देखकर उसके साथियों को बड़ा अचम्भा हुआ।

दूसरी बार शुरा और उसके कुछ साथी जर्मनों के लिबास में एक गाँव में अपने किसी रिश्तेदार से मिलने जा पहुँचे जो बूढ़े लोग थे और किसानी करते थे। यह गाँव जर्मनों के क़ब्ज़े में आचुका था। गाँव के बहुतेरे लोग जर्मनों से नफ़रत करते थे और छापामार लड़ाकों को मदद पहुँचाते थे। ख़ास तौर पर शुरा और उसके साथियों के लिये वह सब कुछ करने को तैयार रहते थे क्योंकि वह उनका ख़ान्दानी था। रात के वक्त शुरा अपने साथियों को लेकर अपने उन्हीं किसान रिश्तेदारों के मकान पर ठहर गया। खाने-पीने से निबटकर रोशनी बुझा दी गई और सबने सोने की ठानी। जर्मनों की कई फौजी टोलियाँ पास ही पड़ाव डाले हुए थीं। काफी रात गुजर जाने पर कुछ जर्मन-सिपाही उस घर में आ धमके। उन्होंने सारे मकान की तलाशी ली और फर्श पर फौजी लिबास में आदमियों को सोता देखकर मकान मालिक बूढ़े से पूछा—"ये कौन हैं?" बूढ़े ने जवाब दिया—"आपके ही आदमी हैं।" सचमुच ही उस ज़माने में जर्मन सिपाही घर-घर में अड्डा जमाये हुए थे और गाँववालों से अपनी मेहमानी जबरदस्ती करवाते थे।

शुरा और उसके साथियों ने सारी बात-चीत सुनी मगर खामोश पड़े रहे मानों गहरी नींद में सो रहे हों। जर्मनों ने उन पर टार्चों की रोशनी डालकर देखा और पोशाक से यह समझकर कि वे उनके अपने ही फौजी हैं, वे लोग मकान मालिक से कुछ न बोले और चुपचाप खुद भी फर्श, बेंचों व मेज पर, जहाँ जगह मिली, लेट रहे। शुरा और उसके साथी अगर चाहते तो उन जर्मनों को सोते में ही ठिकाने लगा देते मगर ऐसा करने के बाद खुद तो भागकर बच जाते और आई-गई उन गरीब किसानों के सिर पड़ती जिन्होंने उनको अपने घर में

पनाह दी थी। इसलिए उन लोगों ने अपना इरादा छोड़ दिया और सबेरा होते ही वहाँ से चुपचाप लम्बे पड़े।

इसी तरह एक अरसे तक शुरा रोजाना मौत से खेलता रहा। आराम करना तो वह जानता ही न था। दिन-रात की मेहनत का नतीजा यह हुआ कि उसे ठंढ लग गई और वह बीमार पड़ गया। उसकी देख-भाल और इलाज का इन्तजाम जंगल में भला क्या हो सकता था। शुरा को जोर का बुखार चढ़ा और सारे बदन में इतना दर्द बढ़ा कि वह घबड़ा गया। उसकी छापामार टोली में कुछ लड़कियाँ भी थीं मगर उनको सिर्फ जख्मियों की मरहम-पट्टी करने के अलावा और कुछ न आता था। यह ज़रूरी था कि शुरा को किसी अच्छी जगह ले जाकर उसके मुनासिब इलाज का इन्तजाम किया जाय मगर वह कहाँ ले जाया जाय—यह सवाल भी कम टेढ़ा न था। चारों तरफ हरएक गाँव में जर्मन मौजूद थे। हरएक कस्बा, हरएक सड़क, हरएक गली में उनके फौजी-दस्ते घूम रहे थे। रूसी फौज की छावनी बहुत दूर थी। वहाँ पहुँचने में काफी वक्त और होशियारी की ज़रूरत थी। बीमारी की हालत में शुरा वहाँ भी नहीं पहुँचाया जा सकता था। जैसे-जैसे दिन बीतते वैसे-वैसे शुरा की हालत खराब होती जाती। आखिरकार उसके साथियों ने उसे उसी के पुराने गाँव में भेजने का इरादा किया। वह गाँव करीब पड़ता था और हालाँकि जर्मनों ने उस पर कब्जा कर लिया था मगर वहाँ शुरा के रिश्तेदार मौजूद थे जिनसे उम्मीद थी कि शुरा की देख-भाल करते हुए वे उसकी मौजूदगी दुश्मनों पर जाहिर न होने देंगे।

भेष बदलकर शुरा अपने पुराने गाँव में दाखिल हुआ। सब तरफ जर्मनों की टुकड़ियाँ फिरती दिखाई दे रही थीं। चुपचाप शुरा अपने रिश्तेदारों के घर जा पहुँचा। उसे देखकर वे लोग घबड़ा गये कि जान-बूझकर यह छोकरा मौत के मुँह में क्यों आया? उन्हें मालूम था कि

अगर जर्मनों को शुरा की मौजूदगी का पता चल गया तो उसकी बोटी-बोटी काट डालेंगे। मगर वे लोग बहादुर वतन परस्त थे। उन्होंने शुरा को सबसे अच्छे कमरे में जगह दी, खाना खिलाया और हर तरह से इतमीनान दिलाया कि उसे डरने की ज़रूरत नहीं। शुरा सो गया मगर हमेशा की आदत के बमूजिब उसने सिरहाने बहुत से हथगोले रख लिये थे। दुश्मनों से चौकन्ने रहने का उसूल वह बराबर याद रखता था।

लाख कोशिश करने पर भी शुरा के रिश्तेदार जर्मनों की आँखो मे धूल न झोंक सके। उनको उस गाँव और उस घर में शुरा के आने को खबर मालूम हो गई। एक मशहूर छापामार लड़ाके की शोहरत वे पहले ही सुन चुके थे जिसकी मौजूदगी का पता खुश-किस्मती से उनको चल गया। फिर क्या था रात के वक्त एक दर्जन हर्बे-हथियारों से लैस जर्मन-सिपाहियों ने उस घर पर चढ़ाई कर दी। शुरा जाग पड़ा और दम-भर में उसको अपने घिर जाने का पता चल गया। वह इसी तरह पहले भी कई दफा दुश्मनों के घेरे में पड़ चुका था इसलिए उसे जरा-भी घबराहट न हुई। इस वक्त उसकी हालत जंगल में शिकारियों से घिरे हुए शेर जैसी थी। उसने सोच लिया कि अगर किस्मत में मरना ही बदा है तो दस-बीस दुश्मनों को साथ लेकर मरूँगा। बस, उसने फौरन ही सिरहाने रखा हुआ हथ-गोला उठाकर जर्मन-सिपाहियों पर जोर से फेंका। मगर धड़ाका हुआ ही नहीं—हथ-गोले के फटने की आवाज भी नहीं हुई। वह हथ-गोला खराब निकल गया। शुरा ने मायूसी से उस पर नजर डाली, वह ज्यों का त्यों फर्श पर पड़ा हुआ था!

फिर क्या था—जर्मनों ने उसे गिरफ़्तार कर लिया और ले चले। वह कमसिन तो था ही और बीमार नज़र आता था इसलिए जर्मनों ने खयाल किया कि उससे बआसानी उसकी छापामार फौज का पता

मिल जायगा। वे यह भी मालूम कर लेंगे कि उस फौज में कितने आदमी हैं और कहाँ छिपे हैं ? मन के लड्डू खाते हुए जर्मन शुरा को लेकर अपने पड़ाव पर पहुँचे। उन्होंने लाख पूछा मगर शुरा ने कुछ न बताया उलटे उनको गालियाँ ही देता रहा। जर्मनों के अफसर को उसने रोशनाई की दावात फेंककर मारी और उस पर थूक भी दिया। शुरा को बड़ी बुरी तरह मार पड़ी। संगीनों से उसके जूते और पैर छेद डाले गये। उसको तरह-तरह की जिस्मानी तकलीफें दी गईं, जिसमें किसी सूरत से वह अपने साथियों के अड्डे का पता बतला दे मगर शुरा को अपनी कौमी कसम याद थी, उसने इस मामले में एकदम खामोशी अख्त्यार कर ली। जर्मनों ने उसे लालच दिया, फुसलाया मगर उनकी सारी कोशिशें बेकार गईं। खीझकर उन्होंने शुरा को फाँसी पर लटकाने का फैसला सुना दिया।

शुरा ने बेखौफ होकर फैसला सुना—दिल में उसे अपनी माँ, बाप और भाई का खयाल भले ही आता हो मगर जाहिरा उसने संजीदगी और दिलेरी से ही काम लिया। वह न तो रोया गिड़गिड़ाया और न उसने रहम की दरख्वास्त की। गाँव में चौराहे के ऊपर फाँसी का इन्तजाम किया गया। जर्मनों ने सारे गाँव को फाँसी देखने के लिए जबरदस्ती इकट्ठा किया। सिपाहियों के घेरे में शुरा वहाँ पर लाया गया। एक जर्मन ने उसे मोटे कागज की दफ्ती का टुकड़ा देकर कहा कि—"इस पर लिखो कि हर एक छापामार लड़ाके की यही हालत होती है।" शुरा ने उसे गालियाँ दीं और लिखने से इनकार किया। बदले में, वह जर्मनों से चिल्लाकर कहने लगा—"तुम, हम सबको फाँसी पर नहीं लटका सकते। हमारी तादाद बहुत ज्यादा है!"

जल्लाद ने रस्सी का फंदा शुरा के गले में डाल दिया मगर उस बहादुर छोकरे के मत्थे पर शिकन तक न आई। वह अपने वतन का कौमी गीत गाने लगा और गाते-गाते फाँसी पर झूल गया! मरने के

बाद जर्मनों ने उसके सीने पर दफती का टुकड़ा लटका दिया जिस पर लिखा था—"छापामार लड़ाके का खात्मा!" यह दफती का टुकड़ा आज भी मास्को शहर के एक अजायब घर में रखा हुआ है। जर्मनों ने गाँववालों को शुरा की लाश फाँसी पर से उतारने और दफनाने की इजाजत नहीं दी। वे तो गाँववालों को खौफजदा करने के लिए उसे एक मिसाल के तौर पर जहाँ का तहाँ रहने देना चाहते थे। धीरे-धीरे जाड़ा आया, बर्फ पड़ने लगी और शुरा की लाश खुदबखुद नीचे गिरकर बरफ़ में दब गई। आखिर में जब जर्मनों को हराकर रूसियों ने गाँव से खदेड़ दिया तब वह लाश बर्फ खोदकर बाहर निकाली गई और बडी धूमधाम से दफनाई गई।

जिस चौरस्ते पर शुरा को फाँसी दी गई थी वह आजभी "अलेक्ज़ेंडर चेकालिन का चौराहा" कहलाता है। शुरा अपने मुल्क का एक सच्चा सपूत था। वह मरने के बाद भी आज करोड़ों रूसियों के दिलों में जिन्दा है—एक याद बनकर। अपनी कुर्बानी देकर उसने अपनी कौम की बहुत बड़ी खिदमत की और दुनिया को दिखला दिया कि वतन-परस्ती इसे कहते हैं।

बहादुर लड़की लिज़ा

रूस के कैलिनिन सूबे में रूना नाम के एक छोटे से गाँव में एक मामूली किसान के घर पैदा होनेवाली लड़की "लिज़ा" किसी रोज बड़ा नाम पैदा करेगी, यह कोई न जानता था। एक दिन, इसी लिज़ा की तस्वीरें वतन के अजायबघरों' स्कूलों, फौज के दफ़्तरों, सिपाहियों की बैरकों और लाखों घरों में लगी हुई दिखाई देंगी, इसका सपने में भी किसी को ख़याल न आया था। अपनी कौम पर मिट जानेवाली इस लड़की की बहादुरी की कहानी एक रोज बच्चे-बच्चे की ज़बान पर होगी, यह भी किसी को अन्दाजा न था। रूस की बहादुर औरतों में नामवरी हासिल करनेवाली लिज़ा उस वक्त पन्द्रह साल की हो चुकी थी।

उसका गाँव, तालीम के लिहाज से बहुत पिछड़ा हुआ था मगर लिज़ा को बचपन से ही लिखने-पढ़ने का बड़ा शौक था। वह पड़ोस के गाँवों में जाकर वहाँ की लाइब्रेरियों से किताबें माँग लाती और पढ़ा करती। उसे तरक्की करने की बड़ी ख्वाहिश थी और सोवियट रियाया की हैसियत से वह दुनिया में नाम कमाना चाहती थी। उसने स्कूल की पढ़ाई खत्म करके कालेज में कदम रखा और वहाँ से ग्रैजुएट हो गई। उस जैसी तेज, ज़हीन और मेहनती लड़की कालेज में दूसरी न थी, इस बात की ताईद कालेज के प्रोफ़ेसरों ने की थी। वह सबसे ज्यादा नम्बर इम्तिहान में पाती थी। पढ़ाई खत्म होने पर लिज़ा घर पर रहकर खेती बारी के काम में अपनी बूढ़ी माँ का हाथ बटाने लगी। घर के काम-काज से जो वक्त बचता उसमें वह किताबें पढ़ा करती। अखबारों से उसे खास दिलचस्पी थी। पढ़ने-लिखने से जो वक्त खाली मिलता

उसमें वह मजहबी और कौमी तरक्की के कामों में हिस्सा लेती। अपने गाँव के कितने ही लोगों को उसने लिखना-पढ़ना सिखाया। उसने उन्हें तरक्की का रास्ता दिखलाया और नये ज़माने के साथ चलने के तरीके बतलाये। गाँव के किसानों को मिल-जुलकर खेती करने के फायदे भी उसीने समझाये और धीरे-धीरे खेती का यही तरीका लोग अख्तियार करने लगे।

अपने गाँव में उसने लड़कों-लड़कियों का एक क्लब भी कायम किया और "पायोनियर्स" नाम की एक टोली बनाई जो "ब्वाय स्काउट्स और गर्लगाइड्स" जैसी मिलो-जुली टोली थी और उसका काम लोगों की ख़िदमत करना था। उसने गाँववालों की ज़िन्दगी और रहन-सहन में एक इन्किलाब पैदा कर दिया और दो-तीन साल में ही उसका गाँव काफी तरक्की कर गया। उसने गाँव का इन्तिजाम करनेवाली कमेटी में बहुत बड़ा ओहदा हासिल कर लिया। उसकी शोहरत आस-पास के गाँवों में फैलने लगी। एक दफा उसकी माँ ने कहा—"लिज़ा! तू अब बीस साल की हो गई, तेरी शादी होनी चाहिये!" लिज़ा ने जवाब दिया—"माँ! फ़िक्र क्यों करती हो? शादी भी हो जायगी वक्त आने पर, अभी तो मुझे बहुत से काम करने हैं।"

सन् १९४१ में, लड़ाई की शुरुआत हो चुकी थी। लिज़ा ने भी फौजी ट्रेनिंग कैलिनिन जाकर हासिल की। ट्रेनिंग खत्म होने पर वह अपने गाँव लौट आई और वहाँ के लोगों को संगठित होकर अपनी हिफाजत के लिये तैयार करने लगी। लिज़ा ने गाँववालों को धीरे-धीरे बन्दूक चलाना, हथ-गोले फेंकना और मशीनगन का इस्तेमाल सिखाया। अपनी एक बचपन की सहेली को लिज़ा ने खत में लिखा—"मैं सिपाही बनूँगी—असली सिपाही! यही मेरी दिली ख्वाहिश है अब!"

लिज़ा का गाँव बहुत जल्द एक फौजी पड़ाव की शक्ल में बदल

गया। लोगों में जोश और वतन-परस्ती की लहरें उठीं—सब तैयार हो गये—दुश्मनों के मुकाबले के लिये! लड़के, लड़कियाँ, बूढ़े बच्चे, औरत-मर्द, सभी में कौमियत का जोश बढ़ चला। एक दिन एक स्पीच में लिज़ा ने गाँववालों से कहा—"हमें अपना वतन प्यारा है, उसकी हिफ़ाजत करेंगे। हम अपनी सरकार और वतन के लिये मर मिटेंगे। दुश्मन को बहुत जल्द पता चल जायगा कि सोवियट कौम पर हमला करने का क्या अंजाम होता है।"

जर्मन बढ़े चले आ रहे थे और लाल-फौज बराबर पीछे हटती जाती थी। होते-होते दुश्मन रूना के आस-पास के गाँवों में दाखिल हो गये। सन् १९४१ के अगस्त महीने की बात है—एक रोज शाम को लिज़ा ने सड़क पर शोरगुल सुनकर वहाँ जाकर देखा। अजीब नज़ारा था—हजारों मवेशी, उनके पीछे बच्चों से भरी हुई सैकड़ों बैलगाड़ियाँ, सामान असबाब से लदे छकड़े वग़ैरा गाँव में दाखिल हो रहे थे। लिज़ा ने एक लड़के से पूछा—"तुम लोग कहाँ से आ रहे हो?" लड़के ने जवाब दिया—"जर्मनों के हमले से हम लोग पीछे भाग रहे हैं।" यह जवाब सुनकर लिज़ा रंजीदा हो गई। उसने सोचा—क्या तबाही और बर्बादी इन गाँवों की क़िस्मत में भी लिखी है, जिन्हें सुधारने और तरक्की के रास्ते पर ले जाने में उसने अपनी ज़िन्दगी के कितने ही साल लगाये थे? गरीब किसानों और देहातियों को जर्मनों के जुल्म का शिकार बनना ही पड़ेगा? ये लहलहाते हुए खेत और बगीचे दुश्मनों के पैरों तले रौंदे जायेंगे? और वह बेबस होकर यह बर्बादी और तबाही अपनी आँखों से देखा करेगी? नहीं, ऐसा न होने पाएगा! लिज़ा सोचती रही—खूब संजीदगी से सोचती रही। उसने अपना फ़र्ज समझ लिया। अगले रोज उसने गाँववालों को इकट्ठा करके उनसे कहा—"हम हिटलर की गुलामी नहीं कुबूल करेंगे। अपनी हस्ती कायम रखने के लिए हम ज़रूर लड़ेंगे। हम एक दूसरे के

कंधे से कंधे भिड़ाकर अपने वतन के दुश्मनों का मुकाबला करेंगे। क़ौमियत का तक़ाजा है कि हम जंग में मर मिटें—इसीसे हमारा नाम रौशन होगा। जिसके दिल में धड़कन हो, जिसकी कलाइयों में कूवत हो, जिसकी रगों में सोवियट खून की रवानी हो, वह आज हमारा साथ देने को तैयार हो !" सब गाँववाले तैयार थे !

गाँववालों की मदद से बहुत जल्द उस बहादुर लड़की लिजा ने एक छापामार ब्रिगेड तैयार की जिसमें बात की बात में ६८ वालंटियर भरती होगये, उनमें मर्द-औरतें, लड़के-लड़कियाँ, सभी थीं। यकायक एक रोज़ लिज़ा ने अपनी माँ से कहा—"कल बहुत तड़के उठकर बाहर जाना चाहती हूँ जिसमें मुझे कोई जाते न देख सके।" माँ ने इजाज़त दे दी, उसने समझा कि हमेशा की तरह लिज़ा किसी पड़ोस के गाँव में जानेवाली होगी। तड़के उठकर लिज़ा को जलपान कराया और उसके साथ-साथ नाव पर बिठाने गई। जब लिज़ा नाव पर सवार होने लगी तब उसने अपनी माँ को धोखे में रखना मुनासिब न समझ कहा—"माँ ! मैं जंगल में जा रही हूँ। वहाँ तकलीफें जरूर उठानी पड़ेंगी—ठंड और भूख का सामना भी करना होगा मगर मुझे जाना ज़रूरी है—मैं छापामामार लड़ाकों की टोली में शामिल हो चुकी हूँ।"

बूढ़ी माँ के पैरों तले से मानो ज़मीन निकल गई ! छापामार लड़ाके ! उफ़ ! उनके साथ शामिल होना मानों मौत को न्यौता देना है। माँ घबरा रही थी—लिज़ा ने कहा—"तुम छापाकार लड़ाकों के बारे में किसी से एक लफ्ज़ भी न कहना माँ !" वाकई हर बात छिपाना छापामार लड़ाकों की टोली का पहला कानून होता है। लिज़ा ने अपनी माँ को समझाया—"डरो मत माँ ! सिर्फ़ इतना याद रखो, अगर मुझको कुछ हो जाय, काश कि दुश्मन मुझको पकड़ ले या मैं उनके हाथों मार भी डाली जाऊँ और तुम मेरी लाश को देखो—तो भी कुछ न बोलना। ऐसा ज़ाहिर करना गोया कि तुम मुझे जानती भी नहीं।

यह कभी कबूल न करना कि मैं तुम्हारी लड़की हूँ नहीं तो जर्मन लोग हमारे समूचे गाँव को जलाकर खाक कर देंगे !" माँ तो मारे खौफ़ के काँपने लगी। लिज़ा की बातें सचमुच बहुत खौफ़नाक थीं। फिर भी बुढ़िया ने अपने को सम्हाला और बोली—"कितना अच्छा होता जो यह सब तुमने मुझसे न कहा होता बेटी ! बहुत अच्छा होता—लेकिन अब, जान-बूझकर तुम्हें मौत के मुँह में कैसे भेजूँ, तुम्हीं कहो ?" लिज़ा ने जवाब दिया—"मैं जानती हूँ कि तुम्हारा प्यार, तुम्हारी ममता मुझे रोकना चाहती है मगर वतन की पुकार सुनो माँ !" बुढ़िया रो रही थी, लिज़ा ने उसे गले लगाया और उसे सिसकती छोड़कर नाव में बैठ गई। नाव चल खड़ी हुई।

कुछ देर बाद लिज़ा अपने अड्डे पर पहुँच गई जहाँ छापामार लड़ाकों एक टोली का पड़ाव तथा, उस टोली का सरदार फ़िलीमोनोव नाम का एक रूसी नौजवान था। वह अपने साथियों से कह रहा था "छापामार लड़ाका बनना कोई मज़ाक नहीं। न रहने को घर, न खाने को अन्न और न पहनने को कपड़े—क़दम-क़दम पर मुसीबतों का सामना तुम्हें करना होगा। जंगलों में, नदियों की तरहटी में, सुरंगों में लुक-छिपकर तुम्हें गुज़र करना होगा। अगर तुममें से कोई भी ज़िन्दगी की इन सख्तियों को झेलने की ताकत न रखता हो, जो मुसीबतों से घबराता हो वह साफ़-साफ़ बतला दे और बेशक अपने घर लौट जाये, हम ज़ब्रिया किसी को अपने जत्थे में रखना नहीं चाहते, छापामार सिपाही भरती किए नहीं जाते बल्कि खुदबखुद आकर भरती होते हैं।"

जवाब में—कोई घर वापस लौटने को तैयार न हुआ, उस टोली के पास लड़ाई के हथियार, रसद और पोशाक वगैरा की भारी कमी थी, इसके अलावा बहुतों को लड़ाई का कुछ भी तजुर्बा न था, मगर फिली मोनोव और लिज़ा जैसे सरदारों को पाकर उनकी हिम्मत बढ़ी-चढ़ी थी, उनके दिलों में जोश था और वे कौम के सच्चे सिपाही थे, टोली के

सभी आदमी काम में लग गये, उन्होंने जमीदोज़ सुरंगें खोद डालीं और उन्हीं में रहने लगे। एक रेडियो भी उन लोगों ने इधर-उधर से सामान जुटाकर तैयार कर लिया। बाकी सामान और हथियारों का इन्तज़ाम भी वे लोग करने लगे। उनमें लगन थी, जोश था और वतन के दुश्मनों को मिटा देने का पक्का इरादा था।

छापामार लड़ाकों के उस जत्थे में वात्स्या नाम का एक कमसिन छोकरा भी था, जिसकी उम्र सिर्फ १५ साल की थी, लिज़ा की तरह वह भी बड़ा तेज, फुर्तीला और निडर स्वभाव का था। एक रोज, चाँदनी रात में वह और लिज़ा, दोनों दुश्मनों की टोह लेने के इरादे से चल पड़े। जंगल से बाहर आते ही उन्होंने आसमान में उँची-ऊँची आग की लपटें देखीं। लिज़ा समझ गई कि आसपास के गाँवों में जर्मनों ने आग लगा दी है। वह वात्स्या के साथ आगे बढ़ती चली गई। रास्ते में उसने टूटे-फूटे टैंक, जली हुई मोटर लारियाँ, मकानों के खँड़हर और बमों की मार से उजड़े हुए खेत-खलिहान देखे। सारी रात वे दोनों दुश्मनों की टोह लगाते रहे। सुबह होते ही उनको इंजनों की घरघराहट सुन पड़ी। वे समझ गये कि जर्मनों के टैंक आ रहे हैं। रास्ते के किनारे एक नाला था, इसके बाद, वहाँ हटकर जंगली दरख्तों के गिरोह में अपने को छिपाया। लिज़ा ने धीरे से कहा—"वात्स्या दौड़ जाओ और अपने जत्थे को फौरन खबर पहुँचाओ, जर्मन आ पहुँचे!" वात्स्या एक तरफ भाग चला।

लिज़ा ने कमर के थैले से पिस्तौल निकाल लिया और पेड़ों की आड़ से वह सड़क पर नज़र डालने लगी। इतने में उसे एक धड़ाके की आवाज सुनाई पड़ी। एक जर्मन अफसर मोटर साइकिल पर धूल उड़ाता हुआ तेज़ी से निकला और उसके पीछे-पीछे तीन टैंक, एक कतार बना कर आते दिखाई दिये। इतने में जाने क्या सोचकर मोटर साइकिल वाला जर्मन अफसर पीछे लौट पड़ा। लिज़ा ने गौर से देखा—वह टैंक

में बैठे हुये आदमियों से बातें कर रहा था। फौरन ही अफसर, टैंकों के साथ पीछे लौटने लगा। सड़क के किनारे होकर मैदान में वे लोग ठहर गये, शायद वहीं कुछ देर आराम करने का उन्होंने इरादा किया हो, दरख्तों और झाड़ियों की आड़ से लिज़ा उन लोगों की सारी हरकतें बड़े ध्यान से देखती रही और उसे हर घड़ी अपने साथियों के आने का इन्तज़ार था।

इतने में टैंकों के भीतर से जर्मनों ने शराब की बोतलें, कम्मल, तकिये और दस्तरखान निकाले जिनको बिछाकर वे घास पर बैठ गये। उनके पट्टीवाले अफसर के आगे एक दस्तरखान बिछा दिया गया। सबेरा हो रहा था—लिज़ा ने देखा कि वह जर्मन अफसर जो एक लंबा कद्दावर जवान था, अपनी वर्दी उतारकर गले में तौलिया लपेटे, पास के एक सोते की तरफ हाथ-मुँह धोने के इरादे से चला। इतने ही में वास्त्या लौट आया और उसने लिज़ा के कान में कहा—"वे लोग आ रहे हैं।"

वास्त्या को जर्मनों पर नज़र रखने के लिये कहकर लिज़ा पेट के बल रेंगती हुई जंगल के भीतर घुस पड़ी। काफी दूर तक आगे जाने पर उसने मुड़कर पीछे नजर डाली तो दरख्तों के सिवा और कुछ न दिखाई दिया। तब वह उठ खड़ी हुई। वक्त चूकना वह चाहती न थी। एक एक सेकेंड उसे बेशकीमती मालूम हो रहा था। उसने अपने जूते उतार डाले और नंगे पाँवों भागने लगी। कुछ ही मिनटों में वह एक टीले के ऊपर, घने बलूत के पेड़ की आड़ में पहुँचकर देखने लगी। यह टीला उस सोते के किनारे पड़ता था जिसमें हाथ मुँह धोने के लिए जर्मन अफसर को जाते हुए उसने देखा था। लिज़ा ने गौर किया तो सोते के दूसरे किनारे पर वह जर्मन अफसर साफ दिखाई पड़ने लगा। वह बड़े इत्मीनान से धूप खा रहा और सिगरेट पी रहा था। लिज़ा ने अपनी पिस्तौल निकालकर हाथ में ले लिया और इन्तज़ार करने लगी।

अभी मौका न था जरा देर बाद ही उसने शोर सुना—बन्दूकों की कड़क, इञ्जनों की गड़गड़ाहट और मोटर साइकिल का घर्राटा उसे सुनाई पड़ा। वह समझ गई कि उसके छापामार साथी आ पहुँचे और अपना काम कर रहे हैं। अब मौका था। लिज़ा की निगाह उस लम्बी टाँगोंवाले जर्मन अफसर पर लगी हुई थी। निशाना बाँधकर उसने पिस्तौल का घोड़ा दबा दिया—एक, दो! जर्मन अफसर यकायक उछल पड़ा मानों उसके पैरों के नीचे से जमीन खिसक गई हो। अपनी सिगरेट फेंककर वह दो-चार कदम दौड़ा फिर मुँह के बल जमीन पर गिर पड़ा। वह मर चुका था!

जिस गहरे-भूरे रंग के पिस्तौल से लिज़ा ने उस जर्मन अफसर को मारा था और उस जर्मन की वर्दी पर टँका हुआ "आयरन-क्रास" नाम का तमगा, दोनों चीजें मास्को शहर के "लाल चौरस्ते" पर बने हुए "हिस्ट्री म्यूजियम" में हिफाजत से रक्खी हुई हैं।

छापामार जत्थों की शोहरत आस-पास कौन कहे, दूर-दूर के गाँवों में भी पहुँच चुकी थी। किसानों को मालूम हो गया था कि जर्मनों की फौजी ट्रेनें उड़ा देने, पुलों को तोड़ने, और जर्मनों के पड़ावों को फूँक देने तथा लूट लेनेवाले लोग कौन हैं। इसीलिए वे लोग छापामार लड़ाकों को जर्मनों की खबरें पहुँचाया करते थे। इतना ही नहीं, जहाँ तक मुमकिन होता वे उन्हें, दूध, अंडे, बिस्कुट, मसाले, मक्खन और आटा भी दे जाया करते थे। वे जानते थे कि वतन की आजादी के लिए लड़नेवाले वे कमसिन लड़के-लड़कियाँ उनके अपने ही हैं।

एक दफा लिज़ा के जत्थे के कुछ आदमी खाने के सामान की तलाश में एक गाँव में पहुँचे। वहाँ जर्मनों ने पहले से ही अड्डा जमा रखा था। पहला शख्स तो छापामार लड़ाकों को दिखलाई पड़ा, एक बूढ़ा किसान था। उसने इन्हें देखते ही चुप्पी साध ली। कई दफा पूछने पर उसने जवाब दिया—"मैं जर्मनों या छापामार लड़ाकों में से

किसी को नहीं जानता। हम लोग तो काले आदमी हैं, रूसी नहीं। खेती बारी के अलावा और बातें हम क्या जानें ? आप लोग ज़्यादा जानते होंगे क्योंकि आप अखबार पढ़ते हैं।" सचमुच, जर्मनों ने अपनी करतूतों से उन गरीब गाँववालों पर ऐसी दहशत ग़ालिब कर रखी थी कि वे किसी से बातें करते भी घबराते थे। अपने पराये की पहिचान भी वे देर में कर पाते थे। काफी कोशिश के बाद छापामार टोली के वे जवान अपने बारे में उस बूढ़े को यकीन दिला सके तब जाकर कहीं उसने उनकी मदद की और खाने का सामान दिया। जिसे लेकर वे लोग जंगल में अपने अड्डे पर वापस चले आए। इसी बीच में, अपनी निजी हिम्मत, दिलेरी और जोश से लिज़ा ने अपने जत्थे पर काफी धाक जमा ली थी। टोली के सारे आदमी उसे इज्जत की निगाह से देखते और उसका अदब मानते थे।

सन् १९४१ का अक्टूबर महीना खत्म पर था। लिज़ा के जत्थे की दो लड़कियाँ और एक लड़का, दुश्मनों की टोह में साथ-साथ गए हुए थे। जब तीन रोज गुजर गए और वे वापस न लौटे तब लिज़ा घबड़ाने लगी। उसे यह अंदेशा होने लगा कि कहीं वे जर्मनों के हाथों में न पड़ गए हों। वैसे तो गाँव के ज़्यादातर बाशिन्दे छापामार लड़ाकों की मदद करते थे मगर उनमें दो-चार शख्स खुदगर्ज और दगाबाज भी निकल सकते हैं जो जर्मनों के धमकाने या लालच देने पर उनके जासूसों या भेदियों का काम करने लग गए हों। लिज़ा सोचने लगी कि ऐसे ही लोगों ने कहीं उसके तीनों साथियों को जर्मनों के हाथ पकड़वा दिया हो, तो क्या होगा ?

इतने में, टोली की दोनों लड़कियाँ तो लौट आईं मगर वह लड़का जिसका नाम फोकिन् था, नहीं लौटा। लड़कियों की जुबानी पता चला कि जर्मनों ने उन तीनों को गिरफ़्तार कर लिया था मगर वे दोनों तो चालाकी से भाग निकलीं लेकिन फोकिन् को उन्हें कुछ खबर न थी कि

उसका क्या हुआ ? जाने क्यों, लिज़ा, फोकिन् को बहुत चाहती थी और वह भी सगे भाई से बढ़कर उसे प्यार करता था। लिज़ा फिक्र में पड़ गई और ईश्वर से मनाने लगी कि किसी तरह फोकिन् सही-सलामत लौट आए।

एक महीने बाद, जत्थे के सरग़ना फिलीमोनोव और लिज़ा ने सब साथियों को इकट्ठा करके मशविरा किया और जर्मनों के कई अड्डों पर छापा मारा। काफी तादाद में राइफलें, मशीनगनें, हथगोले, बम और लड़ाई का सामान उनके हाथ लगा। इतना ही नहीं, बल्कि खाने-पीने की चीज़ें और रोजाना की ज़रूरियात का सामान भी वे लूट लाए। वे लोग कभी-कभी इकट्ठा होकर धीमी आवाज में अपने वतन का कौमी गीत गाते और नाचते भी थे। इसमें कोई शक नहीं कि उन बहादुर लड़कों लड़कियों की ज़िन्दगी जंगलों में गुजर रही थी, जिसके नतीजे में उनकी रहन-सहन, पहिनावे और सूरत शक्ल में काफी फर्क आ गया था मगर वे मुसीबतों और सख्तियों का सामना करते हुए खुश-हाल रहते थे। उनका दिल कौमी जोश से हमेशा बढ़ा ही रहता था।

नवम्बर का आधा महीना बीत चुका था, जब लिज़ा ने अपने मुल्क के सबसे बड़े नेता स्टैलिन का एलान छपे हुए पर्चे की शकल में पढ़ा उसमें बार-बार यही नारा बुलन्द किया गया था—"हमलावर जर्मनों को गारत कर दो !" रूस की हालत उस वक्त बड़ी नाजुक हो रही थी। जर्मनों ने तरह-तरह की झूठी ख़बरें और अपनी फतह की अफवाहें चारों तरफ उड़ा रखी थीं। उनके इश्तहार और पोस्टर जगह-जगह ऐसी ही गपों का एलान कर रहे थे। जर्मन अफ़सरान इधर-उधर ढिंढोरा पीट रहे थे—हमने मास्को शहर जीत लिया ! हमने फतह पाई ! सोवियट रियाया और किसानों में जर्मनों ने यह खबर फैला रखी थी कि वे लोग रूस में नए ढंग की हुकूमत कायम करने आए हैं, जिसमें रूसियों को बड़ा आराम रहेगा और उनका खयाल रखा जायगा। रूस के बाशिन्दों

को अपने माफिक बनाने में जर्मनों ने कोई कसर बाकी न रखी थी। रुपया पैसा, ज़मीन, जायदाद और इनाम का लालच देने से जब काम न बनता तब जोर-ज़बर्दस्ती की नौबत आती। जब उससे भी कोई नतीजा हासिल न होता तब गाँव के गाँव फूँक दिए जाते और जवान, बूढ़े, बच्चे, मर्द-औरत सबको क़त्ल कर दिया जाता। जर्मनों के जुल्मों से चारों तरफ हाहाकार मचा हुआ था।

लिज़ा ने गाँवों में घूम-घूमकर जर्मनों के एलानों का असली मकसद लोगों पर जाहिर करना शुरू कर दिया और उन्हें दुश्मनों की चालों से आगाह करने लगी। लिज़ा के इस काम की खबर जर्मनों तक पहुँची और उसे गिरफ़्तार करने के लिए वे जाल बिछाने लगे। मगर, खौफ किसे कहते हैं, यह तो लिज़ा जानती ही न थी। वह अपने जत्थे के सरदार और साथियों से रुखसत होकर अकेली चल पड़ी। रात में बरसाती नदियाँ, नाले और दलदलों को लाँघती-फाँदती वह बराबर आगे बढ़ती हुई एक सरहद के गाँव में पहुँची। गाँववालों को एक जगह इकट्ठा करके उसने ऊँची आवाज में उनसे कहा—

"सुना है तुमने अपने कौमी लीडर का एलान ? वह कहता है, हमलावर जर्मनों को गारत कर दो ! जहाँ पाओ, उन्हें खत्म कर दो। जला दो, फूँक दो, उन्हें खाने-पीने को कुछ न दो, छापामार लड़ाकों की इम्दाद करो, लड़ो और लगातार लड़ते जाओ। अपने वतन की ज़मीन पर ग़ैर कौम की हुकूमत बर्दाश्त करने के पहले तुम्हारे लिए मारना और मर जाना बेहतर है ! दुनिया को दिखला दो कि सोवियट रियाया सुर्खरू होकर ही जीना जानती है !"

कहना नहीं होगा, लिज़ा की तकरीर सुनकर गाँववालों के हौसले बढ़े और वे दुश्मनों के मुकाबिले के लिए तैयार होने लगे। इसी तरह पास-पड़ोस के हर एक गाँव और कस्बे में लिज़ा ने पहुँचकर वहाँ के बाशिन्दों में नई जान डाल दी। सूबे भर में चारों तरफ जर्मनों के

खिलाफ़ जिहाद का एलान हो गया। इसी दर्मियान लिज़ा को पता चला कि उसका साथी फोकिन्, जर्मनों के हाथों से बच निकला है और एक अपना छापामार जत्था बनाकर उनसे बराबर लड़ रहा है। एक गाँव में उसे खबर मिली कि जर्मनों ने फोकिन की गिरफ़्तारी के लिए पाँच हजार मार्क्स (जर्मन सिक्के) एक मकान, एक बाग और एक गाय इनाम देने का एलान कर रखा है। इतने से ही लिज़ा समझ गई कि फोकिन और उसके जत्थे ने वाकई जर्मनों की नाक में दम कर रखा है और दुश्मनों में दहशत समाई हुई है। पता लगाकर उसने फोकिन से मुलाकात की। दोनों, एक अरसे के बाद मिलकर बेहद खुश हुए मगर उनकी वह खुशी फर्ज के आगे गायब हो गई। लिज़ा को जाना पड़ा और वह फिर अपने काम में लग गई। उसने चन्द दिनों की कोशिश में ही और पंद्रह गाँवों का दौरा करके वहाँ के रहनेवालों को जर्मनों से लड़ने के लिए जोश दिलाया।

इसी अरसे में, एक रोज शाम को वह अपनी एक बचपन की सहेली मरुसिआ कुपोरोग से मिलने के लिए 'क्रासनोया' नाम के गाँव में दाखिल हुई। बद-किस्मती से वहीं तिनोफे, कोलोसोव नाम के एक शख्स ने, जो जर्मनों का भेदिया था, उसे देख लिया ! लिज़ा की नजर भी उस पर पड़ी मगर उस बेचारी को जरा भी शक न हुआ। वह न जानती थी कि उसी की कौम के लोग लालच में आकर उसके साथ दगा करेंगे। वह बदमाश, लिज़ा को मरुसिआ के मकान में दाखिल होते देखकर फौरन भागता हुआ जर्मनों के पड़ाव पर पहुँचा और उन्हें खबर दे दी !

बात की बात में एक अफसर की मातहती में जर्मन सिपाहियों के दो हथियारबन्द दस्तों ने आकर मरुसिआ का मकान चारों तरफ से घेरकर लिज़ा को गिरफ़्तार कर लिया। उन्होंने लिजा के जूते और ऊपरी कपड़े उतरवा लिए और से पाँव उपैदल अपने अड्डे की तरफ

ले चले। पड़ाव पर पहुँचकर जर्मनों के अफसर के सामने लिज़ा की पेशी हुई और उसने सवालात शुरू किए। लिजा की छापामार टोली का अड्डा कहाँ पर था ? उसमें कौन-कौन और कितने आदमी शामिल थे ? उन्होंने कहाँ-कहाँ लूट-मार की थी ? सब सवालों के जवाब में लिजा ने खामोशी अख्तियार कर रखी थी। मगर सवालात की झड़ी लगी रही ! खीझकर लिजा ने जोर से कहा—"दोजखी कुत्तो ! तुम सबके सब मर जाओ।" इतना कहकर उसने जर्मन अफसर के मुँह पर थूक दिया। जर्मनों ने चिढ़कर उसे सख्त सजा दी। तरह-तरह की जिस्मानी तकलीफें दीं मगर 'शुरा चेकालिन' की तरह लिज़ा भी बिल-कुल खामोश रही। न तो उसने आँसू गिराये, न उसने दया की भीख माँगी और न जिस्मानी तकलीफों का असर उसने अपने चेहरे से ज़ाहिर होने दिया। मरने की तो उसे परवाह ही न थी।

जर्मन अफसर बोला—"बस, हमें इतना बतला दो कि तुम्हारी छापामार टोली का अड्डा कहाँ पर है, फिर हम तुम्हारी जान बख्श देंगे !" लिज़ा ने कोई जवाब न दिया। तब उस जगह पर इकट्ठा हुए किसानों और गाँववालों से जर्मन अफसर ने लिज़ा की शिनाख्त करने को कहा मगर कोई न बोला। अफसर ने अपनी बात फिर दुहराई। इतने में गाँव की एक औरत, जिसका नाम अरिश्का क्रुग्लोवा था, आगे बढ़कर बोल उठी—"हाँ, यह छापामार लड़ाकों के जत्थे की सरग़ना है, मैं इसे जानती हूँ, अच्छी तरह पहचानती हूँ !"

जर्मन अफसर ने यह बात सुनकर अपने सिहाहियों को फ़ायर करने का हुक्म दिया। लिज़ा बोल उठी—"खुशी से—मैं तैयार हूँ, आगे बढ़ो जल्लादो ! गोलियाँ चलाओ !"

गोलियों की एक बाढ़ सनसनाती हुई लिज़ा के सिर के ऊपर से निकल गई मगर उसे जरा भी चोट न आई। जर्मन अफसर ने उस बहादुर लड़की को पस्त हिम्मत और खौफ-जदा करने के खयाल से यह

चाल खेली थी। वह सोचता था कि शायद ऐसा करने से वह अपने जुर्म का इकबाल कर ले। उसने लिज़ा से फिर सवालात किए मगर उसे कामयाबी न मिली। उसकी चाल बिलकुल बेकार गई। इतना ही नहीं बल्कि इस वाकये से दुश्मनों को अपना कोई भी राज़ न बतलाने का इरादा लिज़ा के दिल में और भी पक्का हो गया। वह जोरों से चिल्ला उठी—"हमलावर जर्मन गारत हों—उनका सत्यानाश हो!" जर्मन अफसर चिढ़ गया, उसने अपने सिपाहियों की तरफ देखा और हुक्म दिया—"फ़ायर!", इस मर्तबा कई गोलियाँ एक साथ लिज़ा के बदन में लगीं—उसने जुबान से उफ़ तक न की। अपना सिर हिलाकर वह जोर से चिल्लाई—"मैं अपनी कौम के लिए मर रही हूँ।" इतने में गोलियों की तीसरी बाढ़ छूटी और लिज़ा की लाश ताजी बरफ़ के बिछौने पर गिर पड़ी!

जिन लोगों ने इस बहादुर लड़की की क़ुर्बानी का नज़्ज़ारा अपनी आँखों देखा था, उनका कहना है कि मरते दम तक अपने वतन और कौम का नाम उसकी जुबान पर था। सच पूछा जाय तो मरकर ही वह अमर हो गई!

अगले रोज जब टोली के दूसरे साथियों को लिज़ा की मौत की खबर मिली तो वे इन्तक़ाम लेने के लिए पागल हो उठे। उसी दम उन लोगों ने उस दग़ाबाज़ रूसी के लिए मौत की सजा तजवीज़ की जिसने लिजा को जर्मनों के हाथों पकड़वा दिया था। साथ ही, उस औरत को भी खत्म कर देने का फ़ैसला कर डाला, जिसने जर्मनों के सामने लिज़ा की शिनाख्त की थी। रात होते ही, छापामार लड़ाकों की हथियार-बंद टोली अपने अड्डे से निकल पड़ी और सुबह होते न होते पूरे ग्यारह गाँव जिनमें जर्मनों ने पड़ाव डाल रखा था, चारों तरफ़ से जलते हुए दिखाई देने लगे। मगर अभी उनका इन्तक़ाम पूरा नहीं हुआ था।

टोली के कुछ आदमी तिमोफ़ेकोलोसोव के घर पहुँचे, उसे पकड़ा, जंगल में ले गए और गोली मार दी। बाद में उन्होंने अरिश्का-क्रुग्लोवा के गाँव में दाखिल होकर उसे भी कुत्ते की मौत मारा फिर उसकी लाश घसीटकर एक खेत में फेंक दी। पूरे सत्रह रोज़ तक लिज़ा के जत्थे नौजवान जर्मनों के हाथों लिज़ा की लाश छीनने की कोशिश करते रहे, खूब लड़े और अपने कई साथियों की कुर्बानी दी मगर उन्हें कामयाबी न मिल सकी। वजह यह थी कि जर्मनों ने उनके हमलों के हमले के अन्देशे से पहले ही दूसरे इलाकों से काफ़ी फ़ौज बुलाकर वहाँ किलेबन्दी कर रखी थी।

अट्ठारहवें दिन, उन बहादुर रूसी नौजवानों ने जर्मनों की फौज पर ज़बरदस्त छापा मारा और उनसे लिज़ा की लाश छीन ले गये। उसे जंगल में लेजाकर फ़ौजी इज़्ज़त के साथ दफनाया गया।

उसी दिन से लिज़ा, जिसका पूरा नाम लिज़ा आइवनओवनाचैकिना था, वतन के शहीद के नाम से सारे देश में पूजी जाने लगी। उसकी क़ब्र भी, शुरा चेकालिन की क़ब्र के मानिन्द एक कौमी मक़बरे की सूरत में बनी, जिसके आगे बहादुर सोवियट रूस के मर्द-औरत, बूढ़े-बच्चे सभी सिर झुकाना अपना फर्ज समझते हैं।

क़ौमी शहीद ज़ोया

रूस की राजधानी, मास्को के इर्द-गिर्द कई छोटे कस्बे और गाँव हैं। उन्हीं में 'पेत्रिश्तशेवो' नाम का एक कस्बा लड़ाई के जमाने में काफ़ी शोहरत पा गया। ज़ोया एक लड़की थी—इसी कस्बे के एक परिवार में उसने जन्म लिया। अभी अपनी उम्र के १८ साल भी उसने पूरे न किये थे कि उसके मुल्क पर जर्मनों के हमले होने लगे। वह स्कूल में पढ़ती थी। पढ़ाई से बढ़ कर वतन और क़ौम का फर्ज सामने आ पड़ा। किसानों के उस परिवार ने भी औरों की तरह दुश्मनों का सामना करने की तैयारी करली और ज़ोया ने सबसे पहले।

ज़ोया, अपने स्कूल की अच्छी लड़कियों में गिनी जाती थी—ज़हीन और पढ़ने-लिखने में सबसे तेज। वह समझदार भी थी। वह तरक्की करना चाहती थी इसीलिए उसने पढ़ने-लिखने में मन लगाया था मगर जब मुल्क की हिफाजत का सवाल आ पड़ा, तो उसने भी सब कुछ छोड़ कर अपना फर्ज अदा करने का फैसला कर डाला। पहले से ही, वह रूस के बहादुरों और शूरमाओं की कहानियाँ इतिहास में पढ़ा करती थी और उनकी जिन्दगी से सबक लेती थी। वह भी उन्हीं जैसी बनना चाहती थी। वतनपरस्ती का जोश उसके दिल में बचपन से ही पैदा होगया था। जो मौका आने पर उभर पड़ा। वतन और कौम की आजादी पर मर मिटने वाले वीरों के संदेश उसे याद हो गए थे! उसकी स्मरण-शक्ति बड़ी तेज थी।

ज़ोया ने लड़ाई में शामिल होने का पक्का इरादा कर लिया। उसकी माँ उसे अपने से जुदा करना नहीं चाहती थी मगर ज़ोया उसे



दरिया आमूर में जहाज़ चलानेवाली रूसी औरतें

एक जहाज़ की कप्तान सावशिको और उसकी नायब ग्रीसीना की यह तसवीर है।



एक नर्स की बहादुरी

सेवैस्टोपोल के एक अस्पताल की नर्स लैटलेवा ने रूस के जंगी बेड़े में काम करनेवाले १२१ ज़ख्मियों की जानें बचाईं।



लड़ाई चल रही है, मगर योरोशिलोव के इलाके में इस मेलिका सामादोआ की तरह बहुतेरी किसान औरतें हैं, जो कपास पैदा करती रहती हैं, क्योंकि वतन के सिपाहियों को कपड़ा भी तो चाहिए।



किसान औरतों का यह जत्था खेतों में काम करने जा रहा है। अनाज पैदा करना ज़रूरी है, जिससे वतन के सिपाहियों को बराबर खाना मिलता रहे।

मना-दनाकर। एक रोज छापामार लड़ाकों के अड्डे पर पहुँच ही गई। अड्डे के सरदार ने ज़ोया की तरफ बड़े ग़ौर से देखा। वह लंबे क़द की, तंदुरुस्त और खूबसूरत लड़की थी, सरदार ने उससे पहला सवाल किया—

"तुम्हें डर नहीं लगता ?"

ज़ोया ने जवाब दिया—"डर कैसा ?" सरदार बोला—

"मेरा मतलब है, तुम्हें बीहड़, सुनसान जंगलों में रहना पड़ेगा, तमाम तकलीफें बरदाश्त करनी होंगी, हम लोगों की ज़िन्दगी आसान नहीं।"

"मैं खुशी से बरदाश्त करूँगी, जैसी भी गुजरेगी।"

"अगर जर्मन तुम्हें पकड़ लें और बेतरह जिस्मानी तकलीफें दें।"

"मैं उन तकलीफो को भी बरदाश्त कर लूँगी मगर अपना या अपने साथियों का नाम—पता हरगिज़ न बताऊँगी, चाहे जान चली जाय।"

सरदार को इत्मीनान हो गया, लड़की सचमुच दिलेर है, बस उसे टोली में भर्ती कर लिया गया और उसका नाम बदलकर तान्या रख दिया गया। ज़ोया की माँ को भी इस नाम की बदली का कुछ पता न चल सका।

जाड़े का मौसम शुरू हो गया ! हल्की बर्फ़ गिरने लगी। जंगल में जहाँ पर छापामार लड़ाकों की इस टोली का अड्डा था, वहाँ पानी मिलना दुश्वार हो गया। एक रोज ज़ोया पानी की तलाश में जंगल के भीतर कुछ दूर निकल गई। यकायक उसका पैर एक गढ़े में चला गया। वह सोचने लगी कि यह किसी जंगली जानवर की माँद है, जर्मनों की बनाई हुई खाँई है या किसी छापामार टोली की खोदी हुई सुरंग है ! उसने फ़ौरन वापस आकर अपनी टोली को इत्तिला दी। उन लोगों ने जाकर देखा तो मालूम हुआ कि वह गढ़ा जर्मनों ने अपने छिपने के लिए खोद रखा था और किसी वजह से उसे छोड़कर भाग गये थे। गढ़े के अंदर उन लोगों को खाने-पीने का काफ़ी सामान मिल गया जो जर्मन छोड़ गए थे। फिर क्या था, छापामार लड़ाकों ने उस पर अपना

क़ब्ज़ा जमाया और उसी गढ़े में छिपकर रहने की ठानी। ज़ोया, उन लोगों को खाना पकाकर खिलाती और हर तरह से आराम पहुँचाने की कोशिश करती। कुछ ही दिनों में अपने साथियों और साथिनों के दिलों में ज़ोया ने घर कर लिया और वे उसे इज्ज़त की नज़र से देखने लगे। वहाँ से ज़ोया ने अपनी माँ को अपनी ख़ैरियत के दो खत लिखे। माँ उसका इन्तजार करती रही कि शायद ज़ोया किसी दिन उसे देखने आए मगर हमेशा उसे मायूस होना पड़ा। ज़ोया तो अब दूसरे ही काम में लगी हुई थी।

वे दिन मास्को के लिए बड़े ही संकट के दिन थे। १६ नवंबर को जर्मनों ने जबर्दस्त हमला किया। उनके पीछे, छापामार लड़ाकों की कई टोलियाँ थीं जो उनको हर तरह से नुकसान पहुँचा रही थीं। छापामार लड़ाके टेलीफ़ोन के तार काट देते, पुल उड़ा देते, मोटरें और लारियाँ तोड़-फोड़ डालते और मौका मिलने पर जर्मनों के समूचे दस्तों का सफ़ाया कर डालते। जर्मनों ने पेत्रिश्तशेवे कस्बे में अड्डा जमाया। वे काफी तादाद में वहाँ पड़ाव डालकर जम गए। कोई घर ऐसा न बचा जिसमें जर्मन न हों। ज़ोया ने जब यह हाल सुना तो बोली—"मैं भी देखूँगी कि उनका पड़ाव कब तक रहता है!"

कुछ कम उम्र के छापामार लड़ाकों को साथ लेकर ज़ोया जर्मनों के पीछे जा पहुँची। उसने काफ़ी सामान लूट लिया, पुल तोड़ दिये और टेलीफ़ोन के तार काट दिये। दिन-भर वे लोग जंगलों में छिपे रहते और रात के वक्त अपना काम करते थे। भूख, प्यास, सब कुछ बरदाश्त करके भी उन्होंने जर्मनों को नुकसान पहुँचाने में कसर न रखी। अपने अड्डे पर वापस जाने का जब वक्त आया तो ज़ोया ने जाने से इनकार कर दिया। वह बोली—मैं तो कस्बे के अन्दर जाऊँगी और कम से कम दस जर्मनों को मार लूँगी तब मुझे चैन पड़ेगी। भले ही मेरी जान पर आ बने मगर इतना काम तो मुझे करना ही है।"

ज़ोया का पक्का इरादा देखकर उसके दस साथी भी उसके हमराह जाने को तैयार हो गए। वतन के दुश्मनों से बदला लेने की आग उनके दिलों में भी भड़क रही थी। अँधेरी रात में, सबके सब कस्बे में घुसे। और लोगों को देख-भाल व पता लगाने के लिए पीछे छोड़कर अकेली ज़ोया आगे बढ़ी थोड़ी देर बाद जब वह अपने साथियों के पास वापस लौटी तो उन लोगों ने देखा कि कस्बे के कई मकानात धाँय-धाँय कर जल रहे थे। ज़ोया ने इतना ही नहीं किया बल्कि उसने टेलीफ़ोन के तार भी जगह-जगह काट दिये थे जिसमें कस्बे में टिके हुए जर्मन अपनी हालत की इत्तिला दूसरी छावनियों में न भेज सकें। शाम को भेदियों के ज़रिये ज़ोया को पता मिला कि उसकी लगाई हुई आग से जर्मनों का ज़्यादा नुकसान नहीं हुआ। सिर्फ़ उनके रहने के कुछ मकानात जल गए। कोई दुश्मन मरा या नहीं, इसकी इत्तिला न मिल सकी। इतने से ही ज़ोया ने अपनी नाकामयाब समझी। वह चिढ़कर फिर कहने लगी—"मैं दुबारा जाऊँगी!"

टोली के सरदार ने उसे बहुत समझाया कि दुश्मन चौकन्ने हो गये हैं, अभी जाना ठीक नहीं, दो-चार रोज बाद फिर कोशिश करना मगर जोया अपनी ज़िद न छोड़ सकी। मरने का तो उसे ख़ौफ़ ही न था। सब साथियों से बिदा माँगकर अगले रोज वह फिर रवाना हो गई। एक और लड़की, जो उसकी टोली में थी, साथ हो ली मगर ज़ोया ने आधी दूर जाने के बाद उसे वापस भेज दिया। पहिली दफ़ा वह जिधर से गई थी, उसी रास्ते से वह कस्बे में फिर दाखिल हुई। चारों तरफ़ अँधेरा था—पहरेदार या संतरी, एक भी नज़र न आता था। ज़ोया, चुपचाप आगे बढ़ती गई। उसे ख़बर मिली थी, कुछ दूर पर एक अस्तबल है जिसमें जर्मनों के दो सौ घोड़े बँधते हैं। बस, वही उसका निशाना था। उधर ही वह चली जा रही थी। अपनी पिस्तौल निकाल कर उसने हाथ में ले ली मगर कोई ख़तरा न देखकर उसे फिर जेब में

छिपा लिया। अस्तबल के पास पहुँचकर उसने शीशी में रखा हुआ बेन्ज़ाइन निकाला (जो आग जल्द लगा देता है) और उसे इधर-उधर से लकड़ियाँ इकट्ठी कर उनके ऊपर गिरा दिया। फिर उसने दियासलाई जलानी चाही। दियासलाई की तीली टूट गई। ज़ोया ज्योंही दूसरी तीली जलाना चाहती थी त्योंही किसी ने पीछे से आकर उसे पकड़ लिया।

हमला करनेवाले को जोर से पीछे ढकेलकर ज़ोया ने पिस्तौल निकाल ली मगर घोड़ा दबाने का उसे मौका ही न मिला—उसके हाथ पर चोट पड़ी और पिस्तौल दूर जा गिरी। जर्मनों ने उसे बेक़ाबू करके उसकी मुश्कें कस दीं। ज़ोया गिरफ़्तार हो गई।

गिरफ़्तारी के बाद जर्मनों ने उसे डराया, धमकाया, तरह-तरह की जिस्मानी तकलीफ़ें पहुँचाई, इनाम और माफ़ी का लालच भी दिया मगर उनके लाख पूछने पर भी ज़ोया ने अपना और अपनी छापामार टोली के साथियों का नाम, पता, ठिकाना कुछ न बताया। वह जर्मनों को धिक्कारती और उन पर थूकती थी। उसके कोड़े लगाए गये। बेरहम दुश्मनों ने उसे मारते-मारते अधमरा कर दिया मगर ज़ोया की ज़ुबान न खुली। लाचार होकर एक दिन सुबह, जर्मनों ने ज़ोया को उसी क़स्बे के एक चौराहे पर फाँसी दे दी। मरते वक्त भी ज़ोया की ज़ुबान से यही निकला—"भाइयो! बहनो! लड़ो, खूब लड़ो, दुश्मनों का नामो-निशान वतन की ज़मीन से मिटा दो! स्टालिन हमारे साथ है!!"

पाँच दिसंबर को इस वतन-परस्त लड़की ने अपनी क़ुर्बानी दी। तीन हफ़्ते तक उसकी लाश फाँसी पर लटकती रही। जर्मनों ने किसी को उसमें हाथ न लगाने दिया। मगर आख़िरकार क़स्बे के बाशिन्दे बिगड़ उठे। उन्होंने ज़ोया की लाश फाँसी से उतारकर एक अच्छी जगह दफ़नाई, और उस पर फूल चढ़ाये! रूस की तवारीख़ में ज़ोया का नाम अमर हो गया है!

तीन दिन

एक रूसी अख़बार के युद्ध-संवाद-दाता मि० ए० पोल्याकोव की डायरी से, छापामार लड़ाकों की एक टोली के तीन दिन के कारनामों का हाल हम नीचे दे रहे हैं। डायरी में लिखा है:—

जुलाई १४

नाज़ियों के पीछे के इलाक़े में काम करते हुए हमें २० रोज़ हो चुके हैं। कितने ही जर्मन-फ़ौजियों को हमने मार डाला, उनकी रसद और लारियाँ बर्बाद कर दीं और मौक़ा पाकर उन्हें ख़ूब परेशान किया है। वे होशियार हो गए हैं और हमारे अड्डे के चारों तरफ़ उन्होंने नाके-बंदी कर दी है। बाहरी दुनिया से हम लोग इस वक्त बिलकुल अलग हो चुके हैं। हमारे पास रेडियो भी नहीं है। हमें कुछ पता नहीं कि लड़ाई कहाँ पर हो रही है या उसका रुख़ कैसा है? हमें अपनी हद के आगे की कुछ भी जानकारी हासिल नहीं हो पाती। शायद, हमारे दूसरे साथियों ने हमें मुर्दा या जर्मनों का क़ैदी समझ लिया हो। हम लड़ाई की ख़बरें सुनने के लिए बेचैन हैं। हमारे भेदिये बड़ी कोशिश में हैं कि कहीं से एक रेडियो-सेट दस्तयाब हो सके। पास के एक गाँव में नाज़ियों ने एक स्कूल के मास्टर और उसके बीवी-बच्चों को गोली मार दी है, महज़ इसलिए कि उसके घर में एक रेडियो निकल आया जिस पर मास्को की ख़बरें सुनी जा सकती थीं।

हम लोग एक घने जंगल में पड़ाव डाले हुए हैं। हमारे भेदिये, जिनके नाम लिडोव और पार्मा हैं, अभी-अभी ख़बर लाए हैं कि यहाँ

से दो मील पर एक गाँव में जर्मनों ने अड्डा जमा लिया है और चारों तरफ़ दुश्मन के सिपाही ग़श्त लगा रहे हैं। हमारे कमांडर ने पूछा—"और क्या ख़बर है ?" लिडोव ने जवाब दिया—"कोई ख़ास नहीं—सिवाय इसके कि एक छोटी-सी लड़की नदी के किनारे कपड़े धो रही है।" कमांडर ने कहा—"उसे फ़ौरन यहाँ बुला लाओ, उससे जर्मनों की फ़ौज के बारे में पूरी-पूरी इत्तिला मिल जायगी।"

भेदिये वापस गये और पानी में उतरकर उस लड़की के क़रीब पहुँचे। उनकी आहट पाकर लड़की उठी और दो दरख्तों में बँधी हुई अलगनी पर जल्दी-जल्दी कपड़े फैलाने लगी। लिडोव ने अपने साथी के कान में कहा—"यह दुश्मन की जासूस जान पड़ती है—कहीं उनको इशारा तो नहीं रही है ?"

पार्मा ने डाँट कर उस लड़की से पूछा—

"तू यहाँ क्या कर रही है ?"

लड़की ने उन्हें पहिचान लिया था। उसने जवाब दिया—

"साथियो ! लाल-फ़ौज के सिपाहियो !! यहाँ मैंने एक रेडियोसेट छिपा रखा है !" उसकी बात सुनकर पार्मा ख़ुशी से उछल पड़ा और बोला—

"रेडियोसेट ! कहाँ है ?"

"यहीं पर, यह अलगनी ही तो उसका एरियल है। फैले हुए कपड़े नीचे उतार लो, नहीं तो कुछ भी सुनाई न देगा।"

लिडोव ने तार की अलगनी पर से सब कपड़े उतार लिए। कपड़ों की टोकरी के पास, दरख्त की छोटी-छोटी टहनियों से छिपाया हुआ एक छोटा सा रेडियो-सेट दिखाई दिया ! पार्मा ने ताज्जुब से कहा—"कितनी होशियार लड़की है !" उसका नाम लूस्या था, उम्र १३ साल की थी। वह एक फ़ौजी डाक्टर की लड़की थी। गाँव पर जब जर्मनों का क़ब्ज़ा होने लगा तो उसके बाप ने नदी के किनारे किसी जगह

रेडियो छिपा देने की बात उससे कही थी। रोज़ाना कपड़े धोने वह उस जगह आती थी और अलगनी की जगह पर एरियल का तार बाँधकर लड़ाई का सारा हाल रेडियो के ज़रिए सुन जाती थी जिसे वह गाँव के बूढ़ों और बच्चों को वापस जाकर सुनाया करती थी। शक्ल-सूरत से वह लड़की बड़ी समझदार, तेज़ और जहीन जान पड़ती थी।

रेडियो-सेट और उस लड़की, लूस्या को साथ लिए हुए हमारे दोनों भेदिये कैम्प में वापस आए। वे बड़े ख़ुश थे। फ़ौरन ही हमारे कमांडर व दूसरे साथियों ने उस बेचारी को चारो तरफ़ से घेर लिया और सवालात की झड़ी लगा दी। लूस्या ने कहा—"हमारा रेडियो-सेट बहुत बढ़िया है, देखो, मैं इसे चलाकर बताती हूँ।" वह घास पर बैठ गई और रेडियो खोल दिया। थोड़ी देर तक सीटी और चट-ख़ारियाँ बजीं फिर वही पुराने पहिचाने हुए अलफ़ाज़ सुनाई दिये—"मास्को से बोल रहे हैं। अब हम अपना पिछला एलान दोहराते हैं....."

यकायक रेडियो ख़ामोश हो गया। हम लोग चिल्ला उठे—"जल्दी—जल्दी से मिलाओ!" मगर फिर हमें लाख कोशिश करने पर भी सिवाय सीटियों के और कुछ न सुन पड़ा। हम लोग आधे घंटे तक इंतज़ार करते रहे.....दो घंटे बीत गए.....रात होने को आई, मगर हम लकड़ी के उस चौकोर बक्स को बड़ी उम्मीदों से ताकते बैठे रहे। आख़िरकार लूस्या ने कहा—"अब आज आप लोग कुछ न सुन सकेंगे!"

जुलाई १५

सुबह होते ही सब साथी रेडियो को फिर घेरकर बैठे। लूस्या उसकी चाभियाँ घुमाने लगी। यकायक जंगल के सन्नाटे को तोड़ती हुई एक साफ़ आवाज़ गूँज उठी—"हम मास्को से बोल रहे हैं। अब आप

सारे मुल्क में दुश्मन के पीछे बराबर जारी रहनेवाली छापामार लड़ाकों की ज़बरदस्त जंग के बारे में "येमेल्यान यारोस्लावस्कीं का लिखा हुआ मज़मून सुनेंगे !" हमने उस पुराने रेडियो से आता हुआ एक-एक लफ्ज बड़े ध्यान से सुना। रेडियो से आवाज़ आने लगी—"३ जुलाई को स्टालिन ने रेडियो पर अपनी तक़रीर में सोवियट रूस के तमाम बाशिन्दों को दुश्मन की हस्ती मिटा देने में अपनी सारी ताकत लगा देने के लिए ललकारा है।" तो इसका मतलब यह निकला कि स्टालिन ने लोगों को संदेश दिया सिर्फ हम लोग उसे सुनने से महरूम रहे ! उन्होंने जुदा-जुदा हर एक जत्थे को बतलाया कि सड़कें और पुल तोड़ दो, तार और टेलीफ़ोन के तार काट दो, जङ्गलों, गोदामों, सवारियों को फूँक दो, ऐसी हालत पैदा कर दो नाज़ियों के बर्दाश्त के क़ाबिल न रहे। उन्हें ढूँढ़-ढूँढ़कर मार डालो, उनका नामो-निशान मिटा दो !

जङ्गल के सन्नाटे में, सबेरे-सबेरे ये अलफ़ाज़ गूँज उठते हैं ! हमारे थके हुए, मुसीबत-ज़दा, साथियों के चेहरों पर एक नई रोशनी दिखाई दे रही है—उनके अन्दर धीरज और हर आफ़त का सामना करने की क़ूबत पैदा हो रही है—मर्दों की तरह वे पाक क़समें खा रहे हैं। जब रेडियो पर एलान करनेवाला चुप हो गया, तो हमारे मन में यही आया कि इसी दम चिल्लाकर हम उसे सुना दें कि "ऐ मेरे साथी ! हम यहाँ पर फ़लाँ जंगल में पड़े हुए हैं। मास्को में ख़बर कर दो, हमारे भाइयों को बतला दो कि जब तक हमारे बदन में ख़ून का एक क़तरा भी बाक़ी रहेगा हम नाज़ियों का नामो-निशान मिटा देने के लिए बराबर लड़ते रहेंगे !"

जुलाई १६

आज हमारे कैम्प की सदर चौकी पर एक लम्बे क़द का बूढ़ा

आदमी, जिसके हाथ में छाता था और जो चश्मा लगाए था, लाया गया। पोशाक से वह किसी तार-घर का मुलाज़िम जान पड़ता था शिनाख्त के कोई काग़ज़ात उसके पास नहीं निकले। उससे दरियाफ्त किया गया कि वह कौन था। उसने जवाब दिया—"मैं इसी क़स्बे के तार-घर में मिस्त्री का काम करता हूँ।"

"तुम यहाँ कैसे आये ?"

"मैं आप लोगों को यह खबर देने आया था कि जर्मन लोग कस्बे के अन्दर नहीं बल्कि उसके इर्द-गिर्द बैरकों में रह रहे हैं। उनकी तादाद भी कुछ ऐसी ज़्यादा नहीं है। वे आगे बढ़ते हुए डरते भी हैं। आज तीन दिनों से वे आस-पास फिर रहे हैं। दूकानों और मकानों में झाँकते फिरते हैं। इसी तरह उनका वक्त कटता है। आम चौराहों पर उन्होंने लोगों को गोलियों से उड़ा दिया है। हमारे यहाँ टेलीफ़ोन पर एक लड़की काम करती थी, उसे भी उन्होंने गोली मार दी। वे तुम जैसे लाल फौज़ के आदमियों की तलाश में हैं।"

"क्या तारघर में कोई नहीं है ?"

"नहीं, जर्मनों ने उसपर भी कब्ज़ा कर रखा है।

क्या हम लोग इस बूढ़े का यकीन कर सकते हैं ? यह कौन—इसे नाज़ियों ने तो नहीं भेजा हैं ? लेफ़्टीनेन्ट कोरोबोव की टोली के भेदिये अभी कस्बे का हालचाल लेकर लौट रहे हैं। कस्बा यहाँ से साढ़े चार मील के फ़ासले पर है। उनके बयान से भी इस बूढ़े की खबर सच मालूम होती है। इसी भेद लेनेवाली टोली का सार्जेण्ट मेजर सेलिन, कस्बे के कोने-कोने से वाकिफ़ है। हमने उसकी बूढ़े से मुलाकात कराई तो दोनों ने एक-दूसरे को झट पहिचान लिया, हमारा शुबहा दूर हो गया।

हमारे कमाण्डर ने फैसला किया "वे लोग हमारी तलाश में हैं—अच्छी बात है, हम उन्हें खुद ही खोज लेंगे। उनको मुनासिब तोहफ़े

पेश किये जायेंगे—ज़रा रात हो जाय—तब।" चिराग़ जले हम लोग अपने जंगल के कैम्प से निकल पड़े। लेफ़्टीनेन्ट याकोवलेव की टोली के साथ दो छोटी तोपें भी हैं, उसे हमने पीछे रखा है। उन्होंने पहाड़ी के ऊपर घनी झाड़ी के पीछे तोपें जमा दी हैं, सबसे ज़रूरी जगह पर उन्होंने तोपों का निशाना सबसे पहले बाँध लिया है। तोपों के मुँहों की सीध में इस वक़्त चार बड़ी-बड़ी तिमंजली बैरकें हैं जिनमें जर्मन भरे हुए हैं। हमले की पूरी तैयारी हम लोगों ने कर ली है।

"फ़ायर!"

तोपों की पहली बाढ़ छूटी और बैरक की एक इमारत की नीचेवाली खिड़कियाँ उसका निशाना बनीं। धड़ाका साफ़ सुनाई दिया। दीवालें हिल गईं और कोई चीज़ इमारत के भीतर जोर से फट गई। फिर हमारी तोपें जर्मनों के पड़ाव की दूसरी इमारतों को अपना निशाना बनाने लगीं। उन लोगों में गड़बड़ी मच गई। चिल्लाते हुए नाज़ी सिपाही दुमंजिलों-तिमंजिलों की खिड़कियों से नीचे फाँदने लगे। जलती हुई बैरकों और गोदामों के बीच से घबराये हुए वे इधर-उधर भागते दिखाई दे रहे थे। उसी वक्त याकोवलेव की टुकड़ी ने हमला कर दिया। नाजी लोग भाग-भागकर पास-पड़ोस के मकानों में पनाह लेने लगे और न जाने क्यों उन लोगों ने गोलियाँ नहीं चलाईं। बाद में पकड़े हुए क़ैदियों से पता चला कि जर्मनों ने कस्बे वालों को लूटकर इस क़दर सामान इकट्ठा किया था कि उसको बचाने की फ़िक्र उनको सबसे ज़्यादा थी।

हमारे हमले से नाजी इतना घबरा गये कि वे अपनी रसद की गाड़ियाँ, टैंक, तेल, तोपें, राइफ़लें, खाने-पीने का सामान वग़ैरा सब कुछ छोड़ भागे। अपनी खास चीज से बहुत पीछे रहकर वे बड़े इत्मीनान से थे। हमारे आदमी टार्चों की रोशनी से जर्मनों की एक गाड़ी की तलाशी लेकर उसे फूँकने लगे। हमारे तोपचियों ने जर्मन

तोपों से घोड़े निकालकर उनको बेकाम कर दिया। एक घंटे के अन्दर हम लोगों ने दुश्मनों के सारे कैम्प को तबाह और बर्बाद कर डाला। तारों चरफ़ आग की लपटें उठने लगीं।

हमारे जत्थे के कुछ आदमी तारघर और बिजलीघर को बेकार कर देने के लिये कस्बे के अन्दर घुसे, तारघर के उस बूढ़े मुलाजिम के साथ सेलिन, कुछ साथियों को लेकर तारघर की तरफ़ चला, सेलिन ने कहा—"जल्द चलो, तारघर कहाँ है, बतलाओ ?"

"वह है—दाहिनी तरफ़ से तीसरी खिड़की !"

सेलिन के आदमियों ने ताबड़तोड़ उसी खिड़की के रास्ते कई हथगोले इमारत के अंदर फेंक दिये। बात की बात में एक धड़ाके के साथ समूची तारघर की इमारत हवा में उड़ गई, अचानक वह बूढ़ा चिल्ला उठा

"वह देखो—वही है ?"

एक आदमी ढीली ढाली पोशाक पहिने, हाथ में बड़ा सा पिस्तौल लिये बाहर निकला और सड़क पर भागने लगा। बूढ़े ने कहा—

"यही है वह शख़्स—वह अफ़सर जिसने चौराहे पर कस्बे के कितने ही आदमी-औरतों को गोली से उड़ा दिया है।"

पिस्तौल छूटने की एक आवाज़ आई और भागनेवाला शख़्स लड़खड़ा कर गिर पड़ा। हमारे आदमी उसपर झपटे तो देखा कि कपड़ों के नीचे वह जर्मन अफ़सर की वर्दी पहने हुये था ! सेलिन बोला—"ठीक तो है वही शख़्स था !"

इस दर्म्यान हमारे जत्थे के लोग दुश्मनों का गोला-बारूद समेटने में जुट गये थे। अफ़सोस है कि हम लोग उस वक्त यह न गिन सके कि हमारे हमले से कितने जर्मन मारे गये, उनकी तादाद कई सौ तक ज़रूर पहुँची होगी। हमारे जत्थे के पाँच आदमी मरे और तीन जख्मी हुए। नाजी लोग मुमकिन है होश में आने पर अपना दल

इकट्ठा करके हमला करें मगर तब तक हम लोग नौ दो ग्यारह होजायेंगे, सेलिन ने तारघर के बूढ़े मुलाज़िम से पूछा—"हमारे साथ चलोगे।" उसने सिर हिलाकर इन्कार कर दिया, उसकी आँखों में आँसू भर आए थे, वह बोला—"मैं कमज़ोर और बूढ़ा हूँ, क्या कर सकूँगा तुम्हारा काम ? मुझे यहीं रहने दो, मैं जानता हूँ कि हमारे और सिपाही भी यहाँ आयेंगे, मैं उनकी भी मदद करूँगा वैसे ही जैसे तुम लोगों की कर चुका हूँ।" कुछ जवाब देने के बजाय सेलिन ने उस बूढ़े को गले लगा लिया। फिर वह बूढ़ा अपने छाते के सहारे टेकता हुआ कस्बे की तरफ़ चला। हम लोग उसकी झुकी कमर को तब तक देखते रहे जब तक उसकी शक्ल दूर पर अँधेरे में ग़ायब न होगई।



स्टैलिनग्राड का मोर्चा (३)

शहर के बीच का वह सबसे घना आबाद हिस्सा, जिसे हवाई हमले के ज़रिए जर्मनों ने बरबाद कर डाला।

छापामार की डायरी से

लेनिनग्राड व दूसरे मोर्चों पर काम करनेवाली एक छापामार लड़ाकों की टोली के सरदार की डायरी के कुछ वाक़यात यहाँ पर लिख रहे हैं:—

अगस्त १३

"आज जर्मनों ने हमारे सूबे के खास मरकज पर कब्जा कर लिया हमारे मकानात, क्लबघर, स्कूल, अस्पताल सब धू-धू करके आग से जल रहे हैं, उनको देख-देखकर दिल फटा जाता है। आज रात को हमारे साथी जमा होकर मशविरा करेंगे।"

अगस्त १४

"लड़ाई में शामिल होने का आज हमारा पहला मौक़ा है। जर्मन सिपाहियों की टुकड़ी का हमने सफ़ाया कर दिया है। सड़क के किनारे हम दो मोटर साइकिलवाले जर्मनों की लाशें छोड़कर चले आ रहे हैं। उनकी बन्दूकें बेकार कर दी गई हैं। दो मोटर लारियाँ भी हम लोगों ने रास्ते में फूक दी हैं।"

अगस्त १५

"हमारी "डी" टोली दुश्मनों की टोह लेकर वापस आ गई है। उसे खबर मिली कि दो जर्मन सिपाही मार डाले गये। वालंटियरों को चोटें आईं। "जे" नाम के गाँव के नजदीक जर्मनों ने फौजी पड़ाव डाला है और वहाँ पर हवाई जहाजों की मरम्मत का भी इन्तज़ाम कर रहे हैं।

अगस्त १९

हमने दुश्मनों के हवाई अड्डे को बर्बाद करने का फैसला कर लिया है, उनके हवाई जहाज (जंकर ८८ मेल के) फूँक दिये गये। जर्मन लोग दरिया नहीं पार कर सके, उनकी बिछाई हुई फटनेवाली सुरंगें हम लोग १४ की तादाद में उठा लाये हैं, हमारे साथी उनको बिछाने और हटाने की ट्रेनिंग ले रहे हैं। जर्मनों के तेल के पीपों में भी आग लगा दी गई। हर एक पीपे में कम से कम २० गैलन तेल था।"

अगस्त २०

"शाम के वक़्त नदी के किनारे हमने जर्मनों के छिपने के एक पोशीदा अड्डे का पता लगाया जिसमें काफ़ी गोला बारूद इकट्ठा था। पहरेवालों की तादाद कम थी, सिर्फ़ ५ थे! उनको ठिकाने लगाकर हमने गोला बारूद के ढेर में आग लगा दी। ज़ोर के धड़ाके के साथ वह उड़ गया! दुश्मन को काफ़ी नुकसान पहुँचा। बड़ी रात तक गोलों के फटने की आवाज़ें सुनाई पड़ती रही।"

अगस्त २२

"नदी पार करने के सभी ज़रिये जो जर्मनी ने जुटा रक्खे थे, दो मर्तबा हम लोगों ने बर्बाद कर दिये, उनकी कई मोटर लारियाँ जलादीं।"

अगस्त २४

"मुख्तलिफ़ सामान और रसद से लदी हुई जर्मनों की १८ मोटर लारियाँ आज फूँक दी गईं। ६७ नाजी सिपाही मारे गए। उनसे छीनी बन्दूकों का अच्छा खासा ढेर हमारे पास जमा हो चुका है।"

अगस्त २६

"दफ़्ती बनाने के कारखाने के पास जर्मनों की फ़ौज़ी मोटर-दस्ते

पर हमारी "सी" टोली ने हमला किया। छै टनवाली २१ लारियाँ, ८ टैंक पेट्रोल ढोनेवाली ११ लारियाँ और अफ़सरों की कई मोटरें तोड़-फोड़ डालीं, फिर उनमें आग लगा दी। ३० सिपाही और ६ अफ़सर हमने मारे। उनमें एक लेफ़्टीनेन्ट कर्नल भी था।"

अगस्त २८

"हमारी "बी" टोली का नसीब अच्छा न था, दुश्मनों से भरी हुई कई मोटरों ने उन्हें घेर लिया, खूब लड़ाई हुई। हमारे ५ साथी काम आए। बाकी भाग निकले। आज का दिन अच्छा न था।"

सितम्बर ५

"बाइस दिनों में हमारी खास टोली ने जर्मनों का बड़ा नुकसान किया। उनकी कई किश्तियाँ और मोटर बोट डुबो दिये गये। ४७ लारियों और ७ हवाई जहाज़ों को जला दिया गया। ५ मील तक फैले हुए बिजली के तार हमारे साथी लोग उखाड़कर ले आये। २०३ जर्मनों को उन्होंने मौत के घाट उतारा। १५ जर्मन अफ़सर भी उन्हीं में थे। अब हम लोग दूसरे इलाके में काम करने जा रहे हैं। भेदिए से खबर मिली है कि जर्मनों के कई दस्ते उत्तरवाली सड़क पर फिर रहे हैं।

बुढ़ऊ काका

टोली के लोग उसे 'बुढ़ऊ काका' इसलिये नहीं कहते कि वह बूढ़ा होगया है या दाढ़ी मूछ सफेद होगई है बल्कि इसलिये यह नाम पड़ गया था क्योंकि वह बहुत दूरन्देश, तजुर्बेकार और संजीदा शख्स था। सब लोग आँख मूँदकर उसका हुक्म बजाते थे। वह रोबदाब भी वैसी ही रखता था जैसी कि एक फौज के कमान्डर को रखनी चाहिये। वह हमारा सरग़ना था।

सबसे ज्यादा हैरत की बात तो यह थी कि सिर्फ २ साल तक एक घुड़सवार फौज में नौकरी करने के अलावा उसको ज़रा भी फौजी तजुर्बा न था मगर मौक़े पर उसने साबित कर दिया कि मोर्चाबन्दी और लड़ाई में वह किसी होशियार कमांडर से कम चलता हुआ नहीं है। लड़ाई छिड़ने के पहले वह एक मामूली सा कारीगर और अपने इलाके की सोवियट का चेयरमैन था जब जर्मनों ने हमला किया, तो उसने एक छापामारों की टोली तैयार की जिसमें आसपास के कस्बों और गाँवों के नौजवान और बूढ़े आ-आकर भरती होने लगे। इस वक्त इस टोली में दो औरतें भी शामिल हैं, एक तो बुढ़ऊ काका की बीवी है और दूसरी एक और है ? औरतों का राशन पहुँचाने का काम सौंपा गया है ज़रूरत के वक्त उनसे लोगों में प्रचार करने की ड्यूटी भी ली जाती है। बुढ़ऊ काका की बीवी, उनकी ग़ैरमौजूदगी में फौज की कमांडर की तरह भी काम करती है। वह बड़ी गंभीर, सुलझी हुई तबियतवाली, और होशियार औरत है और बुढ़ऊ काका उसे बहुत मानते हैं। हमारी टोली का सबसे कम उम्र सिपाही, एक १४ साल का

तालिबइल्म है। टोली में जो दूसरी औरत है, उसी का वह लड़का है, साथी लोग उसे बहुत चाहते हैं और बुढ़ऊ काका का बर्ताव भी उसके साथ अच्छा है। वे अक्सर उससे बड़े-बड़े मुश्किल काम करा लेते हैं।

एक रोज़ वह लड़का खबर लाया कि ऊँची सड़क के नज़दीक जो ढाल है, उसके बराबर गली में दुश्मन के चार टैंक छिपे हुए हैं। बुढ़ऊ काका को यक़ीन न आया और उन्होंने सवाल किया—

"क्या तुम यक़ीनन कह सकते हो कि टैंक दुश्मन के हैं?"

लड़के ने जवाब दिया—"कमांडर साहब! मैंने अच्छी तरह देखा है कि नाजियों के टैंक हैं। उन पर वैसी ही पहचान बनी हुई है, जैसी कि क़ब्रों के ऊपर के पत्थरों पर बनी रहती है—क्या कहते हैं उसे?"

बुढ़ऊ काका उस लड़के को व दो और लड़कों को लेकर टोह लगाने निकल पड़े। लड़के ने ग़लती नहीं की थी। चार जर्मन टैंक खड़े थे। ऐसा जान पड़ता था कि शायद उनका पेट्रोल खत्म हो गया है। लड़के ने यह भी बतलाया कि कई नाज़ी अफसर मोटर में बैठकर आये थे और टैंक के आदमियों से सलाह मशविरा करते रहे थे। अपने डेरे पर बुढ़ऊ काका ने छापामारों की तीन टुकड़ियाँ बनाईं, पहली में बन्दूक़ची, दूसरी में टैंक तोड़ सामान फेंकनेवाले और तीसरी में मशीन-गन चलानेवाले रखे गए!

रात के अँधेरे में तीनों टुकड़ियाँ गली में दाखिल हो गईं, बुढ़ऊ काका उस लड़के के साथ एक पेड़ पर चढ़ गए, और दूसरी टोली आगे बढ़ गई। बुढ़ऊ काका के इशारा करते ही तीस भभकती हुई एसिड की बोतलें चारों टैंकों के अन्दर फेंक दी गईं। बारह नाज़ी सिपाही कूद-कूदकर बाहर आ गये? छापामारों ने मशीनगन की गोलियों से उनको भून डाला। यह मोर्चा एक घंटे तक डटा रहा मगर जर्मनों का सफ़ाया हो गया। उनके टैंकों को गाँव के लोहारों ने तोड़-फोड़ डाला।

जर्मनों के हथियार व सामान जो हाथ लगा उसे बुढ़ऊ काका ने "लाल फौज" की छावनी में भिजवा दिया। वहाँ के कमिस्सर ने जवाब में एक ख़त भेजा जिसमें लिखा था—"आपकी इस पहली भेंट के लिये शुक्रिया। मुझे उम्मीद है कि आप हमेशा इसी तरह के तोहफ़े भेजते रहेंगे। भगवान आपकी मदद करे।"

इलाक़े में बुढ़ऊ काका के छापामार जत्थे की धाक बैठ गई है।

छापामारों के जत्थे में

अपने मुल्क की हिफ़ाजत में, सच्चे वतनपरस्त किस तरह अपनी जानों की बाजी लगाकर दुश्मन का मुक़ाबिला करते हैं हमें यह सबक़ रूस के उन छापामार लड़ाकों से लेना चाहिए जो 'रिभीकाव' की मातहती में यूक्रेन के इलाक़े में गुजरनेवाली 'नीपर' नदी के दलदलों को अपना मरकज़ बनाकर जर्मनों को नाकों चने चबवाते रहे थे। एक सोवियट युद्ध-संवाददाता के लेख से हम इसका खुलासा नीचे दे रहे हैं।

"नीपर" नदी का दलदल हजारों एकड़ ज़मीन घेरे हुए है। अजनबी आदमी अगर इस दलदल में उगी हुई झाड़ियों में फँस जाय तो वह ज़िन्दा वापस नहीं जा सकता। आपसे कुछ क़दमों के फ़ासले पर भी अगर कोई दुश्मन छिपा हुआ हो, तो आपको मुतलक़ पता न चलेगा।

छापामारों की मोटर बोट ने मुझे और बीस दूसरे आदमियों को नीपर नदी के किनारे पर ही सवार कर लिया था। वे बीस आदमी आस-पास के इलाकों के दल में भरती होने आये थे। मोटर बोट धीरे-धीरे नदी का बाँया किनारा छोड़कर एक घाट पर आकर रुक गई। यहाँ पर हम लोग चिपटे पेंदे की एक डोंगी में बैठकर सुनसान साहिल पर आगे बढ़ने लगे। कहीं दूर पर से नाजी तोपों के धमाके और हवाई जहाजों की भन्नाहट सुनाई दे रही थी जिसके ज़रिये हमें अन्दाजा होने लगा कि हम किस हालत में पहुँच रहे हैं।

"जिस वक्त हमारी डोंगी किनारे पर ठहरी हुई थी, तब काफ़ी अँधेरा

हो रहा था। पहरे पर मुक़र्रर संतरियों ने आवाज़ लगाई, हमने अपना खुफ़िया इशारा किया और हम छापामारों के इलाक़े में दाखिल हो गये। चारों तरफ़ गहरा सन्नाटा था। पहरेवाले जहाजों को छोड़कर दल के सब आदमी अपनी-अपनी जगह पर मौजूद थे, वे लोग रेडियो पर मास्को का कोई एलान सुन रहे थे। हमने जो इश्तहारात ले जाकर उन्हें दिये, उनको वे बड़ी बेसब्री से लेकर पढ़ने लगे। नीपर नदी में बाढ़ आ गई थी, चारों तरफ़ पानी ही पानी दिखाई देता था। मगर छापामारों के जत्थे का कमांडर रिफ़ीकाव, अपनी जगह पर डटा हुआ था। वह वहाँ से हटना ही नहीं चाहता था। वह कहता था—"अगर ज़रूरत पड़ी तो हम पेड़ों के तले अपना अड्डा बनाकर और उनकी शाखों पर अपने हथियार रखकर काम चलाएँगे मगर यहाँ से हटेंगे नहीं।"

"बातचीत के सिलसिले में छापामारों से मैंने सुना कि जर्मनों को जब यह इत्तिला मिली कि लाल फ़ौज में शामिल न किये जानेवाले लोग छापामारों में भरती हो गये हैं, तो उन्होंने उनकी औरतों को यह धमकी दी है कि अगर छापामारों ने दलदल खाली नहीं किया तो चारों तरफ़ से दलदल में आग लगा दी जायगी। इस धमकी की मियाद पूरी हो जाने पर भी जर्मनों ने कोई ऐसी कार्रवाई नहीं की और छापामार लड़ाके दलदल में ही डटे रहे।"

"जर्मन और रूमानियन सिपाहियों के दस्ते इसी दलदल के आस-पास पड़ाव डाले रहते हैं मगर आगे बढ़ने की उनकी हिम्मत नहीं होती। छापामार लड़ाकों से वे बहुत डरते हैं।"

"रात को सब लोग सोने की तैयारी कर रहे हैं। सिर्फ़ कमांडर की झोपड़ी की तरफ़ से दबी हुई आवाज़ें सुनाई पड़ रही हैं। भेदियों की की लाई हुई खबरें मालूम करने के बाद अगले रोज़ का प्रोग्राम बन रहा है।"

"अगले दिन हमारे एक साथी से जिसका नाम लायोनिया क्रीवेन्को

है, इत्तिला दी कि एक नाज़ी अफ़सर एक बख्तरबंद गाड़ी में बैठकर पड़ोस के गाँव में दाखिल हुआ है। छापामारों की कौन्सिल ने रोमन्सेनकेन्को की कमान में एक छापामारों की टुकड़ी को उस जर्मन अफ़सर का खात्मा कर देने का काम सौंपा। यहाँ पर छापामार-कौंसिल या अंजुमन के बारे में कुछ बदला देना ज़रूरी है। वैसे तो दलदलों में कई दस्ते काम कर रहे हैं मगर उन सबका ताल्लुक़ रिफ़ीकाव से ज़रूर है, तजुर्बे ने उन पर यह बात ज़ाहिर कर दी थी कि ऐसे कामों के लिए आपस में मेल जोल होना बहुत ज़रूरी है, अगर वे कामयाबी चाहते हों। इसी खयाल से उनकी एक अंजुमन बना ली गई थी, जिसका मेम्बर हर एक छापामार दस्ते का कमांडर होता था। दलदलों की इसी अन्जुमन को कौंसिल कहा जाता है। इसकी इजाज़त बग़ैर छापामार टोलियाँ कोई काम नहीं करतीं। कौंसिल हर मसले पर ग़ौर करने के बाद हुक्म जारी करती है। आमतौर पर लड़ाई का कुल सामान, गोला, बारूद वग़ैरा हर दस्ते को यहीं कौंसिल पहुँचाया करती है। दस्तों के कमांडर और कमिस्सरों की तक़र्ररी भी यही कौंसिल करती है।

'अब उस नाज़ी अफ़सर पर क्या बीती, वह हम आगे लिखते हैं। तीन-तीन आदमियों की दो टुकड़ियाँ रवाना हुईं। एक टुकड़ी तो उस जगह जाकर छिप गई जहाँ गाँव की सड़क की दो शाखें हो जाती हैं। दूसरी टुकड़ी आम सड़क पर उस ठिकाने जा छिपी जहाँ झाड़ियों के पास से एक पगडंडी गाँव की तरफ़ जाती थी। यह इस ख्याल से किया गया कि एक टुकड़ी अगर चूक जाय तो दूसरी ज़रूर काम कर गुज़रे।

"इन टुकड़ियों में जो लोग गये, उनमें एक तो शराबखाने का मुंशी था, दूसरा हलवाहा, तीसरा गाँव का चौधरी, चौथा एक मज़दूर, पाँचवाँ स्पताल का कम्पाउन्डर और छठी एक नर्स, बस इतने आदमी थे। ये सब यूक्रेन के इलाक़े के रहनेवाले थे और ज़ालिम

जर्मनों से बदला लेने पर तुले हुए थे जिन्होंने उनकी ज़मीन, जायदाद, घर बार सब बर्बाद कर डाले थे।"

"इनका सरग़ना, क्रेपीवेट्स, बड़ा मुश्किल मिज़ाज और दिलेर था। वह निहायत जफ़ाकश और बहादुर भी था, अपने ठिकानों पर पहुँचकर जब छापामार लड़ाकों ने छिपने की जगह ठीक कर ली तब वे दुश्मन का इन्तज़ार करने लगे। इतने में जर्मन अफ़सर की बख्तरदार मोटर आती देख पड़ी। जब सिर्फ़ १५० क़दम का फ़ासला रह गया, तो छापामारों की मशीनगन गरज उठी, मोटर के ड्राइवर ने गाड़ी रोक ली। सेन्चेन्को नाम के छापामार लड़ाके ने ताबड़तोड़ कई हथगोले मोटर पर फेंक दिये। ज़ोर का धड़ाका हुआ और खून से लथपथ चार जर्मन मोटर से निकलकर बाहर आए और गिर गये। मोटर में बैठे हुए तीन और नाज़ी राइफ़लों की गोलियाँ खाकर जहाँ के तहाँ ढेर हो गये। एक और जर्मन जो शायद अफ़सर था बाहर निकलकर झाड़ियों की तरफ़ भागा। काँपते हुए हाथों से वह एक नक़्शा फाड़ने की कोशिश कर ही रहा था कि सेन्चेन्को ने उसे गोली मार दी। वह नक़्शा देखने पर पता चला कि उस जर्मन अफ़सर का नाम मेजर बागा था। अपना काम पूरा करके छापामारों की टोलियाँ अड्डे पर लौट आईं, नक्शे में वे सारे मुक़ामात दर्ज थे जहाँ-जहाँ जर्मन फ़ौजें पड़ाव डाले हुए थीं।"

"रिफ़ीकाव नक़्शा पाकर बहुत खुश हुआ। उसने एक आदमी के हाथ वह नक्शा मेजर सोकोलाव के पास भेज दिया। इसके बाद अंजुमन ने इस हमले में शामिल होनेवाले छापामारों के कारनामों की तफ़तीश की। कितना गोलाबारूद खर्च हुआ, इसका भी तखमीना लगाया गया।"

"रिफ़ीकाव ने एक छापामार से पूछना शुरू किया—"क्या यह नक्शा तुमने छीना है ? बहुत खूब ! मगर क्या तुमने दूसरे नाज़ियों की

जेबों और थैलों की भी तलाशी ली थी ? नहीं ली ! तुम इतनी जल्द-बाज़ी से क्यों काम लेते हो ? बड़ी ख़राब बात है ! ऐसे कामों में उजलत ठीक नहीं, आइन्दा ख़याल रखना।"

"आज कुछ गर्मी है—चारों तरफ़ सन्नाटा छाया हुआ है, हमें किसी के दबे पैर आने की आहट मिल रही है। जर्मन फ़ौजियों का एक दस्ता होशियारी से छापामारों की सरहद के भीतर घुसता चला आ रहा है। भरी हुई पिस्तौलें और बन्दूकें चमक रही थीं। जर्मनों की इस कोशिश की वजह यह थी कि कुछ रोज़ पहले जर्मनों के एक दस्ते को जो नदी में नहा रहा था, छापामारों ने साफ़ कर दिया था। इसी से नाराज़ होकर नाज़ी लोग छापामारों का ख़ात्मा करने पर तुल गये थे और उन्होंने फ़ौज भेज दी थी जो दलदलों के अन्दर दाख़िल हो रही थी।"

"पगडंडी के रास्ते से आते हुए जर्मनों की आहट यकायक बंद हो गई, कुछ देर ठहरकर वे फिर आगे बढ़े। एक भेदिये ने जाकर छापामारों को ख़बर दी। दूसरा भेदिया नाज़ियों के पीछे लगा रहा। यकायक गोलियों की भयंकर बौछार ने सन्नाटे को तोड़ दिया। छापामारों का यह इस्तक़बाल था। पीछे से गोलियाँ चलाकर छापामार भेदिये ने तीन नाज़ियों को ख़त्म कर दिया। सिर्फ़ ५ जर्मन निकल भागे। बाक़ी के सब जहाँ के तहाँ सदा के लिए सो गये। इस कार्रवाई की इत्तिला रिफ़ीकाव को दी गई।"

"दूसरे रोज़ जर्मनों ने दुबारा दलदल में घुसने की कोशिश की। इस दफ़ा छापामारों ने यह तय कर लिया था कि दुश्मन ज़्यादा दूर न बढ़ने पाएँ। नदी के किनारे की झाड़ियों में छुपे रहकर वे आसानी से जर्मनों के पीछे हो लिए और मौक़ा पाते ही उन पर गोलियाँ बरसाने लगे। उधर सामने की तरफ़ से रोमन सेनचेन्को के दस्ते ने हमला कर दिया। कुछ को छोड़कर सारे जर्मन सिपाही मारे गए।"

"इस दूसरी नाकामयाबी से झल्लाकर जर्मनों ने यह तय कर लिया कि वे छापामारों का एकबारगी ही निपटारा कर देंगे। कई रोज़ बाद उन्होंने २ मजबूत फ़ौजी दस्ते जुदा-जुदा रास्तों से रवाना किये। उन्होंने भारी मशीनगनें और लड़ाई का सामान किश्तियों पर लादा और दरिया नीपर की एक शाख से छापामारों के अड्डे की तरफ़ चले। उन्होंने यकायक हमला करके छापामारों की हस्ती ही मिटा देने की सोची थी। मगर ज्यों ही वे किनारे पर पहुँचे त्यों ही छापामार भेदियों ने उन्हें देख लिया और अड्डे पर खबर कर दी। उन लोगों ने भेदियों पर गोलियाँ चलाईं और एक का काम तमाम कर दिया मगर दूसरा आगया। खबर पाते ही रिफ़ीकाव ने कहा—"अच्छा" तैयार हो जाओ!" क्रेपीवेट की टोली को पीछे से पहुँचकर जर्मनों की किश्तियाँ डुबो देने का हुक्म मिला। दूसरी टोली आमने-सामने मुकाबिला करने को चल पड़ीं। छापामार लड़ाके घनी झाड़ियों में दुबक गये और जर्मनों के करीब आते ही उन्होंने गोलाबारी शुरू कर दी, सारा जंगल, मशीनगनों और राइफलों की गरज से काँप उठा। जर्मन भागे मगर पीछे लौटने पर जब उनको किश्तियाँ न दिखलाई पड़ीं तो वे घबराये! इतने में पीछे से आनेवाली टोली ने उनपर गोलियाँ बरसानी शुरू कर दीं, अब क्या था—जर्मनों के पैर उखड़ गये। दो रोज तक जर्मनों को बीन-बीनकर मारा गया। उनका बहुतेरा सामान छापामारों के हाथ लगा।

"अगले रोज एक बूढ़ा किसान हमारे अड्डे पर पहुँचा। उसने खबर दी कि गाँव का एक शख्स जो जर्मनों से मिला हुआ है और उनको भेद देकर कई गाँववालों को उसने फँसा दिया है जो गोली से उड़ा दिये गये हैं। रिफ़ीकाव ने उसी दिन क्रेपीवेट को बुलाकर हुक्म दिया कि फौरन ऐसे दगाबाज़ और बाग़ी को जहन्नुम रसीद कर दिया जाय। अपने लम्बे लबादे की आस्तीन में पिस्तौल छिपाकर क्रेपीवेट्स गाँव में

उस बाग़ी के मकान पर पहुँचा जो रूसी होते हुए भी जर्मनों का मददगार बना हुआ था। कुंडी खटकाते ही वह शख्स बाहर आया। क्रेपीवेट्स ने उससे कहा—"मुझे जर्मनों के अड्डे पर फौरन पहुँचना है, इनाम दूँगा तुम्हें, जल्द चलो!" वह शख्स चल पड़ा। कुछ दूर जाने पर जंगल के रास्ते में क्रेपीवेट्स ने उसे गोली मार दी। मुल्क की आज़ादी बेचनेवालों की यही सजा मुनासिब है।

आज़ादी की जंग में सोवियट-स्त्रियाँ

[जिन हफ़्तों में जर्मन-सेनायें 'मास्को' की ओर बढ़ रही थीं तभी सोवियट स्त्रियाँ, लाखों की तादाद में, अपने नाज़ुक हाथों में फावड़े, कुदालें और कुल्हाड़ियाँ लिये हुए खाइयाँ खोदने और दुश्मनों का रास्ता रोकने में जुटी हुई थीं। रात हो या दिन, आँधी चल रही हो या मूसलाधार पानी बरस रहा हो और चाहे दुश्मनों की गोलियों की झड़ी लगी हो, उनके काम में कोई रुकावट नहीं पड़ी। कौन है वह दिल, जो उनकी इस जाँफ़िशानी को महसूस कर पिघल नहीं उठता।

सन् १९४२-४३ में मास्को तथा दूसरे ख़ास शहरों में बेहद बर्फ़ गिरने पर गर्मी पहुँचाने की ज़रूरत पड़ी। कोयला काम में लाया न जा सकता था। बस, यही तय हुआ कि जंगलों से लकड़ी काटकर लाने की ज़िम्मेदारी स्त्रियों ने ली और उन्होंने जंगलों को साफ़ करके मास्को तथा दूसरे शहरों में लकड़ियों के पहाड़ लगा दिये।

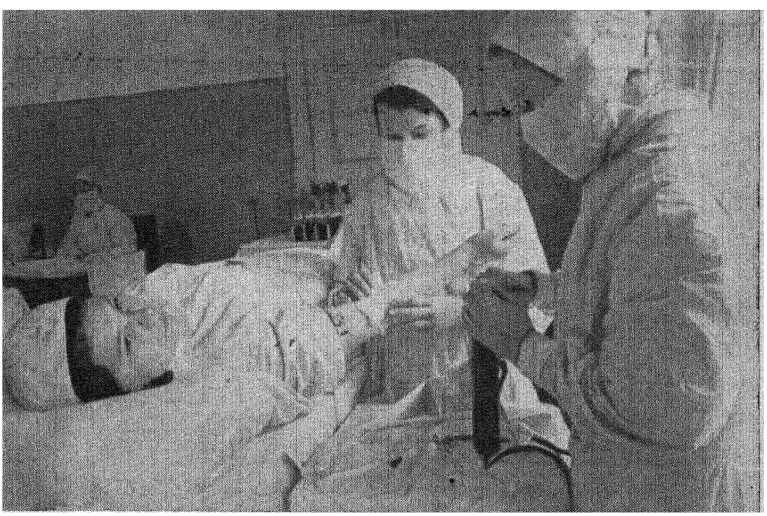
लड़ाई से ताल्लुक़ रखनेवाला कौन-सा ऐसा धन्धा है जिसमें रूस की स्त्रियाँ ज़्यादा से ज़्यादा तादाद में नहीं पाई जातीं? फ़ौज़ी लिबास में वे हवा-मार तोपें, मशीनगनें और तोपें चलाती हैं। यदि सोवियट सरकार उन्हें मोर्चे पर लड़ने की इजाज़त दे-दे तो स्त्रियों की सैकड़ों डिवीज़ने, हज़ारों रेज़ीमेन्ट और लाखों कम्पनियाँ क़ायम हो जायें।

आगे हम सोवियट औरतों के कारनामों की सच्ची कहानियाँ पेश कर रहे हैं जिनका एक-एक लफ़्ज आपके रोंगटे खड़े कर देगा।]



बहादुर रूसी औरतें

इस तसवीर में कुछ नर्सें रेड-क्रास की उड़ाका औरतें, मोटर ड्राइवर, डाक्टर और तार-बाबुओं का काम करनेवाली औरतें दिखाई गई हैं। बाईं तरफ़ सिरे पर जिस औरत की तसवीर है, उसने जंग-मैदान में ४१ ज़ख्मी सिपाहियों को मौत के मुँह से बचाया है।



लड़ाई के ज़ख्मियों की जानें बचाने के लिए ताज़े ख़ून की ज़रूरत होती है, इस तसवीर में एक लड़की ख़ुशी से अपना ख़ून दे रही है।



रूस में जर्मनों के ज़ुल्म का एक नमूना

यह तसवीर कर्च के इलाके की है। शहर के बाशिन्दों की लाशें पड़ी हुई हैं, जिनको जर्मनों ने अपनी गोलियों का निशाना बना दिया।



स्टैलिनग्राड के बाहरी हिस्से में जंग का एक ख़ौफ़नाक नज़्ज़ारा

एक बुढ़िया

उसका नाम "फिदीसया इवेनोवना" था। वह मध्य यूक्रेन में नीपर नदी के किनारे पर बसे हुए गाँव में रहती थी। स्वभाव उसका तीखा था। गाँव के सभी लोग उससे डरते थे। उसका एक जवान लड़का था जिसकी सगाई उसी गाँव की एक लड़की से पक्की हो चुकी थी, यह लड़की भी अपनी सास से बहुत डरती थी। अपने और पराये सभी बुढ़िया से नाराज़ थे। गाँव की किसान-सभा में उसे फोरमैन का ओहदा हासिल था। उसकी मातहती में जितने मज़दूर काम करते थे, उनपर उसकी कड़ी हुकूमत थी। क्या मजाल कि कोई आदमी सुस्ती से काम करे। किसान-सभा में उसकी मिहनत की बड़ी क़द्र थी। उसका गुज़ारा बढ़ा दिया गया। एक सुन्दर सा नया मकान उसके लिये बनवा दिया गया। इस इज़्जत को पाकर बुढ़िया ने पहले से भी अधिक सख्ती से काम लेना शुरू कर दिया। उसकी हुकूमत बाहर और भीतर दोनों ही जगह और भी सख्त हो गई। उसकी बहू भी उसकी कड़ी हुकूमत से उकता गई, पति से अपना दुखड़ा रोई पर उसने एक भी न सुनी। माता की इज़्जत वह बहुत करता था। उसने बीवी को समझा-बुझा दिया।

मई सन् ४१ में उसके घर में पोते ने जन्म लिया। बुढ़िया की खुशी का ठिकाना न रहा।

इसी वक्त जर्मनी ने रूस पर हमला कर दिया। मीशा फौज में भरती होगया। बेटे को बिदा करते वक्त माँ का दिल भर आया पर उसने आँसू नहीं गिराये। लेकिन मीशा की स्त्री इस पहले बिछोह को सह न सकी। आँसुओं की झड़ी लग गई। बुढ़िया की नज़र जब बेटे पर गई

तो उसने उसे कुछ रंजीदा पाया। वजह जान लेने में बुढ़िया को देर न लगी। उसने बहू का हाथ पकड़ा और उसे लेकर मकान के भीतर आई! वहाँ पहुँचकर उसने बहू को बहुत भला-बुरा कहा। "तुमने रो-रोकर मेरे लड़के को रंजीदा कर दिया, लड़ाई में उसका मन न लगेगा।" इस बार मीशा की स्त्री शांत न रह सकी। उसने अपने दिल का सारा गुब्बार उसी दम बुढ़िया पर निकाल डाला। 'फिदीसिया इनोवना' से इससे पहले किसी ने भी इस तरह कड़ी बातें करने की हिम्मत न की थी। उसे बड़ा अफसोस हुआ। वह उसी वक्त घर से बाहर चली गई और शाम तक वापस न लौटी। इसके बाद एक ही मकान में रहते हुये भी सास बहू में बोलचाल बन्द हो गया।

अगस्त का महीना था एक घुड़सवार ने गाँव में आकर एक दुख की खबर सुनाई। उसने कहा, "हमारी सेना को पीछे हटना पड़ रहा है, इसलिये यह गाँव खाली हो जाना चाहिये।" गाँव के सभी लोग दूसरी जगह चले गये परन्तु 'फिदीसिया इवेनोवना ने भागने से इन्कार कर दिया। वह अपने गाँव से कभी बाहर न गई थी। जीते जी वह अपने मकान व खेतों को दुश्मन की मनमानी करने के लिये छोड़ नहीं जाना चाहती थी। वह कभी किसीसे नहीं डरी थी और न उसे जर्मनों का खौफ था। एक बार उसे पोते और बहू के ख्याल ने घबरा दिया मगर फौरन ही उसने अपनी इस कमजोरी को दिल से निकाल डाला।

मीशा की स्त्री ने भी सास का साथ दिया।

एक दिन दोपहर के बाद ५ जर्मन सिपाही गाँव में आये। मोटर साइकिलों की फट्-फट् से सारा गाँव गूँज उठा। घूमते-फिरते वे बुढ़िया के दरवाजे पर रुके। अन्दर से बन्द दरवाजे को खटखटाया। पोते और बहू को दूसरे कमरे में छिपाकर 'फिदीसिया इवेनोवना' ने खुद जाकर दरवाजा खोल दिया। एक जर्मन ने अपनी बन्दूक की नली उसके सामने कर दी। "मैं सिपाही नहीं, एक स्त्री हूँ—एक ही गोली से मेरा

काम तमाम हो सकता है, फिर इस बन्दूक की क्या ज़रूरत है ?" बुढ़िया ने निडर होकर इतना कहा। जर्मन सिपाही ने अपनी बन्दूक हटा ली।

मकान के अन्दर पहुँचकर वे शराब की बोतलें खाली करने लगे। दो-तीन बोतलें पी चुकने के बाद उन्होंने खाने को माँगा। फिदीसिया ने अपने हाथ का बनाया खाना परोस कर उनके सामने लाकर रक्खा। खाना खाते वक्त शराब का दूसरा दौर चलने लगा। पाँच के पाँचो सिपाही शराब पीकर मतवाले होगये। अन्दर से बहू ने सुना कि वे बुढ़िया से और खाना माँग रहे हैं तो नफरत और गुस्से से उसका चेहरा तमतमा उठा, पर वह कर ही क्या सकती थी। फिदोसिया ने कहा—"अब और खाना तो बचा नहीं, कहिये तो तैयार कर दूँ।" उसने चूल्हे में आग जला दी और खाना बनाने की तैयारी करने लगी। इसी बीच जर्मनों ने यूक्रेन की बनी एक खास शराब माँगी। बुढ़िया ने कहा—"मैं घर में देखती हूँ, अगर हुई तो जरूर आपकी खिदमत में पेश करती हूँ।"

मकान में सिर्फ़ एक बोतल उस किस्म की शराब की थी और वह भी उस मौके के लिये रक्खी हुई थी जब बुढ़िया के पोते के दाँत निकलने पर एक दावत में मेहमानों को पिलाई जाती। मीशा की स्त्री को यह बात सहन न हुई और जैसे ही बुढ़िया ने एक संदूक से वह बोतल निकाली, उसने बुढ़िया का हाथ पकड़ लिया और बोतल छीन लेने की कोशिश करने लगी। मगर बुढ़िया ने बोतल न छोड़ी, तब उसकी बहू ने बोतल की कार्क खींच ली और बोतल की थोड़ी सी शराब जमीन पर आ गिरी। उससे जो गन्ध निकली तो उसे मालूम हुआ कि बोतल में बजाय शराब के मिट्टी का तेल था।

मीशा की स्त्री की समझ में कुछ न आया। वह फिदोसिया के दिल की बात न जान सकी पर उसको यह मालूम होगया कि उसकी सास दुश्मन का साथ कभी न देगी। उसको इस बात पर ज़रा भी शक न

रह गया, जब फिदीसिया ने उससे कहा, "मैंने तुम्हें रोककर बड़ी भारी भूल की, अब तुम भाग जाओ, अभी मौक़ा है। जल्दी से मेरे मीशा की निशानी, मेरे पोते को लेकर तुम उस छत पर चढ़कर पड़ोसवाले जंगल में भाग जाओ—छत पर चढ़ने के लिये देखो वह सीढ़ी रक्खी हुई है—हाँ देखो, बच्चे को दुशाले से ढक लो ताकि उसे सरदी न लगे—जाओ देर न करो— ईश्वर तुम्हारी रक्षा करे।"

मीशा को अब पता चला कि उसकी सास के सीने में भी दिल है। उसने कहा, "अम्मा और आप ?" फिदीसिया ने उसे भाग जाने का इशारा किया। बहू के जाने पर उसने चुपके से खिड़की बन्द कर ली।

अँधेरे ने माँ बेटों को अपनी तारीकी में छिपा लिया। सारी रात मीशा, इस इरादे से चलती ही रही कि वह सोवियट की हद में पहुँच जाय। मगर सवेरा होने पर उसे यह मालूम हुआ कि वह अपने गाँव के ही एक सिरे पर मौजूद है। उसे बड़ा ताज्जुब हुआ कि रात भर चलते रहने पर भी वह अपने गाँव से बहुत दूर न जा सकी —शायद वह रास्ता भूल गई थी।

इसी वक्त उसे मिट्टी के तेल की बोयल की याद हो आई और उसके साथ ही साथ यह भी खयाल आया कि उसकी सास ने कहीं अपने मकान में आग तो नहीं लगा दी। क्योंकि वह जानती थी कि उसकी सास के लिये यह काम मुश्किल न था। उसे अपने मकान से बड़ी मुहब्बत थी इसीलिये वह उसे छोड़कर भाग नहीं सकी थी। मीशा के पैर आप ही आप अपने घर की तरफ बढ़ने लगे। घर के करीब पहुँचते ही मानो जमीन उसके पैरों के नीचे से खिसक गई। सारा मकान जलकर खाक हो गया था। पासही ५ मोटर साइकिलें पड़ी हुई थीं बुढ़िया का कहीं पता निशा भी नहीं था लेकिन पाँचों जर्मन सिपाहियों की जली हुई लाशें वहाँ पड़ी हुई बुढ़िया फिदोसिया के दिल की धधकती हुई ज्वाला का परिचय दे रही थीं।

कप्तान वेराक्राइलोवा

जर्मन मास्को की तरफ बड़ी तेज़ी से बढ़ रहे थे। वह कंपनी, जिसमें वेराक्राइलेवा काम कर रही थी, अपनी ख़ास सेना से बिछुड़कर दुश्मन की मोर्चेबन्दी के घेरे में आगई थी। जर्मनों का यह घेरा अजब ढंग का था। फ़ौज के अफ़सर, मातहत अफ़सर इस कोशिश में लगे हुए थे कि वे जैसे भी हो वैसे, इस घेरे से बाहर निकल जायें। ३ दिन और ३ रातें कीचड़ और दलदल को मँझाते, दुश्मन को भुलावा देते हुये, वे बराबर चलते ही रहे।

वेरा क्राइलोवा को यकायक गोली लग गई थी जिसकी वजह से वह कुछ कमज़ोर सी होगई थी और इसीलिये सामान ढोनेवाली टोली के पीछे-पीछे एक गाड़ी में सफ़र कर रही थी। एक गाँव के करीब पहुँचते ही इस भागती हुई सेना पर सामने की ओर से गोलियाँ बरसने लगीं। कम्पनी का अफ़सर मारा गया। फ़ौज में गड़बड़ी मच गई। कमीस्सर भागा हुआ वेराक्राइलोवा के पास आया और कहने लगा कि दुश्मन ने उसकी सेना को घेर लिया है और उसे मजबूरन तितर-बितर होकर अपने आदमियों को बचाना पड़ेगा और यह भी कहा कि वेरा के पास जो कुछ सामान है उसे वह बर्बाद कर दे नहीं तो वह दुश्मन के हाथ लग जायगा।

वेरा को उसकी बात कुछ अच्छी नहीं लगी और उसने पूछा "क्या इससे आपका यह मतलब है कि मेरे पास जो दवाइयाँ और मरहम पट्टी का सामान है, उसे भी मैं बर्बाद कर दूँ?"

उसके इस सवाल का ज़बाब न मिला क्योंकि उतने में ही—

दुश्मन की एक गोली ने कमिस्सर की जान निकाल ली।

हालत बड़ी संगीन हो उठी। फ़ौज का कोई अफ़सर ही न बचा। सिपाही बदहवास होकर जंगल की ओर भागने लग गये। एक वेरा ही अपनी तकलीफ़ भूल गई। उसे ऐसा लगा कि मानो उससे कोई कह रहा है, "अब भी वक़्त है, सारी सेना में गड़बड़ी मचने के पहले तुम चाहो तो उनको मौत के मुँह से निकाल सकती हो।" फौज की डाक्टरनी होने के नाते, हालाँकि उसे कभी-कभी राइफल, हाथ से फेंके जानेवाले तथा पिस्तौल चलाने का अवसर मिल चुका था, लेकिन ऐसा नहीं हुआ था कि पूरे तौर पर उसे लड़ाई करनी पड़ी हो। मगर इस वक्त मौका ही दूसरा था! उसके अलावा सेना का एक भी अफसर जिंदा न था। ज़रा भी देर न करके, वेरा उछल कर एक घोड़े पर सवार हो मैदानजंग की तरफ़ दौड़ पड़ी।

वेरा की ऐसी बहादुरी से भागती हुई फौज के पैर रुक गये। आगे पहुँचकर वेरा को यह ताड़ लेने में वक्त न लगा कि दुश्मन किस ढंग पर चल रहा है। जिस गाँव पर जर्मनों का कब्जा था, उसके दोनों ओर जंगल थे। जर्मन रूसियों को ऐसी जगह पर मारना चाहते थे जहाँ से भागकर वे जंगलों में न घुस सकें। वेरा ने अपनी फौज के दो हिस्से कर दिये और हर एक हिस्से को यह हुक्म दे दिया कि वह अपनी पूरी ताकत से दुश्मन पर हमला करके उसको अपने इरादे में कामयाब न होने दे। फिर क्या था, घमासान लड़ाई होने लगी। सैकड़ों सैनिक कटने लगे। वेरा का अपना घोड़ा गोली खाकर गिर पड़ा। वह दूसरे घोड़े पर झपटकर सवार होगई और अपने सैनिकों को हिम्मत दिलाती रही। यह जवाबी हमला इतना यकायक और कारगर हुआ कि दुश्मन को पीछे हटना पड़ा। दुश्मन की सेना तो पीछे ज़रूर हट गई मगर गोलियों की बौछार न बन्द हुई। इस काम के लिये तोपखाने की ज़रूरत थी लेकिन वेरा के पास इसकी कमी थी। अब उसने सोचा कि

अगर उसकी सेना जंगल न पहुँच गई और हारी हुई जर्मन सेना ने कुमक लेकर दुबारा हमला कर दिया तो जान बचाना दुस्तर हो जायगा। अपनी जगह पर एक सिपाही को तैनात कर और उसे यह हुक्म देकर कि उसके वापस आने तक वह दुश्मन को किसी तरह भी सड़क पर न आने दे, वेरा घोड़ा दौड़ाकर उस जगह पहुँची जहाँ पर फौजी सामान ढोनेवाला काफ़िला था। काफ़िले को उस जंगल में पहुँचाने की कोशिश करने लगी। यकायक उसकी नज़र एक गाड़ी पर पड़ी। उस पर कई ट्रेंच-मार्टर और तोपें दिखलाई पड़ीं। उसने उन तोपों को फ़ौरन् नीचे उतरवा लिया। इसी वक्त इन्हीं लोगों की तरह घिरे और हारे हुए दूसरे रूसी सिपाही उसी सड़क पर आ पहुँचे, जिनके पास तोपखाना था। फिर क्या था, वेरा ने उनको लड़ाई में शामिल होने का हुक्म दिया। बात की बात में रूसी तोपखाना दुश्मनों के ऊपर आग उगलने लगा। जिन पेड़ों की आड़ लेकर दुश्मन गोलियाँ बरसा रहा था, उनका नामोनिशान मिट गया। सैकड़ों दुश्मन खेत रहे। एक बार तो उनके पैर उखड़ गये, मगर फ़ौरन् ही सँभलकर वे फिर गोलियाँ बरसाने लगे। फिर भी, इस रूसी-हमले को बहुत देर तक झेलना उनके लिए मुमकिन न था, और आखिरकार उनको पीछे हटना पड़ा। रूसियों को घेरकर मार डालने की उनकी ख्वाहिश पूरी न हुई।

अब वेरा को यह फ़िक्र हुई कि जर्मनों को कुमक पहुँचने के पहले ही वह अपनी फ़ौज को जंगलों में पहुँचा दे और वहाँ से भुलावा देकर पूरब की तरफ़ निकल भागे। सेना को मुड़ने का हुक्म देकर वह खुद पेत्रुनिन को बुलाने गाँव में चली गई जहाँ उसे उसने एक काम से भेजा था। इस काम में उसने एहतियात से काम न लिया। वह क्या करे, उसकी आदत ही ऐसी थी। उसने अपने लिये कभी भी सावधानी नहीं बर्ती थी।

गाँव में पहुँचते ही, एक किसान के मकान से निकलकर ५ जर्मनों ने उसे घेर लिया। उसे अपने क़ैद होने का दुख नहीं हुआ। वह सोचने लगी कि अब उसकी फौज का क्या होगा जिसे वह जंगल की ओर भेज चुकी है और जिसे यह भी मालूम नहीं है कि जंगल में पहुँचकर क्या करना होगा ?

जर्मन अफ़सर ने घोड़े को पकड़ लिया और उसके सैनिकों ने वेरा को जबरदस्ती नीचे उतार लिया। फिर उसे यह हुक्म मिला कि वह उस मकान में चले जहाँ से निकलकर ये लोग आये थे मगर उसने ऐसा करने से इनकार कर दिया क्योंकि वह जानती थी कि मकान के अन्दर पहुँच जाने पर उसके छुटकारे की सूरत बिलकुल जाती रहेगी। उसने तय कर लिया कि जो कुछ होना है यहीं हो जाय।

जर्मन उसे घसीटकर ले जाने लगे और वेरा अपनी ताक़त भर रुकावट डालती रही। एक जर्मन ने अपनी बन्दूक का कुन्दा उसके इतने जोर से मारा कि उसके तीन दाँत टूटकर बाहर आ गये और उसका मुँह लोहू लुहान हो गया। एक दफा तो उसके पैर लड़खड़ा उठे पर उसने अपनी सारी ताकत इकट्ठा कर अपने आपको गिरने से बचा लिया। इसके बाद उस पर कड़ी मार पड़ी और वह बेहोश हो गई। इत्तिफाक से उसी गाँव का एक रूसी जाने कहाँ से उधर आ निकला। उसके पास टामी-गन थी। उससे यह नज़्ज़ारा देखा न गया। उसने गोली चला दी जिसके नतीजे में पाँचो जर्मन मारे गये। वेरा-काइलोवा होश में आ गई और पीने के लिए उसने पानी माँगा। उस रूसी ने उसे पेट भर पानी पिलाया तब कहीं वह ठीक हुई। और तब वे दोनों घोड़ों पर सवार होकर जंगल में अपनी फौज से जा मिले।

दुश्मन की पहली मुठभेड़ का खात्मा हो चुका था। जंगल में पहुँचकर वे कुछ देर के लिये बेखौफ़ से हो गये मगर इसके यह मानी नहीं थे कि वे दुश्मन के घेरे से बाहर निकल गये थे। आस-पास के

तक़रीबन सभी गाँवों पर जर्मनों का कब्जा था और किसी-किसी गाँव में तो उन्होंने छोटी-छोटी छावनियाँ क़ायम कर ली थीं। वेरा और उसके आदमी सिर्फ़ एक तरकीब से काम ले करके अपनी जानें बचा सकते थे और वह यह थी कि पूरब की ओर से गाँवों के बाहर-बाहर और बिना लड़ाई के निकल भागें। पर यह बात ग़ैरमुमकिन थी। रास्ते में गाँवों का आ जाना मुमकिन था।

एक दिन ऐसा ही हुआ। उनके रास्ते में एक गाँव पड़ ही गया। वेरा को यह जानने में तो देर न लगी कि इस गाँव में जर्मन हैं पर वह यह न जान सकी कि दुश्मनों की तादाद कितनी है या उनके पास किस क़िस्म के हथियार हैं और कितने हैं।

उसने अपने दो साथियों को इस बात का पता लगाने को भेज दिया। वे दोनों सैनिक वापस न आये। वेरा फ़िक्रमंद हो उठी, इसलिये नहीं कि वे मार डाले गये होंगे बल्कि इसलिये कि जर्मनों ने उनको गिरफ़्तार करके सब राज़ न जान लिया हो। कुछ देर तक तो वह परेशान रही फिर उसने यह फैसला किया कि आख़िर दुश्मन से बिना लड़े हुये जब आगे बढ़ा ही नहीं जा सकता तो फिर ऐसा क्यों न किया जाय कि दुश्मन के होशियार होने के पहिले ही एक ज़ोर का हमला करके अपना रास्ता ही बना लिया जाय।

सात-आठ सैनिकों को साथ लेकर वह गाँव की ओर चल दी और फौज को यह हुक्म दे गई कि वह धीरे-धीरे उसके पीछे-पीछे बढ़ती रहे।

गाँव में पैर रखते ही एक कुत्ता ज़ोर से भूँक उठा। वेरा की पिस्तौल से निकली हुई एक गोली ने उसे हमेशा के लिये खामोश कर दिया। सड़क के नुक्कड़ पर तीसरे मकान की खिड़की से एक फीकी सी रोशनी आ रही थी, वेरा उसी तरफ चल पड़ी। उसने जान लिया था कि उस मकान में जर्मन नहीं हैं क्योंकि उनकी मौजूदगी में रोशनी

कभी बाहर नहीं आ सकती। मकान में दाखिल होकर वेरा ने एक रूसी बुढ़िया को देखा। रूसी सैनिकों को देखकर वह बुढ़िया इतनी खुश हुई कि उसकी आँखों में आँसू बहने लगे। वेरा ने बुढ़िया से हलुआ पकाने के लिये कहा तो राजी हो गई परन्तु उसने वेरा से सावधान रहने की आगाही करते हुए कहा—

"मेरे मकान की छत पर मशीनगन लगी हुई है।"

वेरा ने उसकी बात पर ध्यान नहीं दिया और पता लगाने के लिये बाहर चली गई। जर्मनों ने आहट पाते ही मशीनगन से गोली बरसाना शुरू कर दिया। गहरा अँधेरा होने की वजह से वेरा बाल-बाल बच गई। वेरा की फौज गाँव में दाखिल हो चुकी थी और उसने गोली का जवाब गोली से दिया। गोली चलने की आवाज़ें सुनकर सोये हुए जर्मन जाग उठे और अपने-अपने हथियार लेकर बाहर निकल पड़े। फिर क्या था बाक़ायदा लड़ाई छिड़ गई। अँधेरे में दोस्त और दुश्मन का पता न चलता था। ऐसी हालत देखकर वेरा ने जर्मनों के मुक़ाबले अपना तोपख़ाना लाकर खड़ा कर दिया और भारी-भारी तोपें आग उगलने लगीं। काफ़ी देर तक लड़ाई होती रही पर जीत वेरा की हुई। घायलों को जंगल में मरहम-पट्टी के लिये भिजवाकर वेरा भी वहीं पहुँच गई। जंगल में कुछ देर आराम करने के बाद सेना ने फिर कूच कर दिया।

कई दिनों के बाद वे लोग एक ऐसे गाँव में पहुँचे जहाँ एक भी आदमी दिखलाई न पड़ा। ऐसा मालूम होता था कि दो-चार दिन पहले इस गाँव में काफ़ी लोग रहते थे पर अब उनका नानोनिशान नहीं है। अभी उस गाँव की देख-भाल ही कर रहे थे कि उन्हें एक छः-सात बरस का लड़का मिला और उसकी ज़बानी मालूम हुआ कि जर्मनों ने उस गाँव को बुरी तरह से बर्बाद किया और बेचारे गाँववालों का सब कुछ छीन लिया था। लड़के ने यह भी बतलाया कि पाँच जर्मन उसके घर

में घुस आये और लगे उसकी सभी चीज़ों पर हाथ साफ करने। उसकी माँ ने, जो उन्हें रोकना चाहा तो लगे वे गालियाँ बकने। इसी बीच में वह एक तिपाई के नीचे छिप गया और अपनी जान बचाई।

लड़का वेरा को साथ लेकर उस जगह पहुँचा जहाँ पर दुश्मनों ने भोले-भाले किसानों को फाँसी पर लटका दिया था। उनकी लाशें अब भी लटक रही थीं। यह नज़्ज़ारा देखकर वेरा का दिल भर आया पर फ़ौरन् ही वह सँभल गई। उन लाशों को पेड़ों पर से उतरवाकर, वेरा ने, फ़ौजी ढंग से, उनको दफ़नाने का इन्तज़ाम करा दिया।

इस काम से छुट्टी पाकर फ़ौज ने फिर कूच कर दिया और धावा मारते हुये एक नदी के किनारे पहुँची। इस जगह पर उन्हें दुश्मन से कड़ा मोर्चा लेना पड़ा और लगभग २४ घंटे तक लड़ाई जारी रही। क़िस्मत ने वेरा का फिर साथ दिया। जर्मनों की तादाद भी कुछ कम थी और वे अपनी ख़ास सेना से कुछ ज़्यादा दूर पर थे। दुश्मन भी जान हथेली पर लेकर लड़े पर वेरा की सेना नदी पार कर गई।

यह आख़िरी मोर्चा था और अब आगे का रास्ता बिलकुल साफ़ था। सर्पूखोव की छावनी अब दूर न थी और जर्मन-घेरा भी टूट चुका था।

सर्पूखोव शहर जब थोड़ी दूर रह गया तो वेरा ने पड़ाव डाल दिया। वेरा नहीं चाहती थी कि उसकी सेना इस बुरी हालत में शहर के अंदर दाखिल हो, उसने अपने सैनिकों को नहाने, धोने, हजामत बनाने और वरदी दुरुस्त करने का हुक्म दिया और अपने फ़ौजी-अंबर को उम्दा से उम्दा खाना तैयार करने को कहकर खुद छावनी की तरफ़ जेनरल साहब को अपनी रिपोर्ट देने चली गई। जेनरल के ख़ीमें में पहुँचकर उसने पहरेदार से कहा कि वह फ़लाँ फ़ौज की कप्तान है और जेनरल से मिलना चाहती है। पहरेदार को उसकी बात का यक़ीन नहीं हुआ और उसने जेनरल को इत्तिला करने से इनकार

कर दिया। लाचार वेरा सीधे जेनरल साहब के पास चली गई और अपनी सारी मुसीबत कह सुनाई!

जनरल वेरा से बहुत ख़ुश हुआ। उसने अपने लंगर से सारा सामान वेरा की सेना को भिजवा दिया। २-३ दिन तो सैनिकों की दावत और आराम करने में बीत गये। तीसरे दिन मार्च करती हुई वेरा की सेना सर्पूखोव शहर में दाख़िल हुई और उसी दिन सोवियट सरकार की तरफ़ से कप्तान वेरा क्राइलोवा को "आर्डर आफ़ रेड बैनर" की उपाधि दी गई।

इस फ़तह का मतलब यह नहीं है कि वेरा की फ़ौजी ज़िन्दगी का भी यहीं से खात्मा हो जाता हो। सन् १९४१-४२ के जाड़े के मौसम में—जब रूसी-सेना ने हमला शुरू किया तो वेरा क्राइलोवा आगे बढ़ने-वाली सेना के मुहाफ़िज़-दल की कप्तान थी। कोनेत्रोवो पहुँचकर वह बर्फ़ पर चलनेवाली सेना में भरती हो गई, और जिस वक्त इस सेना ने, एक रेलवे स्टेशन के क़रीब एक जर्मन फ़ौज को पीछे से घेर लिया था तब भी वह, इसी के साथ थी। इस बार वेरा ने बड़ी तकलीफ़ उठाई। उसकी सेवा का रास्ता बहुत मुश्किल और ख़तरनाक जगहों से होकर था। दलदलों पर बरफ जम गई थी। और ठीक यही हाल नदियों का था। उनके किनारे ऐसे जान पड़ते थे जैसे किसी ने अभी-अभी वहाँ बरफ के ढेर लगा दिये हों। औरत होते हुये भी वेरा अपने फर्ज़ से पीछे न हटी।

एक गाँव के नज़दीक होनेवाली लड़ाई के मौक़े पर वेरा ने देखा कि सिपहसालार का नायब घोड़े पर सवार चला आ रहा है और उसके साथ एक बिना सवार का घोड़ा है।

"यह किसका घोड़ा है?" वेरा ने घबड़ाकर पूछा।

"कमांडर साहब का।" जवाब मिला।

"और वे कहाँ हैं?" वेरा ने फिर सवाल किया।

"मर गये।" नायब ने दुखी होकर जवाब दिया।

"नहीं, ऐसा नहीं हो सकता। कर्नल ब्राइनिन इस लड़ाई में मारे नहीं गये, इस बात पर मैं कभी यक़ीन ही नहीं कर सकती," वेरा ने कहा।

"आप मेरा यक़ीन तो कीजिये; गोली खाकर वे गिर गये और वहाँ से, अब उनकी लाश को लाना ग़ैरमुमकिन है" नायब ने यक़ीन दिलाने की कोशिश करते हुये कहा।

वेरा को फिर भी यक़ीन न हुआ और वह कमांडर वाले घोड़े पर सवार होकर मैदाने-जंग की तरफ़ झपटी। वेरा जब उन झाड़ियों के क़रीब पहुँची जिनकी आड़ लेकर रूसी सिपाही दुश्मन पर गोली बरसा रहे थे तो उसने घोड़े को छोड़कर एक सैनिक से पूछा।

"कर्नल साहब की लाश किस जगह पर पड़ी हुई है?"

"वह देखिये, वहाँ पर जो काली-काली सी चीज़ दिखलाई दे रही है।" जवाब मिला।

"बहुत ठीक" वेरा ने बतलाई हुई चीज़ की तरफ़ देखते हुये कहा। उस जगह तक पहुँचना कोई आसान बात न थी। बटैलियन कमांडर ने वेरा से कहा कि वह वहाँ न जाय क्योंकि वह जगह दुश्मन की बन्दूकों की ठीक मार में है। इस चेतावनी की ओर ध्यान न देते हुये, सफ़ेद गाउन पहनकर वेरा अपने निशाने की ओर पेट के बल रेंगती हुई बढ़ी। वाह री हिम्मत! आखिर, वह कर्नल तक पहुँच ही गई। वह मरा न था। घावों ने उसे बेहोश कर दिया था। पीठ के बल सीधी लेटे-लेटे उसने कर्नल के ज़ख्मों पर पट्टी बाँधी और फिर, उसकी भेंड़ के खाल की बनी हुई जाकिट के कालर को पकड़कर खींचती हुई जिस तरह आई थी उसी तरह वापस लौटी। अपने मोर्चे पर आकर वेरा एक सवारी लेकर अस्पताल आई। डाक्टर ने जाँच की मगर इलाज होने के पहले ही कर्नल ने वेरा के हाथों में ही दम तोड़ दिया।

मास्को वापस आने के पहले १८-९-४२ को वेरा ने एक लड़ाई

में, आखिरी दफ़ा हिस्सा लिया। रूसी-सेना को यकायक पीछे हटने के लिये मजबूर होना पड़ा पर वेरा, घायलों को तड़पते हुये छोड़कर न जा सकी क्योंकि वह अच्छी तरह जानती थी कि जर्मन उनकी जान बचाने की कोशिश न करेंगे। वह रेंगती हुई घायलों के ज़ख्मों की मरहम-पट्टी कर-कर उनकी जानें बचाने की तसल्ली देने लगी। इतने में उसने देखा कि कई जर्मन-सैनिक लापरवाही के साथ उसी की तरफ़ बढ़े आ रहे हैं जहाँ पर वह लेटी हुई थी। इनमें से दो तो उसके क़रीब ही आ पहुँचे। वेरा दम साधे पड़ी रही। दोनों ने कई रूसी सैनिकों की जेबें साफ कर दीं। वेरा के बगल ही में एक रायफल पड़ी हुई थी और अगर वह चाहती तो आसानी से उनका काम तमाम कर सकती थी पर उसने ऐसा नहीं किया हालाँकि उसे यह डर लगा हुआ था कि कहीं वे उसको न देख लें। वे आगे बढ़ गये और वेरा बच गई। सारा मैदान लाशों और ज़ख्मियों से भरा पड़ा था और हथियार बिखरे पड़े थे। एक दफा वेरा ने जो नज़र दौड़ाई तो पास ही हथगोले और टैंक तोड़ गोले पड़े दिखाई दिये। उसने सावधानी से, उन्हें इकट्ठा कर लिया और लगी मौक़ा ताकने।

यकायक अपने पीछे की ओर, उसने रूसी टैंकों के आगे बढ़ने की धड़धड़ाहट सुनी और वह खुश हुई। फ़ौरन उसने देखा कि जर्मन टैंक मुक़ाबले के लिये बढ़े चले आ रहे हैं। इनमें से एक तो उसी की ओर आ रहा था जहाँ वह पड़ी हुई थी। वेरा ने एक गोला उठा लिया और जब वह टैंक उसकी मार में आ गया। तो उसने जोर से उस गोले को उस पर फेंक दिया और उसमें आग लग गई। फ़ौरन ही एक हथगोला लेकर मरने और मारने के लिये वह तैयार हो गई। पर ऐसा न हुआ क्योंकि इस बीच में रूसी टैंकों ने जर्मनों को खदेड़ दिया और वेरा अपनी सेना में जा मिली।
